देशभक्त और देशद्रोही

(आयर्लैण्डकी राजक्रान्ति विषयक उपन्यास)

प्रकाशक :—

ज्ञानमण्डल (पुस्तक-भण्डार) लिमिटेड,

काशी

मूल्य २।)

देशभक्त और देशद्रोही

१

"तुम्हें बोलना ही होगा राबर्ट।" हमलोगोंमें तुम्हीं एक हो जो उसका मुँहतोड़ उत्तर दे सकते हो।"

एक छोटे कमरेके पीछेवाली बेंचपर दोनों बैठे थे। यह वही कमरा था जिसमें सौ साल पहले ट्रिनिटी कालेजकी ऐतिहासिक परिषद्की बैठकें हुआ करती थीं और कमरा दर्शकोंसे खचाखच भरा रहता था। वक्ता महोदयका ओजभरा भाषण हो रहा था। उपस्थित मण्डलीमेंसे अधिकांश लोग बारबार करतल-ध्वनि कर रहे थे।

राबर्टके साथीने फिर उसके कानमें कहा:—कालेजकी प्रतिष्ठाके लिए, हमलोगोंके संघके गौरवके लिए तुम्हे इसका उत्तर देना ही होगा।"

जिसने राबर्टसे यह बात कही वह नववयस्क छात्र था। उम्र एकदम कच्ची, शरीर एकदम दुबला-पतला लेकिन उसके चेहरेकी श्री उसके कुशाग्र-बुद्धित्वका परिचय दे रही थी।

राबर्ट वयःसन्धि पार कर चुका था। उसका छरहरा शरीर तेजोमय था। उसके अङ्ग अङ्गसे कर्तव्यशीलता और निष्ठा टपक रही थी लेकिन उसका चेहरा उदास, मलिन और वेदनापूर्ण था।

राबर्टका पूरा नाम राबर्ट एमेट था और उसके साथीका टामी मूर।

वक्ता अधेड़ उम्रका था। अपने समयमें इस कालेजकी ऐतिहासिक परिषद्का लब्धप्रतिष्ठ सदस्य और वक्ता था। आज कालेजके अधिकारियोंके विशेष आग्रहपर वह अपने प्राचीन दुर्गमें अपनी ओजस्विनी वाणीद्वारा एकबार उन छात्रों—विशेषकर राबर्ट एमेट—पर विजय प्राप्त करनेके लिए आया था जो कालेजके छात्रोंमें विद्रोहका बीज बोकर उनके दिल और दिमागको गन्दा कर रहे थे।

अपने उद्देश्यमें वह सफल भी हो रहा था। उसकी वाणी अबाध गतिसे, उग्रसे उग्रतर होती जा रही थी। उसके प्रत्येक शब्द श्रोताओंके हृदयपर गहरी छाप डालते जा रहे थे। उसके चुभते व्यङ्ग प्रतिद्वन्द्वीके हृदयकी तहको वेधनेवाले थे। उसके तर्क अकाट्य थे। वह पूर्ण अधिकारके साथ अपनी उक्तियाँ पेश करता चला जा रहा था। उस दिनका विषय था :—क्या उदार और उत्तम शासनके लिए वाद विवादकी स्वतन्त्रता आवश्यक है?"

लेफ्राय—यही वक्ताका नाम था—ने इस मन्तव्यका विरोध करते हुए कहा था :—जा इस तरहकी अनर्गल बातोंकी चर्चा करते हैं वे बेमतलब उन राजनीतिज्ञ अधिकारियोंके मार्गमें बाधा उपस्थित करना चाहते हैं क्योंकि उनका उद्देश्य वे समझते नहीं। राजाका कर्तव्य शासन करना है और प्रजाका कर्त्तव्य राजाज्ञाके सामने सिर झुकाना है। क्या आजतक कभी किसीने यह सुना है कि घोड़ा कोचवानको रास्ता बतलाता है या मञ्जिल नियत करता है? इस तरहकी विद्रोह-भावनाका एक ही समुचित उत्तर हो सकता है। वह है कोड़ा! कच्चे दिमागवाले, कोमल-मति युवकोंमें विद्रोह-भावना उत्पन्न करनेवाले समाजके लिए पागल कुत्तेसे भी ज्यादा खतरनाक हैं।

वाद-विवादकी स्वतन्त्रताकी माँग ठीक उस माँगके बराबर है जैसे पागल कुत्तेको शहरकी सड़कोंपर बेरोक-टोक चलने देनेकी माँग। समाजके कल्याणके लिए उस तरहकी छूत फैलानेवालेके साथ पूरी कड़ाईका बर्ताव किया जाना चाहिए। क्रान्तिकारियोंने वाद-विवादकी स्वतन्त्रताकी तुलना उस मशालसे दी है जिससे सबको प्रकाश मिलता है। लेकिन यदि उस मशालसे आग लगनेकी सम्भावना प्रतीत हो तो आवश्यकता पड़नेपर मशाल ले चलनेवालेके रक्तसे ही उस मशालको बुझाना होगा।"

इतना कहकर विजयी वीरकी भाँति लेफ्राय अपनी जगहपर बैठ गया। चारो ओरसे उल्लासपूर्ण करतल-ध्वनि सुनाई पड़ी। छात्रमण्डलीमे मुर्दनी-सी छाई हुई थी। इसी समय रावर्ट एमेट उठकर खड़ा हो गया। छात्रोंमें नया उत्साह आ गया। जोरोंकी करतल-ध्वनि होने लगी। लेफ्रायकी ललकारका उसने मुँहतोड़ जवाब दिया। लेफ्राय अप्रतिभ हो गये, शर्मसे उनका सिर झुक गया और क्रोधसे चेहरा लाल। वे मारे क्रोधके अपना होठ चबाते रहे और रावर्ट एमेटका उत्तर सुनते रहे। उसने कहा :—

"जुल्मका सबसे भयानक फल यही होता है। वह ऐसे देशद्रोही तैयार कर देता है जो उन जालिमोंको भी मात कर देते हैं। लोक-प्रिय वक्तता और खुशामद पैसेके बल खरीदी जा सकती हैं। लेकिन जहाँ आलोचना करनेवालोंके मुँहपर ताला लगा दिया गया हो वहाँ प्रशंसा और यशगानका कोई मूल्य नहीं है। सार्वजनिक वादविवादको रोकने या दबानेकी चेष्टा साफ जाहिर करती है कि या तो शासक अयोग्य हैं या बेईमान। जालिम और बेईमान ये दो ही सार्वजनिक दृष्टिसे अपनेको बचाना चाहते हैं। ये ही दो प्रकाशमें आनेसे डरते हैं। बेईमान

और ईमानदार दोनोंको खुलेआम मुकाबला करने दिया जाय। ईमानदारके साथियोंको किसी वातकी आशंका नहीं है। जब किसी देश या जातिके लोग अपने जन्मसिद्ध अधिकारोंको समझ लेते हैं और समझनेके वाद उसे प्राप्त करनेका यत्न करते हैं और जब उनके इस न्यायोचित स्वत्वकी प्राप्तिमें किसी शासकद्वारा बाधा उपस्थित की जाने लगती है तब विद्रोह या क्रान्तिके सिवा उसके लिए दूसरा रास्ता ही क्या रह जाता है।"

इतना कहकर रावर्ट एमेट अपनी जगहपर बैठ गया। श्रोता मन्त्र-मुग्धकी भाँति उसका भाषण सुनते रहे। उसके एक एक शब्द मानों कानोंद्वारा अन्तस्तलमें घुसकर बैठ गया। वे उन्मत होकर क्रान्तिके नारे लगाने लगे।

लेफ्रायको उत्तर देनेका भी हौसला नहीं रहा। वे चुपचाप अपनी जगहसे उठे और पीछेके दरवाजेसे जलसेसे बाहर हो गये। जलसा समाप्त हो गया।

सूर्यास्त हो चला था। अन्धकार अपना राज्य धीरे धीरे चारों ओर फैला रहा था। अब भी सामनेकी चीज अस्पष्ट दिखाई दे रही थी। लेफ्रायने देखा कि सामनेके बरामदेमें कोई व्यक्ति काले लबादेसे अपना शरीर ढककर बड़ी बेचैनीके साथ पायचारी कर रहा था। ज्यों ही लेफ्राय उसके निकट पहुँचे, उसने अपनी विशाल भुजा उनकी गर्दनपर रख दी।

लेफ्रायको उस व्यक्तिको पहचाननेमें देर नहीं लगी। उन्होंने नम्रतासे कहा:—हुजूर! समस्या बड़ी कठिन है। उन्हें समझाना और रास्तेपर लाना टेढ़ी खीर है। मेरा सारा प्रयास व्यर्थ गया। पहले तो मैंने समझा कि मैंने वाजी मार ली। मेरे तर्कपूर्ण भाषणपर सभी मुग्ध थे। लेकिन उस

विद्रोही रावर्ट एमेटने क्षणभरमें ही मेरा सारा प्रयास व्यर्थ कर दिया। ओह! मैंने ऐसा जोशीला भाषण किसी छात्रके मुँहसे कभी नहीं सुना था। वह बड़ा ही भयानक विद्रोही है। लेकिन उसकी युक्तियाँ अकाट्य थीं। उसके सामने मैंने अपनेको तुच्छ पाया। वह एक एक शब्दमें विद्रोहकी आग उगल रहा था और आपके कालेजके मूर्ख छात्र उसे देवताकी तरह पूजते हैं।

लार्ड क्लेयर—वह बड़ा ही खतरनाक है। केवल उग्र बोलता ही नहीं है, बल्कि सदा खतरेमें कूद पड़नेके लिए तैयार रहता है। यदि मैंने उसे समझनेमें जल्दी नहीं की है तो मैं निश्चय रूपसे कह सकता हूँ कि वह मनसा, वाचा और कर्मणासे विद्रोही है। वह साहसी है, उसमे शक्ति और योग्यता भी अपार है। इस हलचलके युगमें मैं उसे बहुत ज्यादा खतरनाक समझता हूँ। उसकी मुझे तुरन्त दवा करनी होगी। लेशमात्र भी ढिलाई खतरनाक साबित होगी। मैं ट्रिनटी कालेजमें इनका अस्तित्व नहीं रहने दूँगा। इनका घोसला उजाड़कर ही दम लूँगा। आपको उस चोर और सेवके बगीचेके मालिककी कहानी तो याद ही होगी। चोर तबतक पेड़से नहीं उतरा जबतक उसका मालिक उसके ऊपर सेव फेंकता रहा, लेकिन ज्यों ही उसने ईंटें फेंकना शुरू किया, चोर तुरन्त पेड़से उतर पड़ा। यदि आपकी परिपक्व सलाह उन्हें रास्तेपर नहीं ला सकती तो मुझे कड़वी दवा पिलानी होगी। आपने सेव फेंका था अब मैं ईंटें फेंकूँगा।

इधर रावर्ट एमेट कतिपय साथियोंके साथ अपने एकान्त कमरेमें पहुँचे और भीतरसे दरवाजा बन्द करके गुप्त परामर्श करने लगे।

२

सभाकी उत्तेजना समाप्त हो चुकी थी। चारो मित्र प्रकृत दशाको प्राप्त हो चुके थे। ये विचार-विनिमय और किसी गूढ़ मन्त्रणाके उद्देश्यसे शान्त होकर बैठे थे। उनकी गम्भीर मुद्रासे ऐसा ही प्रतीत होता था।

मेलची नीलन जो अबतक चुपचाप सिगरेट पी रहा था बोल उठा :—राबर्ट, आज तो तुमने कमाल किया। तुमने इन सबके दाँत खट्टे कर दिये। मैं तो एक टक लेफ्रायका चेहरा देख रहा था। इस तरह मुर्झाया हुआ मैंने उसे कभी नहीं देखा था। उसने तो यही समझा था कि उसने बाजी मार ली है। लेकिन जब तुमने उसकी बातोंको उधेड़ना शुरू किया तब तो वह तिलमिला उठा और मार खाये हुए कुत्तेकी तरह दुम दबाकर भागा।

राबर्ट एमेट—लेकिन मुझे पछतावा हो रहा है। मैंने भाषण देकर अच्छा नहीं किया। तुम्हींने मुझे उसकाया। मुझे आशङ्का हो रही है इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। लेफ्राय अपने मनसे नहीं आया होगा। यह सब उस शैतान क्रेयर-की चाल है। जिस वक्त हमलोग सभामें बैठे थे वह पीछे-वाले बरामदेमें बेचैनीकी हालतमें घूम रहा था। मेरे कोचवानने उसे देखा था। वह चुप नहीं बैठेगा। हमलोगोंपर गहरी चोट करनेका प्रयत्न करेगा।

मेलची नीलन—उसकी कौन परवा करता है। हमलोग घूँसेका जवाब थप्पड़से देंगे।

एमेट—यदि यह सम्भव होता!

मेलची—यदि तुम फूँक फूँककर कदम नहीं रखते तब—

इसके आगे वह नहीं बोल सका। उसे टोकते हुए एमेटने कहा:—हमलोगोंके पारस्परिक सद्भावके लिए तुम इस बात-को फिर कभी मुँहपर मत लाना। मैं जानता हूँ कि तुम सदुद्देश्यसे ही यह बात कहते हो। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम्हारे रग रगमें सचाई और इमानदारी भरी है। लेकिन उस तरहकी बातोंसे तुम अपने मनको ही कलुषित करते हो। मैं फ्रांसकी राज्यक्रान्तिकी पुनरावृत्ति यहाँ नहीं चाहता। मार-काट और तूफानसे कभी भी कोई अच्छा काम सम्पन्न नही होता है।

मेलची—तुम्हारा कहना सर्वथा सत्य है राबर्ट! मुझे इसके लिए हार्दिक दुख है।

टेरी जो भाषणतक चुपचाप बैठा दोनोकी बातें सुन रहा था, बोला:—न हमलोग मुँहसे कुछ कहेंगे और न लड़ेंगे ही। तब हमलोग करेंगे क्या?

एमेट—मित्र! इसके लिए अधीर होनेकी जरूरत नही है। लड़ना तो पड़ेगा और खूब लड़ना पड़ेगा। लेकिन जब-तक हमलोग काटनेके लिए तैयार नही हो जाते तबतक भूकनेसे क्या लाभ?

मेलची—मैं तो यही कहूँगा कि वह दिन जितना जल्दी आवे उतना ही अच्छा है। अत्याचारका जोर बढ़ता जा रहा है और हमलोग भयका नही तो खामोशीका लबादा शरीरपर डालकर चुपचाप बैठे हुए हैं। हमारे जिन बहादुर साथियोंको कालेजसे निकाल दिया गया है उनके लिए कमसे कम हमलोगोको विरोध तो अब कल ही प्रदर्शित कर देना चाहिए। मैंने वह भार अपने ऊपर लिया है। मैंने विरोधको लिपिबद्ध करके छपवा भी लिया है। मैंने पाँच सौ कापियाँ

कालेजमें तथा इधर उधर गुप्त नाम बँटवा भी दी हैं। मुझे विश्वास है कि तुम इसे पसन्द करोगे। इसके भले बुरेकी सारी जिम्मेदारी मुझपर है इसलिए मैंने तुम्हें पहले सूचित नहीं किया।

इतना कहकर उसने अपनी जेबसे एक कागज निकाला और राबर्टके हाथमें रख दिया।

राबर्ट एमेट चुपचाप उस कागजको पढ़ने लगा। मेलची गौरसे उसके चेहरेके उतार-चढ़ावको देखने लगा।

पढ़ना समाप्त कर कागजको मरोड़ते हुए राबर्टने कहाः— यह तो बहुत ज्यादा खतरनाक है।

मेलची—मैंने जान बूझकर कड़ शब्दोंका प्रयोग किया है। मैं चाहता था कि उसकी भाषा कड़ी हो।

उसकी बातोंको अनसुनी करके एमेटने कहा,—हमलोगों तथा हमारे आन्दोलनके लिए यह बहुत ही खतरनाक होगा लेकिन अधिकारिवर्गपर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। कालेजकी दीवारोंके भीतर हमलोगोंके संघटनपर प्रहार करनेका जो अवसर वे इतने दिनोंसे ढूँढ़ रहे थे उसे इसने प्रदान कर दिया। इन सब कापियोंको नष्ट कर डालो। एक भी शेष नहीं रहने दो। लार्ड क्लेयरको नहीं मालूम होना चाहिए कि—

मेलची—इस नेक सलाहका कोई मूल्य नहीं है। मैंने खुद अपने ही हाथों उसके लेटरबक्समें एक प्रति डाल दी है।

उसने इस बातको इतनी उद्दण्डताके साथ कहा कि राबर्ट-को क्रोध हो आया।

एमेट—तुमने एक बम भी क्यों नहीं डाल दिया।

मेलची—लार्ड क्लेयरके लिए यह बमका ही काम देगा।

एमेट—लेकिन इसके भड़कनेसे लार्ड क्लेयरकी कोई क्षति नहीं होगी। हमीलोग घायल होंगे। कालेजमें हमलोगोंका जो सङ्गठन चल रहा है वह बरबाद हो जायगा।

मेलचीकी आँखोमे आँसू आ गये। उसने कहा,—इसका मुझे अत्यन्त खेद है।

एमेटका हृदय द्रवित हो उठा। उसने मेलचीकी पीठ सहलाते हुए कहा—यह क्या? तुमने तो सद्भावनासे प्रेरित होकर ही यह काम किया था। समूचा आयलैंण्ड इस कालेजमें ही सीमित नही है। कालेजमें नहीं सही, हमलोग कालेजसे हटकर देशके कोने कोनेमें यह आग लगावेंगे।

टेरी जिसका पूरा नाम टेरेस ओगोर्मन था, बोला,—कालेज ही छोड़ोगे, देश तो नहीं छोड़ोगे न? हमलोगोंको त्यागकर भाग जानेका इरादा तो नहीं है?

एमेट—मुझे तो सिर्फ आपद्का सदुपयोग करना है। मैं लार्ड क्लेयरको भलीभाँति जानता हूँ। वह चुप नहीं बैठेंगे। मेरे विद्रोही होनेका उन्हें सन्देह है ही। आजकी घटनाका यह परिणाम तो निश्चित है कि मैं कालेजसे निकाला जाऊँगा। लेकिन यदि मेलचीके इस पत्रका भी सम्बन्ध उन्होंने मुझसे जोड़ा तब तो हमदोनों आदमी केवल कालेजसे निकाले ही नहीं जायँगे बल्कि और भी कुछ होगा। लेकिन मैं उन्हें इसका अवसर नहीं दूँगा। मैं स्वयं कालेजसे अलग हो जाऊँगा।

यह सुनकर मेलचीने चिल्लाकर कहा,—मैं भी तुम्हारे साथ अलग हो जाऊँगा। इस बातमें अन्य दोनों साथियोंने भी उसका साथ दिया।

एमेट—नहीं, तुमलोगोंको अपना भविष्य बर्बाद नही करना चाहिए। शत्रुका काम भी सहज नहीं बना देना चाहिए।

मेलची—मैंने जो कुछ किया है उसकी सारी जिम्मेदारी मैं अपने सिरपर उठाऊँगा। मैं प्रकट कर दूँगा कि इस कागज-का लेखक मैं ही हूँ।

एमेटने वड़ी नरमीसे पूछा,—इससे तुमने क्या लाभ सोचा है। इसका फल यही होगा कि तुम्हारे सभी साथियोंपर सन्देह होने लगेगा। और सन्देहके माने है दण्ड! दण्ड भी साधारण नही। मृत्यु या निर्वासन। इससे कम सजा उस परचेके कारण नहीं हो सकती। हमलोगोंको कल कालेजमें इस तरह रहना चाहिए मानो हमलोग कुछ नही जानते। हम चारोके सिवा यह भेद अन्य किसीपर प्रकट नही होना चाहिए। हमलोग खतरेके मुँहमें हैं। वहुत सावधान और सतर्क रहनेकी जरूरत है।

एमेट अपने घर वापस आया। भोजन करके चारपाईपर लेट गया। लेकिन बड़ी राततक उसे नींद नही आयी। अनेक तरहके विचार उसके मस्तिष्कमें उठते रहे और उसे परीशान करते रहे। अचानक उसकी निगाह खूँटीपर टँगे अपने कोट-पर गयी। उसकी जेबसे एक कागज लटक रहा था। उसने उचककर कागज खीच लिया। देखा मेलचीवाला वही पँरचा है। उस कागजको लैम्पके हवाले करते हुए उसने अपने मनमें कहा—तलाशी लेनेपर यदि यह परचा मेरी जेवसे निकलता तब तो मुझे या तो फाँसीके तख्तेपर झूलना पड़ता या आजन्म कैदमें सड़ना पड़ता। इसी समय हू हू करके वह परचा जल उठा—एमेटने उल्लासके साथ कहा—यदि मैं धोखेमें न पड़ा तो इससे भी तेज लपट मैं देशके कोने कोनेमें प्रज्वलित करूँगा।

३

कालेजका वातावरण उस दिनसे एकदम बदल गया था। ऐसी निस्तब्धता, इस तरहका सन्नाटा न तो छात्रोंमें कभी देखनेमें आयी थी और न अधिकारिवर्गमें। छात्र अधिकारियोंकी आँखें बचाकर एकान्तमे कहीं मिलते, दबी जबान दो चार बातें करते और अलग हो जाते। भयानक तूफान आनेके पहले हवा जिस तरह बन्द हो जाती है, प्रकृति जिस तरह नीरव और शान्त हो जाती है, ठीक वही हालत उस समय कालेजके वातावरणकी थी।

एमेट क्षण क्षण विस्फोटकी आशङ्का करता था। वह आँखे फाड़ फाड़कर चारो ओर देखता, कान लगाकर सुननेका यत्न करता, लेकिन उसे कुछ थाह-पता नहीं मिलता था। लेकिन उसका हृदय बारबार यही कहता,—"विपत्ति आसन्न है। किसी समय पहाड़ टूटकर सिरपर गिर सकता है।" यही चिन्ता दिनरात उसके सिरपर सवार रहती थी। न कालेजमें शान्ति मिलती थी और न डेरेपर सुखकी नींद।

एक दिन तीसरे पहरकी बात है। वह ज्यों ही कालेजके फाटकके बाहर हुआ उसे अभूतपूर्व दृश्य दिखाई पड़ा। उस युगके डबलिन शहरमें इस तरहके दृश्य कल्पनातीत थे। दो युवक, शरीफाना पोशाकसे सुसज्जित सड़ककी दो दिशाओंसे आ रहे थे। दोनों एक दूसरेसे ५० कदमके फासलेपर थे कि एककी निगाह दूसरेपर पड़ गयी। पलक भँजते ही दोनों अपनी अपनी तलवार खीचकर एक दूसरेपर टूट पड़े और बीच सड़कमें ही भिड़ गये। बातकी बातमें भीड़ जमा हो गयी और दोनोंको घेरकर खड़ी हो गयी। इस तरह दोनों लड़ाके

एमेट्की आँखोंसे ओट तो हो गये लेकिन तलवारोंके बजनेकी आवाज उसके कानोंमें बराबर पड़ती रही।

एमेट भी उसी तरफ दौड़ पड़ा। इसी समय दो सुन्दर घोड़ोंसे जुती एक गाड़ी ग्रैफ्टन स्ट्रीटसे होकर उधर ही आ निकली। उस गाड़ीपर एक अधेड़ पुरुष और एक कोमलाङ्गी, सुन्दरी युवती बैठी थी। युवतीके अङ्ग अङ्गसे सुन्दरता टपक रही थी। देखनेमे दोनों पिता और पुत्री प्रतीत होते थे।

बीच सड़कपर रास्ता रोककर इस तरह भीड़को जमा देख बूढ़ेने गाड़ी रोक दी और युवतीके हाथमे लगाम देते हुए कहा,—सराह! जरा देखूँ तो क्या माजरा है। मैं तुरत वापस आ जाऊँगा।

इतना कहकर वह गाड़ीपरसे कूद पड़ा और भीड़की तरफ बढ़ा। उसे आते देख लोगोंने हैट उठाकर आदरके साथ उसका अभिवादन किया मानो वे लोग उसे जानते थे।

इधर युद्धने उग्ररूप धारण कर लिया था। एक युवक तो जख्मी हो चुका था। उसके शरीरसे रक्तकी धारा बह रही थी। उसका प्रतिद्वन्द्वी उसके शरीरपर अपनी तलवारकी धारसे नया नया जख्म करता जा रहा था।

एमेट भीड़को चीरकर दोनोंके बीचमे कूदना ही चाहता था कि आगन्तुकने उसके कन्धेपर प्यारसे हाथ रखते हुए कहा,—शान्त! मेरे बच्चे, शान्त! तुम कालेजके छात्र हो! तुम्हें इतना तो अवश्य जानना चाहिए कि जो लड़ाईमें बीच-बिचाव करने जाता है उसे अपने घावोंकी मरहम-पट्टी करानी पड़ती है। बीच-बिचाव करनेवाले प्रशंसाके पात्र हैं लेकिन यहाँ बीच-बिचाव करनेमें तुम्हें दो तलवारोंके बीच होकर स्वर्गका ही रास्ता लेना पड़ेगा। मै इन दोनोंको जानता हूँ।

चुने बदमाश हैं। यदि एक दूसरेकी गर्दन धड़से अलग कर दे और इससे दूसरेको फाँसी हो जाय तो पृथिवीका थोड़ा भार हलका हो जाय।"

इसी समय घोड़ोंके टापकी आवाज और गाड़ीके खड़-खड़ाहटके शब्द उसके कानमें पड़े। बूढ़ा चौंक उठा। इन दोनोंकी निगाह गाड़ीकी तरफ फिर गयी। वहाँका दृश्य देख-कर दोनोंके होश हवाश जाते रहे।

वह सम्भ्रान्त व्यक्ति ज्यों ही गाड़ीसे उतरकर भीड़की तरफ बढ़ा उसी समय नशेमें चूर दो सैनिक उधरसे आ निकले। एक गाड़ीसे टकराकर नालीमें जा गिरा। किसी तरह सँभल-कर उठा तो वह गाड़ीकी तरफ झपटा। क्योंकि इस तरह गिरनेका तात्कालिक कारण गाड़ी थी। गाड़ीमें मालिकका नाम देखते ही उसका क्रोध दूना हो गया। उसने चिल्लाकर कहा,—यह गाड़ी तो उस विद्रोही करेनकी है।" इतना कह-कर वह अपनी बन्दूककी नलीसे घोड़ोंको मारने लगा। मार पड़ते ही घोड़े भड़ककर भाग चले। लगाम उस कोमलाङ्गीके हाथसे छूट पड़ी।

पलक भँजते भीड़ भाग चली। एमेटने क्षणभरके लिए भी देर करना खतरनाक समझा। उसने झपटकर घोड़ेकी लगाम मुँहके पास पकड़ ली। घोड़ोंका झटका खाकर एक बार तो वह जमीनसे उठ गया लेकिन उसने अपनेको तुरत सम्हाला और उसी तरह लगाम पकड़े हुए घोड़ोंके साथ दौड़ने लगा। इसी तरह प्रायः मीलभर दौड़ते रहनेपर, कई सड़कोंको पार करनेपर उसने घोड़ोंको अपने कब्जेमें किया। घोड़े खड़े हो गये।

घोड़ोंके खड़े होते ही भीड़ जमा हो गयी। लोगोंने घोड़ोंको मजबूतीसे पकड़ लिया एमेट दरवाजा खोलकर गाड़ीके भीतर

गया और अपने हाथका सहारा देकर उस युवतीको उतार लाया।

उसका चेहरा पीला पड़ गया था। लेकिन न तो वह चिल्लायी और न बेहोश हुई। वह दोनों हाथसे गाड़ी पकड़कर धीर भावसे उसके अन्दर बैठी रही।

बाहर निकलकर उसने एमेटके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा,—मैं आपकी ऋणी हूँ।'

एमेट—आपको चोट तो नही आयी?"

युवती—लेशमात्र भी नहीं। ईश्वरको धन्यवाद है कि आपने मेरी रक्षा की। आपने तो अपनेको मृत्युके मुँहमे डाल दिया था।

शब्दोंसे अधिक उसने अपनी विशाल आँखोंसे एटेमको धन्यवाद दिया। एटेमके शरीरमें रोमाञ्च हो आया। एक नये जीवनका सञ्चार उसने अपने शरीरमें पाया।

इसी समय वृद्ध करेन भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने अपनी पुत्रीको गलेसे लगा लिया। बोले,—"बेटी! ईश्वरको अनेक धन्यवाद है। उसने तुम्हारी रक्षा की। मैंने तुम्हें इस तरह अकेली छोड़कर भयङ्कर भूल की थी।" इसी समय उनकी निगाह एमेटपर पड़ी जो पास ही खड़ा था। उन्होंने एमेटका दोनों हाथ अपने हाथमें लेकर कहा,—"मैं किन शब्दोंमें धन्यवाद दूँ। आपने मेरी पुत्रीको बचाया ही नही है, इस बूढ़ेको जीवनदान दिया है। क्या आप अपना परिचय दगे?"

एमेट—मेरा नाम राबर्ट एमेट है!

करेन—क्या आप मेरे चिरपरिचित डाक्टर एमेटके पुत्र और प्रसिद्ध देशभक्त विद्रोही टामस एमेटके भाई तो नही है?"

एमेट—जी हाँ, मैं वही हूँ।

करेन—कौन जानता था कि मेरे प्रियतम दोस्तका पुत्र ही मेरा त्राता होगा। धन्य है विधिका विधान! बेटी! जिस युवकने तुम्हारी रक्षा की है वह मेरे दोस्तका पुत्र है। मेरे बेटेके ही समान है। कल तुम मेरे यहाँ जरूर आना बेटा! मैंने कई बार तुम्हें बुलाना चाहा! आज संयोगसे भेंट हो गयी। कल मेरे ही यहाँ भोजन करना होगा।

इसके बाद तीनों आदमी गाड़ीपर सवार होकर घरकी तरफ चल पड़े।

४

उस दिनके भोजनका प्रमुख पात्र एमेट था। करेनने केवल आधे दर्जन चुने मित्रोंको निमन्त्रण दिया था। उनसे एमेटका परिचय कराते हुए उन्होंने कलकी घटनाका विशेष वर्णन करते हुए एमेटके साहसकी अत्यधिक प्रशंसा की। श्रीमती करेन घरमें मौजूद नहीं थीं। इसलिए आतिथ्यका सारा आयोजन सराहको करना पड़ा था।

आज उसका चेहरा कान्तिसे दमक रहा था। कलकी दुर्घटनाका वर्णन अतिथियोंसे करते समय उसकी कृतज्ञता-भरी आँखें एमेटकी ओर फिर जाती थीं और वह पुलकित हो उठती थी। एमेटके आनन्दका ठिकाना नहीं था। उसे ऐसा प्रतीत होता था मानो स्वर्गकी सारी सम्पदा उसे प्राप्त हो गयी है।

यदि यह कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी कि प्रथम दर्शनमें ही एमेटने अपना हृदय सराहको अर्पित कर दिया

था। यद्यपि भोजनके समय वह सराहसे कुछ दूरपर बैठा था तो भी वह कनखियोंसे उसकी ओर देख लेता था।

भोजन करते समय करेनने कहा :—प्लंकेट! मैं जोर देकर कहता हूँ कि यह अनिवार्य है। मैं इसका स्मरण कर काँप उठता हूँ। उससे उतनी ही घृणा करता हूँ जितनी तुम! मेरी दृढ़ धारणा है कि इससे देशका बहुत बड़ा अहित होगा। पर यह भी सत्य है कि यह होकर ही रहेगा। बेईमानी अपना काम धीरे धीरे निश्चित गतिसे कर रही है। प्रतिदिन मुझे एक दो देश-भक्त ऐसे मिल ही जाते हैं जिनका मन अचानक बदला हुआ दिखाई देता है और वे ब्रिटेनके साथ आयलैंण्डके गठबन्धनको कल्याणकर समझने लगते हैं।

प्लंकेटने घृणासे कहा :—मैं इसे नहीं मानता। मैं इस तरह-के कमीनापनको सम्भव नहीं समझता। जो आदमी रुपयेके लोभमें पड़कर अपने देशको बेचना चाहता है वह—

करेनने बाधा देते हुए कहा :—पर वे लोग इसे घूस कहाँ मानते है। वे तो इसे सम्मानका द्योतक बतलाते हैं।

टेबुलके कोनेमें बैठे एक अतिथिने चिल्लाकर कहा :—ऐसे सम्मानपर लानत है। यदि यह सम्मान है तब तो हमें अपमानहीकी खोज करनी चाहिए।

करेनने रुखाईसे कहा :—एम' नेली! यह तो सहजमें मिल सकता है। आयलैंण्डकी प्रत्येक गलीमें यह प्राप्त है। इसे ढूँढ़ना नहीं होगा।

प्लंकेट—लेकिन राष्ट्र अपनी पार्लमेण्टको सहजमें इनके हवाले नहीं कर देगा। हमलोग अपनी आजादीकी रक्षाके लिए पुश्त-दर-पुश्त लड़ते रहेंगे।

करेन—फ्रान्सकी राज्यक्रान्तिकी आवृत्तिकी आवश्यकता हमें नहीं है। काफी रक्तपात यहाँ हो चुका है। देशभक्तोंका निर्दोष रक्त बहुत ज्यादा बहाया जा चुका है। इस समय दमन-से लोग भले ही भयभीत हो गये हैं लेकिन यदि निर्दोषोंको इसी तरह दमनकी चक्कीमें पीसा जाता रहा तो प्रतिशोधकी भावना जागृत होते देर नही लगेगी। विद्रोहकी आग देश-भक्तोंके रक्तसे बुझा दी गयी है। उसे फिर प्रज्वलित करना सहज नही है।

प्लंकेटने जोर देकर कहा :—आयलैंण्ड इस दासताको कभी भी कबूल नही करेगा। अभी भी उसके ऐसे सपूत हैं जिन्हें न तो धन जीत सकता है और न भय विचलित कर सकता है। यदि हमलोगोंके वोट और आन्दोलन उसकी रक्षा नही कर सकते तो हमारे हथियार उनकी रक्षा करेंगे।

इसपर लियोनार्ड एम' नेलीने जोशके साथ कहा :—जालियों और देशद्रोहियोंके सर्वनाशकी कामनासे मैं यह प्याला पीता हूँ।'

इतना कहकर उसने शराबका ग्लास उठाया और एक ही साँसमें उसे पी गया।

करेनने ताना देते हुए कहा :—एम' नेली! इस उम्रमें भी तुम विद्रोही बनने जा रहे हो! यह काम तो नवजवानोंका है। जो युवक इस पथके पथिक होते हैं वे कभी बूढ़े भी नहीं होते। सदा जवान बने रहते हैं। विद्रोहकी भावना वंशपरम्परागत ही होती है। न तो तुम्हारे वंशमें और न प्लंकेटके वंशमें ही कभी किसीने इसका स्वाद चखा है। हाँ, एमेटका खानदान अवश्य इसकी लपटमें झुलस चुका है और मुझ लेशमात्र भी

आश्चर्य नही होगा यदि एक दिन यह भी उसी आगमें कूद पड़े। क्यों जवान! क्या विचार है।

एमेटने नम्रता, पर दृढ़तासे उत्तर दिया—यदि मातृभूमिको मेरी सेवाकी जरूरत होगी तो मैं सदा तैयार हूँ।

करेनका भाव सहसा वदल गया। चञ्चलताका भाव गम्भीरताने धारण कर लिया। एमेटकी पीठपर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा :—बेटा! बूढ़ेकी बात मानकर विद्रोहसे दूर रहो। मैं यह नही चाहता कि तुम अपने सिद्धान्तोंसे डिगो या उन्हें बेच दो। मेरी सलाह सिर्फ इतनी ही है कि विद्रोहके चक्करमें मत पड़ो। इससे कोई लाभ नहीं हो सकता। ब्रिटिश जुलमका रथ तुम्हें रौंदता हुआ पार निकल जायगा। तुम बलि-दान हो जाओगे लेकिन कोई लाभ नहीं होगा। मैं बूढ़ा हुआ। मेरे अनुभवोंसे लाभ उठाओ। यह जीवन यों वर्वाद कर देनेके लिए नही है। इतनी वाधाओंके रहते, इस तरहकी विपरीत परिस्थितिमें आगसे खेलना अच्छा नही है। कालेजमें तुम बड़ा नाम करते रहे हो। मैंने लोगोंसे तुम्हारी तारीफ सुनी है। तुम्हारी भाषण-कलाकी बड़ी ख्याति है। यदि तुम इन बखेड़ोंमें न पड़कर अपने अध्ययनमें लगे रहोगे तो मुझे पूरा विश्वास है कि तुम शीघ्र ही मुझे वकालतमें परास्त कर दोगे।

भोजन समाप्त हो गया। मेहमानलोग एक एककर चले गये। करेनने एमेटको वरवस रोक लिया क्योंकि वे एकान्तमें उसे समझाना चाहते थे।

करेनकी प्रेमभरी वातोंका उसपर काफी असर हुआ। वह अपने मनमें सोचने लगा :—वकालतमें इन्होंने अच्छी ख्याति पायी है। जनतामें इसकी वड़ी प्रतिष्ठा है। संसारका इन्हें पूरा

अनुभव है। चाहे जिस उद्देश्यसे मुझे समझा रहे हो लेकिन कहते हैं तो मेरे ही हितके लिए।"

इस भावके उदय होते ही भविष्यका सुखद और सुन्दर चित्र उसकी आँखोंके सामने आकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि बैरिस्टरी पास कर वह नामी वकील होकर पर्याप्त धन और यश उपार्जित करेगा। योग्यताकी उसमे कमी नहीं है। इस खयालमें वह इस तरह डूब गया कि क्षण-भरके लिए उसे न तो करेनकी उपस्थितिका ज्ञान रहा और न उस मधुर सङ्गीतका जो बगलके कमरेसे आकर उसके हृदयको आप्लावित कर रही थी। सहसा करेनके इस प्रश्नने उसे सचेत कर दिया।

करेन—मैंने सुना है कि कालेजमें भी उपद्रवका सूत्रपात हो रहा है। तुम उससे दूर रहना।

एमेट—उस सम्बन्धमें तो कुछ कहना व्यर्थ है क्योंकि मै उसमें पड़ चुका हूँ।

करेनका चेहरा उतर गया। उन्होंने कहा :—मुझे पहले ही समझ लेना चाहिए था कि यही होगा। तुम तो अगुआ ही होगे। कोई हर्ज नहीं। अब भी समय है। जितना जल्दी हो सके चुपचाप उससे अलग हो जाओ। कालेजका अध्यक्ष शैतानका पुतला है। छात्रोंके इस सङ्गठनको चकनाचूर कर देनेके लिए वह कड़ीसे कड़ी काररवाई करेगा। मुझपर भी वह शक करता है। लेकिन अभी भी उसपर मेरा थोड़ा बहुत प्रभाव है। मैं ऐसा यत्न कर दूँगा कि तुमसे कुछ पूछताँछ नहीं होगी। देखो! तुम्हारा समूचा जीवन खतरेमे है।

करेनकी वाणीमे करुणा और वेदना थी। लेकिन इसका एमेटपर कोई असर नहीं पड़ा। उसने दृढ़तासे कहा :—यदि

मुझसे पूछताँछ न भी होगी तो भी विना पूछे ही मैं वोलूँगा।

करेन का चेहरा मुरझा गया। उन्होंने रुखाईसे कहा:— जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।

इतना कहकर वह कमरेसे बाहर हो जाना चाहते थे मानो एमेटसे कुछ कहना सुनना व्यर्थ था। लेकिन एमेटने उन्हें रोककर कहा:—मुझे क्षमा कीजिये! मैंने आपको कष्ट पहुँचाने या अपमानित करनेके उद्देश्यसे कुछ नहीं कहा था। मेरा अभिप्राय यही था कि मैं कायरोंकी तरह खतरेसे भागना नहीं चाहता वल्कि अन्य साथियोंके साथ साथ साहससे उसका मुकावला करना चाहता हूँ और परिणामको भुगतना चाहता हूँ।

करेनने अपना दोनों हाथ एमेटके कन्धोंपर रखकर उसकी ओर घूरकर देखा। उन्हें अपनी जवानीके दिनोंका स्मरण हो आया। उन्होंने कहा:—बेटा! मै कभी नहीं चाहता कि तुम अपनी ही नजरोंमें कायर होकर रहो। तुम्हारा जन्म ही कायर वंशमें नहीं हुआ है। लेकिन तुमने अपनेको इस झंझटमें डाल दिया है इसका मुझे खेद अवश्य है। विद्रोहसे कोई लाभ नहीं है। जितना त्याग करना पड़ता है उतना फल नहीं मिलता। खैर, जाने दो उन वातोंको। इस समय तुम्हें सराहका सङ्गीत सुनना चाहिए वह तुम्हारी ऋणी है।

इतना कहकर करेन एमेटको लिये उस कमरेमें पहुँचे जहाँ सराह बैठी पियानोपर अपनी कोमल अँगुलियाँ फेर रही थी।

दोनोंने कमरेमें एक साथ ही इतना आहिस्तेसे प्रवेश किया कि पैरोंकी आहटतक नहीं मिली। तो भी सराहके हृदयने उसे बता दिया कि एमेट कमरेमें आ गया है। उसके सारे शरीर-

में रोमांच हो गया और उसकी अँगुलियाँ काँपने लगीं। वह सहसा रुक गयी।

एमेट बोल उठा :—आपके पिताजीने कहा है कि आप मुझे गाना सुनावेंगी।

सराहने एक बार एमेटकी ओर देखा, फिर आँखें बन्द कर ली। पूछा :—कौन गाना सुनाऊँ।

एमेट—यह आपपर निर्भर है।

सराह—क्या आप टामी मूर को जानते हैं?

एमेट—जरूर! वे मेरे घनिष्ठ मित्रोंमें है।

सराह—मेरी भी उनसे बड़ी घनिष्ठता है। आज ही उन्होंने एक गीत भेजा है। उसीको मैं गाती हूँ।

सराहके गीतने एमेटको बेचैन कर दिया। वह सारी रात सो नहीं सका। प्रेमका आकर्षण और कर्तव्यका ज्ञान दोनोंके तुमुल द्वन्द्वने उसके हृदयको बुरी तरह मथना आरम्भ किया।

५

इस घटनाके तीन दिन बाद कालेजमें अचानक तूफान उठ खड़ा हुआ। तीसरे पहर छात्रोको सूचना दी गयी कि कल लार्ड चांसलर स्वयं कालेजमे आकर विद्रोहियोंका पता लगावेंगे और उन्हें दण्ड देंगे। कल सभी छात्रोंको अनिवार्य रूपसे कालेजमें उपस्थित होना होगा क्योंकि लार्ड चांसलर बाइबिलकी शपथ देकर पूछताँछ करेंगे।

उसी दिन रातको एमेटने अपना त्यागपत्र लिख डाला।

विश्वविद्यालयके उस सुखमय जीवनका सहसा त्याग करनेमें उसे असीम वेदना हो रही थी। कितना बड़ा त्याग वह करने जा रहा था। जीवनकी सारी अभिलाषाओं, सारी कामनाओं, समस्त आकांक्षाओंका वह एक साथ ही बलिदान कर रहा था। उस समय उसे करेनके शब्द याद आये। वह त्यागपत्र नहीं था, जीवनकी आकांक्षाओंके लिए मृत्युका परवाना था।

इतना ही नहीं, उसने यह भी देखा कि प्रेमका जो अङ्कुर उसके हृदयमें प्रस्फुटित हुआ है उसपर भी यह ओलाका काम करेगा क्योंकि करेनकी बातोंमें इस बातका आभास था कि विद्रोहसे उसे सहानुभूति नहीं और विद्रोही उसका मित्र नहीं हो सकता। हो सकता है कि सराहके दर्शन उसे फिर न हों, तो भी उसकी कलम रुकी नहीं। मातृभूमिकी पुकार, माताका आर्तनाद उसके कानोंमे इस तरह गूँज रहा था कि दूसरी कोई आवाज उसे सुनाई नहीं पड़ती थी। उसने दृढ़ताके साथ स्पष्ट शब्दोंमें लिखा :—

माई लार्ड,

आपके आदेशानुसार मुझे कालेजमे सूचना मिली है कि कल मैं आपके सम्मुख उपस्थित होकर शपथ पूर्वक यह बतलाऊँ कि मैंने कालेजकी दीवारोंके भीतर विद्रोहकी भावनाको किस हदतक जाग्रत किया है तथा मेरे इस काममे कालेजके अन्य कौन कौन छात्र शामिल रहे हैं। मैं किसी भी तरह आपके शब्दोंको तोड़ना मरोड़ना नहीं चाहता। मैं आपसे स्पष्ट शब्दोंमें कह देना चाहता हूँ कि आपके विचारसे जो देशद्रोह है वही मेरे विचारसे देशप्रेम है। जिसे आप घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं उसीकी मैं उपासना करता हूँ। साथ ही मैं कानूनकी उस धाराका भी आश्रय नहीं लेना चाहता कि किसी भी व्यक्ति-

को स्वयं अपराधी नहीं बन जाना चाहिए। मैं स्पष्ट शब्दोंमें आपसे कह देना चाहता हूँ कि मुझमें वह देशभक्ति कूट कूटकर भरी हुई है जिसे आप विद्रोह कहते है। मैं गुप्तचर होनेका वह नीच कर्म नही करना चाहता जो आप प्रकारान्तरसे कराना चाहते है। मैं यह भी मानता हूँ कि वैसा करनेसे इनकार करनेका कमसे कम दण्ड कालेजसे निर्वासन है। इसलिए मैं इस त्यागपत्रद्वारा आपके दण्डकी पहले ही पूर्ति कर देता हूँ।

—राबर्ट एमेट

दूसरे दिन कालेजमें विचित्र चहल-पहल थी। सुबहसे ही कालेजके उस विशाल हालमें लोगोंका आना जाना आरम्भ हो गया था जिसे कालेजके वाइस-चांसलर क्लेयरने अपने इस पाप-कर्मके लिए चुन रखा था। दोपहर होते होते कालेज अधिकारिवर्ग तथा छात्रोंसे खचाखच भर गया था। सभी उत्सुकता तथा बेचैनीके साथ उस घड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे जो जाँचके लिए नियत थी।

ठीक समयपर लार्ड क्लेयरने सभाभवनमें प्रवेश किया। सभाभवनमें पूरा सन्नाटा छा गया। वहाँ एक भी व्यक्ति ऐसा नही था जो लार्ड क्लेयरके अधिकारोंसे परिचित नहीं था। लार्ड क्लेयर आयर्लैण्डके एकछत्र सम्राट हो रहे थे। उनके इशारेमात्रसे स्याहका सफेद और सफेदका स्याह हो सकता था। जिसका वह अन्त कर देना चाहते थे उसके लिए गवाहों, जूरियों और जजोंकी उन्हें कमी नही थी। रिश्वत और घूसखोरीसे उन्होंने आयर्लैण्डके हजारों निवासियोका ईमान जीतकर अपने वशमें कर लिया था।

लार्ड क्लेयर ज्यों ही कुर्सीपर आसीन हुए, एमेट भीड़को

चीरता हुआ उनके पास पहुँचा और अपना त्यागपत्र उनके हाथमें रख दिया।

एमेटको इस तरह अपनी ओर आते देखकर लार्ड क्लेयर चौंक उठे। सहसा उनका हाथ कोटके भीतर रखी पिस्तौलकी तरफ बढ़ गया जिसे वे चौबीसो घण्टा अपने साथ रखते थे। लेकिन उसे निकालनेकी उन्हें जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि एमेट जिस तरह आया था लिफाफा देकर उसी तरह लौट गया।

लार्ड क्रेयरने लिफाफा खोलकर त्यागपत्र बाहर निकाला। उसे पढ़ा। क्रोधसे उनकी आँखें लाल हो गयी। होंठ फड़कने लगा। उन्होंने एमेटको लक्ष्यकर कहा :—क्या तुम नहीं समझते कि यह देशद्रोह है?

एमेटने निडर होकर कहा :—मैंने जो कुछ लिखा है सत्य लिखा है!

लार्ड—मुझसे वहस न करो, मैं तुम्हे फाँसीपर लटकवा सकता हूँ।

एमेट—मेरा पत्र ही इस बातका प्रमाण है।

लार्ड क्रेयर क्रोधसे थर थर काँपने लगे। पर एमेटपर कोई असर नहीं हुआ। वह उसी तरह तनकर अपनी जगहपर खड़ा रहा। लार्ड क्रेयरने मन ही मन उसके असीम साहसकी प्रशंसा की। उसी साहसने एमेटके प्राण बचा लिये। लार्ड क्लेयरने अपनेको सम्हाल लिया था। उन्होंने संयत भाषामें कहा :—तुम बैठ जाओ। समयपर तुम्हारे साथ उचित कारर-वाईकी जायगी।

एमेट चुपचाप अपनी जगहपर बैठ गया। लार्ड क्लेयरने आँखें उठाकर भीड़की तरफ देखा जो उसके भयसे कातर हो

रही थी। अभिमानसे उसका हृदय फूल उठा। इसके बाद उसने गर्व-भरे स्वरमे कहना आरम्भ किया।

६

उस निस्तब्धतामें लार्ड क्रेयरकी डरावनी आवाज हालके कोने कोनेमें गूँज उठी। उन्होंने गरजकर कहा :—

मैं आज यहाँ यह जाननेके लिए आया हूँ कि देशद्रोह और असन्तोषकी भावनाका जो कलङ्क इस प्राचीन कालेज-पर लगाया जा रहा है वह किम्वदन्ती मात्र है अथवा स्थूल सत्य। मुझपर इस कालेजकी उन्नतिकी देखरेखका भार सौंपा गया है। मेरा कर्तव्य है कि इस कालेजसे सम्बन्ध रखने-वाले छात्रों तथा अध्यापकोंकी गति-विधिपर नजर रखूँ और उन्हें किसी भी तरह गलत रास्तेपर न जाने दूँ। यदि इसी तरहकी अफवाहें इस कालेजके बारेमें उड़ती रहीं अथवा बेरोक-टोंक विद्रोहियोंको युवकोंका मस्तिष्क विकृत करने-का अवसर दिया जाता रहे तो यह मेरे लिए कलङ्ककी बात होगी और मैं अपने कर्तव्यसे विमुख समझा जाऊँगा।

छात्रोंके भविष्यको उज्वल बनाते रहनेकी सतत चेष्टा करते रहनेके साथ ही साथ यहाँके निवासियोंके सुख और समृद्धिकी रक्षाकी भी जिम्मेदारी मेरे सिरपर है। जिन उपद्रवोंके कारण आज यूरोपकी शक्ति भङ्ग हो रही है वर्त-मान युगके उदीयमान शिक्षित समुदायमें उनकी पानेसे मैं उन्हें बलपूर्वक रोकनेका यत्न करूँगा।

इस कालेजकी परम्परागत देशभक्तिके खिलाफ जो

अफवाहें उड़ रही हैं उसका प्रत्यक्ष प्रमाण वह परचा है जो इस युनिवर्सिटीके स्वतन्त्र विचारवाले छात्रोंके प्रस्तावके रूपमें प्रकाशित किया गया है। इस बातकी नितान्त आवश्यकता है कि जो लोग मेरी बातें सुन रहे हैं वे शपथ-पूर्वक ऐलान करें कि कलङ्कपूर्ण परचेसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

"जो लोग अपना अपराध स्वीकार कर खेद प्रकट करगे, उन्हें क्षमा दान दिया जायगा। जो लोग असन्तोष फैलाने और छात्रोंके भड़कानेके अपराधी पाये जायँगे उन्हें कड़ीसे कड़ी सजा दी जायगी। जिसने यह उद्दण्ड परचा लिखा है और मुझे धमकी दी है उसे भी कड़ासे कड़ा दण्ड दिया जायगा।"

इसके बाद उन्होंने घृणाके साथ मेलची नीलनका वह परचा पढ़ा जिसकी एमेटने जोरदार शब्दोंमे निन्दा की थी। एमेट-की आँखें उधर ही घूम गयी जहाँ मेलची अपने उस दिनके दो साथियोंके साथ बैठा था।

टामी मूरका चेहरा भयसे पोला पड़ गया था। टेरेंस ओ-गोर्मनकी भी वही हालत थी। उसका एक हाथ एक साथी-की गर्दनपर था। एमेटने देखा कि उत्तेजनासे उसकी मुट्ठी-वँध जाती थी लेकिन मेलची शान्त और स्थिर था। उसके चेहरेपर उद्वेग या भयका कोई चिह्न नहीं था। वह स्थिर दृष्टिसे लार्ड चांसलरकी ओर देख रहा था और प्रत्येक वाक्य-पर टामी मूर स्वीकृति या अनुमोदनके लिए सिर हिला देता था, यद्यपि टामी मूर बार बार उसे रोकनेकी चेष्टा करता था।

मेलचीकी इस अदूरदर्शिता तथा जल्दीके कारण ही कालेजमें इनके संघपर यह महान सङ्कट उपस्थित हो गया था लेकिन वह जिस साहसके साथ इसके परिणामको भोगने-

की प्रवृत्ति प्रकटकर रहा था उसका एमेटपर बहुत ज्यादा असर पड़ा।

उस हालमें मेलची ही एक ऐसा व्यक्ति था जो लार्ड चांसलरके आगमनसे लेशमात्र भी विचलित नहीं हुआ था। उसकी निर्भीकता और उसका अदम्य साहस देखकर एमेटने मन ही मन कहा :—यही एक व्यक्ति है जिसके साथ निर्भय होकर कालके ऊपर भी चढ़ाई की जा सकती है।

इसके बाद जाँच आरम्भ हुई। सबसे पहले कालेजके अधिकारियोंसे पूछ-ताँछ होने लगी। जिनलोगोंने स्वाधीनता-के साथ लेशमात्र भी सहानुभूति दिखायी उन्हे कड़ी फटकार सुननी पड़ी।

इसके बाद छात्रोंकी वारी आयी। सबसे पहले टामी मूर-की पुकार हुई। टामी मूरके लिए विद्रोह एक खेलवाड़-सा था। लेकिन जब उसके हाथमें शपथ लेनेके लिए बाइबिल दी जाने लगी तो उसने साहसके साथ अस्वीकार कर दिया।

उसे झिड़कते हुए कालेजके प्रिन्सिपलने बाइबिल उसके दाहिने हाथपर रखना चाहा। उसने अपना दाहिना हाथ इस तेजीसे खींच लिया मानो वह पुस्तक आगसे तपी हुई लोहे-की शलाका हो। तब उन्होंने उसके बायें हाथपर पुस्तक रखनी चाही। उसने बायाँ हाथ भी उसी तरह हटा लिया। प्रिंसिपल साहब जब किताब लेकर उसकी ओर बढ़े तब वह पीछे हटने लगा।

यह दृश्य इतना मनोरंजक था कि देखनेवाले किसी भी तरह अपनेको रोक नहीं सके। सभी खिलखिलाकर हँस पड़े लेकिन क्षणभरमें ही लोग चुप हो गये।

इस समय लार्ड क्लेयर अपने बगलमें बैठे अधिकारीसे कुछ

सलाह मशविरा कर रहे थे। आवाज सुनकर उनका ध्यान इस ओर गया। उन्होंने दर्शकोंकी तरफ विस्मय तथा क्रोधसे देखा। इस बीच टामी मूर तथा प्रिंसिपलके बीच जो कुछ हुआ था उसे उन्होंने नहीं देखा था। उसी समय उनकी निगाह उन दोनोंपर पड़ी। प्रिंसिपल बाइबिल लेकर आगे बढ़ते जा रहे थे और टामी मूर पीछे हटता जाता था। यह विचित्र दृश्य देखकर उनके मनहूस और खूँखार चेहरेपर भी हँसीकी रेखा दौड़ गयी। उन्होंने कर्कश स्वरमें कहा :— डुइगनन ! उस बेवकूफ लड़केके साथ क्या खेल खेल रहे हो।

वह तमाशा वहीं रुक गया। जिस तरह स्वामीकी आवाज-पर कुत्ता दुम हिलाकर लौट पड़ता है उसी तरह प्रिंसिपल भी लौट पड़े। बोले :—माई लार्ड ! उसने बाइबिल लेनेसे इनकार कर दिया है। वह शपथ लेनेके लिए तैयार नहीं है।

लार्ड क्लेयर—अच्छी बात है ! इधर तो आओ मेरे युवक मित्र ! टामी उसी तरह दोनों हाथ पीछे किये आगे बढ़ गया।

लार्ड क्लेयर—किताब हाथमें लो।

टामी मूरके दोनों हाथ इस तरह सामने आ ग[illegible]नो उसका साहस जाता रहा। लेकिन उसने सिर हिलाकर अस्वीकृति जाहिर की।

लार्ड क्लेयर—क्या तुम इनकार करते हो ?

टामी मूरका भाव बदल गया। उसने स्वीकृति प्रकट की।

टामी मूरका भोलाभाला चेहरा, उसकी सिधाई तथा घबराहट देखकर लार्ड क्लेयरका क्रोध ठंढा पड़ गया। उन्होंने

झुककर प्रिंसिपलके कानमें कुछ कहा। उत्तरमें प्रिंसिपलने कहा,—बहुत ही सीधा लड़का है। कवि प्रकृतिका है।

यह सुनकर लार्ड क्रेयरने मुलायम होकर पूछा,—तुमने क्यों इनकार किया था ?

लार्ड क्रेयरका भाव बदलते देख टामी मूरको आश्वासन मिला। उसने दृढ़ तथा स्पष्ट शब्दोंमें कहा :—मैंने इसलिए इनकार किया कि मैं अपने साथियोंके लिए नीच गुप्तचरका काम नही करना चाहता।

लार्ड क्रेयर—असली बात जाननेके पहले ही तुमने परिणाम निकाल लिया। तुम्हे सब प्रश्नोंका उत्तर नही देना है। सिर्फ सच बोलना है। किताब हाथमे ले लो।

टामी मूरने किताब हाथमे ले ली। शपथ लिया।

लार्ड क्रेयरको टामी मूरका गोलमटोल चेहरा देखकर हँसी आ रही थी। उन्होने मुस्कुराते हुए पूछा :—क्या तुम युनाइटेड अमेरिकन आदमी हो ?

टामी मूर—जी नही।

लार्ड क्रेयर—क्या कालेजमें ऐसी कोई संस्था है जो छात्रोंमें विद्रोहकी भावना फैलाती है। मैं किसीका नाम नही पूछ रहा हूँ।

टामी मूर—मुझे नहीं मालूम !

लार्ड क्रेयर—तुम्हारी जाँच समाप्त हो गयी। तुम्हें पहले ही साफ साफ कह देना चाहिए था। तुम्हारी बनावटी बहादुरी तुम्हें सङ्कटमें डाल सकती थी।

इसके बाद टेरेंस ओगोर्मन की बुलाहट हुई। मंचपर पहुँचकर उसने बिना किसी हिचकके बाइबिल उठा ली और कसम खायी कि वह जो कुछ कहेगा सच कहेगा। लार्ड क्रेयरने

उसकी ओर घूरकर देखा। वे जानते थे कि यह एमेटका अन्तरङ्ग मित्र है। इससे उन्हें आशा थी कि यह उद्दण्डता प्रकट करेगा।

लार्ड क्रेयर—क्या तुम्हें मालूम है कि इस कालेजके भीतर ऐसी संस्था है जो छात्रोंमें विद्रोहका प्रचार करती है।

टेरी—जी हाँ, मैं जानता हूँ।

लार्ड क्रेयर—तुम तो बड़े बहादुर हो।

लार्ड क्रेयर—क्या तुम उस संस्थाका नाम बतला सकते हो?

टेरी—आरेंज सोसाइटी!

टेरीका यह उत्तर लार्ड चांसलर तथा अन्य लोगोंको पिस्तौलके समान लगा। प्रिंसिपलका चेहरा भी क्रोधसे लाल हो उठा। उन्होंने अपनी मुट्ठी इस तरह बाँधी मानो टेरीपर प्रहार करेंगे।

लार्ड क्रेयरने झुँझलाकर कहा,—तुम्हारी धृष्टता ही तुम्हें दोषी प्रमाणित करती है। तुम जा सकते हो!

इसके बाद जाँचका काम समाप्त हो गया। उन्नीस छात्र कालेजसे निकाले गये। उनमें राबर्ट, एमेट और टेरेन्स ओ-गोर्मनका नाम सबसे ऊपर था। टामी मूर तथा मेलची नीलन साफ साफ बच गये।

७

कालेजसे निकाल दिये जानेके बाद राबर्टको चारो ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखायी देने लगा। मानो काले बादलने उसे चारो ओरसे घेर लिया हो। प्रकाशकी क्षीण रेखाका

स्फूर्ति आ गयी थी। वह उसी तरह नदीके किनारे किनारे डबलिनकी तरफ बढ़ा।

करीब चार बजे वह ग्रीन स्ट्रीटके मोड़पर पहुँचा। उसी समय अदालतके तङ्ग फाटकसे इस तरह भीड़ निकली जिस तरह शहदकी मक्खियाँ अपने छत्तेसे निकलती हैं।

उनके बीचमें एक व्यक्ति था। उसे वे लोग इस तरह घेर-कर चल रहे थे जिसमें भीड़ उसपर टूट न पड़े। वे अजस्र ध्वनिसे उसके जयके नारे लगा रहे थे। वे चिल्ला रहे थे :— "आपकी जय हो, ईश्वर आपको चिरायु रखे। आपकी ही वाणीमें यह सामर्थ्य थी कि आप उस निरीहके प्राण बचा सके, नहीं तो शैतानोंने उसे निगल जानेकी ही कोशिश की थी। लेकिन आपने उनकी सारी कोशिशें बेकार कर दीं।"

एमेटको समझनेमें देर नहीं लगी कि आज पुनः करेनने अपनी जोरदार बहससे किसी निर्दोषको फाँसीके तख्तेपर चढ़नेसे बचा लिया है।

उसने देखा कि प्रसन्नता और गौरवसे करेनका चेहरा प्रदीप्त हो रहा है और वह विजयी वीरकी भाँति अपनी गाड़ीकी तरफ बढ़ा जा रहा है। करेनने भी एमेटको देख लिया। करेनने झपटकर एमेटका हाथ पकड़कर भीड़में अपनी ओर खींच लिया और कहा :—मेरे साथ गाड़ीमें चलो। मुझे तुमसे बातें करनी हैं।

११

भीड़को चीरकर गाड़ी आगे बढ़ी। करेनने कहा :—आज तुम अचानक गिरफ्तार हो गये। तुम्हें मेरे घरपर भोजन करना

होगा। आज दूसरा कोई नहीं है। हम, तुम और सराह !"

सराहका नाम सुनते ही एमेटको रोमाञ्च हो आया। उसका चेहरा और ललाट लाल हो गया। लेकिन करेनका ध्यान इधर नहीं था।

एमेटको देखते ही सराहके दोनों गालोंपर गुलाबी दौड़ गयी। उसने प्यासी नजरोंसे एक बार उसकी ओर देखा पश्चात् आँखें नीची कर ली। भोजनके समय भी दोनोंकी यही हालत रही। मुँहसे नही पर अनेक चेष्टाओं और भावभङ्गीसे दोनोंने अपना अपना प्रेम एक दूसरेपर प्रकट कर दिया।

भोजनके बाद करेन एमेटको लेकर बैठकेमें गये और बातोंका सिलसिला जारी हुआ।

करेनने कहा :—यदि सावधानीसे रहा जाय तो मनुष्य बहुत दिन जीवित रह सकता है, असावधानकी जीवनलीला किसी भी दिन समाप्त हो सकती है। हमलोग बड़े ही सङ्कटके युगसे गुजर रहे हैं। हमारी जरासी असावधानी हमे मेजर सिरके जुल्मका शिकार बना सकती है।

एमेट—मै आपको वचन देता हूँ कि सदा सावधान और सतर्क रहूँगा। कोई भी काम उत्तेजनावश जल्दीबाजीमें नही कर बैठूँगा।

करेनने व्यङ्गकी हँसी हँसते हुए कहा :—तुमसे ऐसी ही आशा है। तुम मेजर सिर तथा उसके खूँखार कुत्तोंको सदा धता बताते रहोगे। अभीतक तो तुमने उसीका सबूत दिया है। क्यों, ठीक है न? खेद है कि मेरी बातें तुम्हारे दिलमें नही बैठती। उस दिन मैंने तुम्हें कितना समझाया था लेकिन आजकलके जवान तो अपने बूढ़े बापको भी पागल और खब्बीस समझते है। तुमने मेरी बातोंपर जरा भी ध्यान नही दिया।

तो तुम्हें सावधान और सतर्क रहकर समझदारीसे काम लेना चाहिए। विद्रोह और आत्मरक्षा दोनों एक साथ इस जमानेमें नही चल सकते।"

उसके बाद अपना स्वर सहसा बदलकर उन्होंने पूछा :— अच्छा, कालेज छोड़नेके बाद तुमने अबतक क्या किया ?

एमेट—कुछ नहीं। सिर्फ—

करेन—क्या सिर्फ? जो कहना चाहते थे कह डालो।

एमेट—......कहने लायक ऐसा कोई काम मैंने नहीं किया है।

करेन—यह मैं कैसे मान लूँ। कहनेके लिए बहुत कुछ है। कालेजके उन शैतान लड़कोंसे तुम्हारा अभीतक सम्पर्क बना हुआ है। मेरा मतलब टेरेंस ओगार्मन और मेलची नीलनसे है। मेलची नीलनके नामपर उन्होंने बहुत जोर दिया। एमेटको उनकी इस जानकारीपर विस्मय हुआ।

करेन—तुम्हें कुछ कहनेकी जरूरत नही है। मुझे सब कुछ मालूम है। यदि मुझे लेशमात्र भी शक होता तो उसे तुम्हारी आँखें मिटा देतीं। लेकिन जो कुछ यह मैं कह रहा हूँ स्थूल सत्य कह रहा हूँ। तुम्हें विस्मय होगा कि तुम्हारी इतनी बातें मैं किस तरह जानता हूँ। मैं तुम्हें बतला देना चाहता हूँ कि तुम्हारी गुप्तसे गुप्त हरकतोंका पता केवल मुझे ही नहीं बल्कि कौंसिलको भी है। उन्हें उसका पता कैसे लग जाता है, इसे बतलानेके लिए मै स्वतन्त्र नही हूँ। मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि तुमपर कड़ी नजर रखी जाती है और तुम्हारे साथ गुप्तचर लगे हैं। यदि तुम्हारी रवैया यही रही तो तुम एक महीना भी जिन्दा नही बचे रहोगे।

एमेट—मैं पीछे कदम नहीं रख सकता। न तो अपने विश्वाससे विचलित हो सकता हूँ और न अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग कर सकता हूँ।

करेन—मैं पीछे कदम रखनेके लिए कहाँ कहता हूँ। मैं तो सिर्फ उस रास्तेसे अलग होनेके लिए कहता हूँ जिसपर मृत्यु खड़ी है। तुम्हारे प्रोफेसरोंका कहना है कि विज्ञानमें तुम्हारी विलक्षण प्रतिभा है। शर्मानेकी जरूरत नहीं है। मै अपनी ओरसे कुछ नही कह रहा हूँ। ये शब्द तुम्हारे प्रोफेसरोंके ही हैं। क्या यह सम्भव नहीं है कि तुम राजनीतिके पथसे हटकर विज्ञानके पथका पथिक बनो? मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि तुम इस क्षेत्रमें भी असफल नहीं होगे। यदि असफल भी हुए तो कोई हर्ज नही क्योंकि इसमें प्रवेश करते ही तुम सुरक्षित हो जाओगे।"

"एक दो सालमे यह तूफान ठंढा पड़ जायगा उसके बाद यदि तुम चाहोगे तो तुम्हें कालेजमें भी मैं भर्ती करा दूँगा। और इस तरह वकालतका रास्ता भी तुम्हारे लिए खुल जायगा। मैं वहुत कह गया लेकिन तुम जानते हो कि बोलनेका मुझे अभ्यास है। तुम मुझे प्यारे हो और तुमसे वढ़कर सराह मुझे प्यारी है। दोनोंके कल्याणके लिए, दोनोंके हितकी कामनासे मैं यह सव कहता हूँ।"

सराह और एमेटका एक साथ नाम करेनके मुँहसे अचानक निकल पड़ा था। इससे एमेटकी वही दशा हुई जो सेंधपर पकड़े गये चोरकी होती है। शर्मसे उसका सिर झुक गया। लेकिन करेन अपनी वक्तृतामें इतना व्यस्त था कि उसने इसे लक्ष्य-तक नहीं किया। बोला:—"मैं तुमसे किसी तरहकी प्रतिज्ञा कराना नहीं चाहता। जबर्दस्ती वचनबद्ध करानेमें मैं विश्वास

नही करता। जो कुछ मैंने कहा है उसपर तुम गौरसे विचार करो और उसके बाद तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहे वह करो।"

१२

रावर्ट एमेट उन लोगोंमें नही था जो कोरी कल्पना किया करते हैं। जो कुछ वह सोचता था उसे सदा कार्यमें परिणत करनेका प्रयत्न करता था। वह विज्ञानके अध्ययनमें तन मनसे लग गया। सारे दिन वह प्रयोगोंके पीछे पड़ा रहता था। यहाँ-तक कि राजनीतिकी उसे सुध-बुध भी नहीं रही।

उसकी सोयी हुई मनोवृत्तिको जगानेके लिए बाहरी साधन भी नही रह गये थे। टेरेन्स ओगार्मन फ्रांस चला गया था और मेल्वी नीलन द्वन्द्व-युद्धके बाद केवल एक दिन आया और उसे विज्ञानके प्रयोगोंमें व्यस्त देखकर चला गया।

टामी मूर कभी कभी अवश्य आता था। लेकिन उसका कवि हृदय राजनीतिकी अपेक्षा कविता-कामिनीके कलेवरको सजानेमें ज्यादा तत्पर रहता था।

लेकिन एक दिन अचानक प्रयोगके इस काममे भीषण बाधा उपस्थित हो गयी। वह एक दिन कोई प्रयोग कर रहा था जिसमे करोसिव सब्लीमेट प्रधान तत्व था। रात बारह बजेतक वह काम करता रहा। इस प्रयोगकी सिद्धिमे बड़े बड़े वैज्ञानिक असफल हो चुके थे। लेकिन उसे आशातीत सफलता उसमें मिली।

यह असाधारण सिद्धि थी। अपनी सफलतापर वह फूला नही समाया। मारे खुशीके उसे सोनेकी सुध भी

नहीं रही। उसका उत्साह इतना ज्यादा बढ़ा कि वह बीज-गणित लेकर एक सवाल हल करने बैठ गया जिसे हल करनेमें वह दो बार असफल हो चुका था। इसी बीचमें उसे जोरोंकी भूख मालूम हुई। जलपानके बाद उसने अबतक कुछ नहीं खाया था। सवालको अधूरा छोड़ना उसे उचित नहीं प्रतीत हुआ, इसलिए रोटी और मक्खन लेकर वह टेबुलपर बैठ गया और एक साथ ही दोनों काम करने लगा। सवाल हल होनेके लक्षण ज्योंही प्रकट होने लगे त्योंही उसके सिरमें भयानक दर्द शुरू हुआ। दर्दसे वह बेचैन हो उठा। अचानक उसे याद आ गया कि प्रयोगके बाद उसने हाथ नहीं धोया था। हाथमें कोरोसिव सब्लिमेट लगा था। उसी हाथसे उसने भोजन किया। भोजनके साथ जहर शरीरमें प्रवेश कर गया जिसका परिणाम यह दर्द और बेचैनी है।

वह सोचने लगा कि इस जहरकी मारक दवा क्या है। लेकिन उसे याद नहीं आयी। भाग्यवश कमरेमें इनसाइक्लोपीडिया था। दर्दसे कराहते हुए वह किसी तरह वहाँतक पहुँचा और उसे उलटकर देखने लगा। वेदना और जलनसे उसकी आँखें बन्द हो रही थीं। बड़ी कठिनाईसे वह पढ़ सका कि यदि वह जहर शरीरमें प्रवेश कर गया हो तो अण्डेका सफेद अंश या खड़िया खा लेना चाहिए। उतनी रातको अण्डेका सफेद अंश तो मिलना कठिन था लेकिन खड़िया घरमें कहीं रखी उसने देखी थी। बड़ी कठिनाईसे वह याद कर सका कि खड़िया कहाँ है। लेकिन इस वक्ततक उसके हाथ पैर शिथिल हो रहे थे। उसका गला इस तरह जल रहा था मानो उसने आगका जलता अङ्गारा लील लिया हो। मुँह सूखकर काँटा हो रहा था।

सौभाग्यसे चाँदनी रात थी, आकाश निर्मल था। बाहर निकलनेके लिए रास्ता पानेमें उसे सुविधा हुई। वह लड़खड़ाता हुआ वहाँतक पहुँचा और खड़ियाका एक ढेला उठाकर चबाने लगा। एक तो उसका मुँह पहलेहीसे सूखा हुआ था, दूसरे खड़ियाके पिसानने उसे और भी सुखा दिया। लाख चेष्टा करनेपर भी वह गलेके नीचे नहीं उतरा। जीनेकी आशासे मुर्दा शरीरमें भी शक्तिका सञ्चार हो जाता है। वह खड़िया लेकर गिरता पड़ता अपने कमरेमें पहुँचा। उसे पीसा और पानीमें घोलकर पी गया।

इसके बाद वह कोचपर लेट गया। वह जीवन और मरणके बीच लटक रहा था। यदि उपाय कारगर हुआ तो वह बच जायगा, नहीं तो मृत्यु निश्चित थी। उसकी चेतना लुप्त नहीं हुई थी। मस्तिष्क साफ था वह मृत्युके परिणामपर विचार करने लगा। वह अपने हाथोंको उठाकर देखने लगा और मन ही मन कहने लगा—"आज ये कितने सुन्दर हैं। कल मेरे मर जानेके बाद ये कितने वीभत्स दीखेंगे। मेरी माँ सबेरे कमरेमें आवेगी। मुझे मरा पड़ा देखकर उसे कितना विषाद होगा!"

धीरे धीरे उसकी पीड़ा कम होने लगी। लेकिन उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह सङ्कट टलनेके लक्षण नहीं हैं बल्कि विषके प्रभावसे ज्ञानतन्तु शिथिल होते जा रहे हैं। इसीसे व्यथाकी अनुभूति क्षीण होती जा रही है। वह कायर नहीं था। मरनेसे वह डरता नहीं था। उसे विषाद इस बातका था कि असावधानीके कारण अपनी बेवकूफीसे वह प्राण गँवा रहा है।

उसने सोचा भी नहीं था कि इस तरह सूनसान रातमें इतनी जल्दी अचानक मृत्यु उसका अन्त कर देगी। उसने उस दिन मरनेकी कल्पना की थी, जिस दिन आयरिश सेनाका

सञ्चालन करता हुआ वह ब्रिटिश सेनासे मोर्चा लेगा और वीरोंकी भाँति लड़ाईके मैदानमें मातृभूमिकी रक्षाके लिए अपने प्राणोंको होमकर अक्षय कीर्तिका भागी बनेगा। लेकिन वैसा न होकर वह इस बुरी तरह मर रहा है जिसे वह नितान्त गर्हणीय समझता है। इस खयालके आते ही वह व्यथित हो उठा।

उसके माता-पिताकी क्या हालत होगी। सराह अपने मन-में क्या सोचेगी। सभी यही सोचेंगे कि मैं कायर था और कायरोंकी भाँति मैंने आत्महत्या कर ली। इस खयालके आते ही उसे बड़ी आत्मग्लानि हुई।

उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई पुकारकर उससे कह रहा हो—तुम्हे कायरोंकी मृत्यु मिल रही है। तुम इसीके योग्य हो। जिस उद्देश्यके लिए तुमने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था उससे तुम विचलित हो गये। अपनी प्रतिज्ञा तुम भूल गये। उसका यही समुचित दण्ड है।"

ओह! मैं अपनी जवानीके उस सुन्दर आदर्शसे क्यों विचलित हुआ! जिस महान उद्देश्यकी सिद्धिके लिए मैंने अपना जीवन अर्पित कर दिया था, उससे मैं क्यों विमुख हुआ। मैंने खतरेसे बचना चाहा किन्तु मृत्युके मुँहमें जा पड़ा। अब भी समय है। यदि इस बार मैं बच गया तो मैं देशसेवामें ही अपनेको लगाऊँगा।

आशाने फिर उसे एक बार चैतन्य कर दिया। वेदना प्रायः समाप्त हो गयी थी। लेकिन वह इतना कमजोर और सुस्त हो गया था कि रह रहकर उसे मूर्च्छा आ जाती थी। वेदना और पीड़ाका इस तरह अन्त हो जाना जीने या मरनेके लक्षण है। उसने फिर इनसाइक्लोपीडियाकी शरण ली और उसके पन्ने उलटकर पढ़ने लगा। उसमें लिखा था :—यदि मारक दवा

खानेके दो घटे बाद तक रोगी जीता रहे तो वह बच जायगा।"
उसने अपनी घड़ी देखी। दवा खाये एक घण्टा हो गया था। यदि वह इसी तरह एक घण्टा और जीवित रहा तो बच जायगा।

वह घड़ी सामने रखकर बैठ गया और उसकी सुईकी गति गौरसे देखने लगा। इसी तरह सबेरा हो गया। उषाकी प्रथम किरणके पड़ते ही वह उठकर खड़ा हो गया। उसके होठोंपर मुस्कराहटकी हल्की रेखा दौड़ गयी। मृत्युके पञ्जेसे वह साफ बच गया।

१३

इस घटनाके कई दिन बाद एमेट करेनसे मिलने गया। वह उस नामी वकीलसे किसी प्रकारका वचनबद्ध नहीं था, लेकिन उसने उनसे इतना तो अवश्य कहा था कि वह आयलैंण्डकी वर्तमान राजनीतिसे अपनेको अलग रखनेका भरसक यत्न करेगा और इस तरह अपनेको अधिकारियोंके फैलाये जालमें फँसनेसे बचावेगा। उस दिन वह उन्हें यही सम्वाद देने गया था कि उसने अपना वह उद्देश्य त्याग दिया है और साथ ही सारी घटना भी सुना देना चाहता था।

फाटकपर ही उनकी नौकरानी अनी डेटालिन मिली। उसने कहा :—मालिक बाहर गये हैं। बारह बजे रातसे पहले नहीं आवेंगे।

एमेट वहींसे वापस आ रहा था कि अचानक संगीतकी मधुर ध्वनि उसके कानमें पड़ी। उसने साहस करके पूछा :—क्या मिस करेन घरमें हैं?

अनी एमेटको अच्छी तरह जानती थी। वह स्वयं विद्रोही थी। इसलिए मन ही मन वह एमेटकी पूजा भी करती थी। उसने मुस्कुराकर कहा :—मिस सराह हैं, चलिये न !

मिस सराहका नाम सुनकर एमेटका चेहरा प्रसन्न हो उठा। अनीने उसे लक्ष्य किया। उसके नारी-हृदयमें डाह उत्पन्न हो गया। उसने मन ही मन कहा :—इन्हें देखकर मुझे कितनी खुशी हुई, लेकिन इनका दिल तो सराहके लिए लाला-यित है।

लेकिन कमरेमें पहुंचकर एमेटको बड़ी निराशा हुई। सराह वहाँ नहीं थी। उसके बदले एक नौजवान पियानोपर अँगुलियाँ फेर रहा था और उसीसे स्वर मिलाकर अलाप रहा था। दरवाजा खुलनेकी आवाजसे उसने अपना मुँह उधर फेरा। एमेटने देखा वह टामी मूर है। टामी मूर एमेटके सत्कारके लिए अपनी जगहसे उठना चाहता था लेकिन एमेटने स्नेहसे उसकी गर्दनपर अपना हाथ रखते हुए कहा :—उठने-की जरूरत नहीं है टामी। बड़ा ही सुन्दर गाना गा रहे हो।

टामी मूर—यह बहुत प्राचीन आयरिश गीत है। मैं इसे नया जामा पहनानेका यत्न कर रहा हूँ। अभी तो एक पद ठीक कर सका हूँ।

इतना कहकर उसने उस पदको गाना आरम्भ किया। टामी मूरने उस संगीतमें अपनी सारी संगीतकला और कवित्व शक्तिको उड़ेल दी थी।

गीत सुनकर एमेट उछल पड़ा। उसकी नस नसमें रक्त दौड़ने लगा। उसने कहा :—इस गीतको सुनकर यही इच्छा होती है कि इसी गीतकी ध्वनिपर मैं बीस हजार आयरिश सेनाके साथ शत्रुपर चढ़ाई करनेके लिए प्रस्थान करूँ।

इसी समय फर्शपर किसीकी कोमल पदध्वनि सुनाई पड़ी। उसने घूमकर देखा, सामने सराह खड़ी उत्फुल्ल नेत्रोंसे उसे निरख रही थी। क्षणभर दोनों नीरव और निश्चल खड़े रहे। सबसे पहले सराहने जबान खोली। भावावेशमें उसने भर्रायी आवाजमें कहा :—तुम इस तरहकी आकाङ्क्षा कर सकते हो और ऐसी आशा भी कर सकते हो! कदाचित् मुझे भी ईश्वरने पुरुष बनाया होता।"

इसपर टामी मूरने वेदनाके स्वरमें कहा :—कभी नहीं, ईश्वर ऐसा दिन कभी भी न दिखावे। उसका स्वर इस तरह काँप रहा था मानो यह घटना इसी क्षण होनेवाली हो। उसकी यह कातरता देखकर सभी हँस पड़े।

सराहने कहा :—मैं भी कैसी बेवकूफीकी बात कह गयी। क्या ही सुन्दर पुरुष मैं होऊँगी।"

टामीने दबी जबानसे कहा :—इसमें भी कोई शक है।

सराह—मैं तो बन्दूक या तलवार देखकर ही डरसे काँपने लगती हूँ। किसीकी अँगुलीमेंसे खून निकलते देखकर बेहोश हो जाती हूँ। मुझे किसीपर हाथ उठानेका भी साहस नहीं हो सकता। लेकिन अभी आपके मुँहसे युद्धकी चर्चा सुनकर मैं पागल हो गयी। क्षणभरके लिए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी तलवार लेकर नर-संहार कर सकती हूँ। मि० एमेट! आप मेरी ओर इस तरह न देखें। क्या आपको मालूम नहीं कि आज रातको आयलैंडकी स्वतन्त्रता उनके उन पुत्रोंद्वारा बेच दी जायगी जो इसके लिए धन तथा उपाधिके रूपमें पर्याप्त पुरस्कार पा चुके हैं।

एमेटने विस्मयके साथ पूछा :—इतनी जल्दी? क्या आज ही रातको? उसे मालूम था कि इङ्गलैण्डके साथ आयर्लैण्डके गठ-

चन्धनका प्रश्न कामन्स सभामें पेश था। आयलैंण्डके देशभक्त सदस्योंने ग्रैटनके नेतृत्वमें घोर संग्राम किया। अन्ततक लड़ते रहे लेकिन आयलैंण्डके बिके हुए सदस्योंने अपनी आत्माके साथ देशकी स्वतन्त्रता भी बेच दी थी। एमेट जानता था कि अन्तिम परिणाम क्या होगा। लेकिन यह इतने शीघ्र हो जायगा, इसकी आशा उसे नहीं थी।

सराहने अधीरतासे कहा :—हाँ, आज ही। मेरे पिताजी आयलैंण्डकी मानवताकी हत्या होते अपनी आँखों देखने और हत्यारोंको कोसने वहीं गये हुए हैं। मुझे भी वे अपने साथ ले जाना चाहते थे लेकिन मैं यह क्रूरकर्म देखनेके लिए तैयार नहीं थी। मैं अपने कमरेमें बैठकर आँसू गिराने और ईश्वरसे प्रार्थना करने लगी। हम औरतें दूसरा कर ही क्या सकती हैं।

सराहने यह भर्त्सनाके शब्द एमेटके लिए नहीं कहे थे। किन्तु वे उसके हृदयमें चुभ गये। उसे पश्चात्ताप होने लगा कि वह अपने सङ्कल्पसे क्यों विचलित हो गया था। उसने कहा :—प्रत्येक आयलैंण्ड-निवासीके लिए इससे बढ़कर दूसरी शर्मकी बात क्या हो सकती है कि देशको इस तरह बेचा जाय। लेकिन आज भी दश हजार देशभक्त उसकी रक्षाके लिए प्राण होम करनेके लिए प्रस्तुत हैं।

सराह—लेकिन वहाँ भी तो विश्वासघातियोंकी ही विजय होती है।

एमेट—इसका कारण यह है कि ब्रिटेनकी शक्ति उनके पीछे है।

इसपर सराहने वेदनाके साथ कहा :—आज युद्धका अन्त हो जायगा।

एमेट—ऐसा नहीं हो सकता सराह! यह युद्ध तबतक चलता रहेगा जबतक आयलैंडमें एक भी सच्चा और ईमानदार आदमी बचा रहेगा।

टामी—चलो न चलकर यह संग्राम देखा जाय। भयङ्कर सङ्घर्ष आज होगा।

एमेट—यह दिन हमलोगोंके हृदयपर अमिट छाप छोड़ जायगा। क्या आप आज्ञा देती हैं?

सराह—मेरे पिताजी गये ही हैं। वह स्थान पुरुषोंके लिए ही है।

दोनों मित्र वहाँसे चल पड़े और पार्लमेण्ट भवनके सामने जा पहुँचे। उत्तेजित जनताकी अपार भीड़ जमा थी वहाँ।

बड़ी कठिनाईसे एमेटको चबूतरेपर खड़ा होनेकी जगह मिल सकी, लेकिन क्षण भरके बाद ही दोनों मित्र फिर पीछे ठेल दिये गये। इसी समय एक हट्टे कट्टे आदमीकी नजर एमेटपर पड़ी। उसने इन्हें पहचान लिया। बोल उठा—"यह तो एमेटवंशके रत्न हैं। एमेट वंशकी जय हो।"

हजारों मुँहसे यह ध्वनि निकल पड़ी। सैकड़ों हाथ एक साथ ही इन्हें घेरनेके लिए उठ खड़े हुए। अपनी विशाल भुजाओंसे घेरे हुए वे लोग इन्हें लेकर रेलिङ्गतक पहुँचा आये। यहाँ खड़े होकर वे लोग सभामें जानेवालोंको अच्छी तरह देख सकते थे।

हर एक मेम्बरके पहुँचनेपर भीड़ जयके नारे लगाती थी या गालियाँ देती थी। इन लोगोंके आनेसे पहले ही करेन भीतर जा चुका था। लेकिन ग्रैटन इनलोगोंके सामने ही आया। इन्हें देखते ही जनता जयके नारे लगाने लगी। नारोंसे आकाश गूँज उठा।

बूढ़े ग्रैटनका चेहरा पीला और उदास था लेकिन पुरानी दृढ़ता उसपर अब भी मौजूद थी। उसकी आँखें पूर्ववत् चमक रही थी। धीरे-धीरे वह आगे बढ़ा और सभा-भवनमे चला गया।

दस हजार जनता उच्च स्वरसे ग्रैटनकी जयके नारे लगा रही थी। दूर दूरतक यह जय-ध्वनि प्रतिध्वनित हो रही थी। एमेट और मूर भी उसी स्वरमे स्वर मिलाकर जय-ध्वनि करते रहे।

उसके बाद ही लार्ड क्लेयरकी सवारी आयी। गालियोंके नारे बुलन्द हो गये। उत्तेजित भीड़ उसके ऊपर टूट पड़ना चाहती थी, लेकिन सैनिकोंका घेरा तोड़कर वहाँतक पहुँ-चना कठिन था।

उत्तेजित जनताने रोड़े और पत्थर भी फेंके। उनकी गाड़ी-का शीशा टूट गया। वे जख्मी होते होते बचे। वे रुककर खड़े हो गये। भीड़की तरफ उन्होंने घूरकर देखा। धमकानेकी चेष्टा भी की। उसके बाद कुछ बड़बड़ाते हुए भीतर चले गये।

अन्तमें इस गठबन्धनके प्रधान नायक कासिलरे आया। उसे देखकर जनताने और भी घृणित गालियाँ देना आरम्भ किया। लेकिन उसने उसकी लेशमात्र भी परवा नहीं की। हँसता हुआ भीतर चला गया।

१४

कासिलरे के बाद ही एक दूसरी गाडी पहुँची। भीडने उसे पहचाना। प्लुंकेटकी गाड़ी थी। हजारों मुँहसे एक साथही ध्वनि निकली :—"प्लुंकेटकी जय हो।"

प्लंकेट अपनी गाड़ीसे उतरा। जनताकी तरफ मुँह करके खड़ा हो गया। झुककर प्रणाम किया और मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ा।

एमेट उस सुदृढ़ और सुन्दर मनुष्यकी मन ही मन प्रशंसा करने लगा। एमेटकी दृष्टिमें प्लंकेट साहस और देश-भक्तिका सजीव पुतला था। करेनके मकानकी अपेक्षा आज वह कहीं अधिक तगड़ा, सुरूप और दर्शनीय प्रतीत होता था। उसके कपोलोंपर लालिमा दौड़ रही थी। उसकी आँखें चमक रही थीं मानो जनताकी जयध्वनिका नशा उसकी रग रगमें समाकर उसे उन्मत्त बना दिये हो।

इसी समय प्लंकेटकी निगाह एमेट पर पड़ी। एमेट स्थिर-दृष्टिसे प्लंकेटको देख रहा था। प्लंकेटने उसके हृदयके भावको उसकी आँखोंमें स्पष्ट देखा। उसने एमेटका नाम लेकर पुकारा। जनताने रास्ता बना दिया। एमेट और मूर दोनों प्लंकेटके पास जा पहुँचे। प्लंकेटने जनसमूहके समक्ष ही एमेटको गलेसे लगा लिया और खिलाखिलाकर हँसने लगा। जनताने पुनः जय-ध्वनि की। लेकिन प्लंकेटका इशारा पाते ही सब शान्त हो गये। तब प्लंकेटने गम्भीर वाणीमें कहना आरम्भ किया। उसके एक एक शब्द जनताके हृदयपर अमिट छाप डाल रहे थे। उसने कहा :—दोस्तो! आयलैण्डकी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए मैं अन्तिम युद्ध करने आया हूँ। यही भवन एक दिन हम लोगोंका पुनीत मन्दिर था। जंगलियोंके जुल्म और बेईमानीने अपना पूरा काम किया है। आपकी प्राचीन पार्लमेंटका भाग्य-सूर्य अस्त होने वाला है। आज उसपर अन्तिम मुहर लग जायगी। लेकिन इस संग्रामका यहीं अन्त नहीं होगा। आयलैण्ड-की स्वतंत्रताकी रक्षाकी दूसरी पाँत आयलैण्डके उन सपूतोंके

हृदयोंमें है जिन्हें न तो जुल्म विचलित कर सकता है और न बेईमानी जीत सकती है। जब बहस और विनयसे काम नहीं चलेगा तब हमलोग बल-प्रयोग करेंगे। कथनीका स्थान करनी ग्रहण करेगी। आज जब मैं अन्तिम बार युद्धके लिए इस भवन-में प्रवेश करने जा रहा हूँ तब मुझसे द्वारपर ही उस मनस्वी युवकसे भेंट होती है जिसके रगोंमें विद्रोहका सनातन रक्त बह रहा है। यह सबसे बड़ा शुभ लक्षण है। इस युवककी भुजाएँ आयर्लैण्डकी स्वतन्त्रताको पुनः स्थापित करेंगी।"

इतना कहकर उन्होंने अपने विशाल बाहुको एमेटके कन्धे-पर रख दिया। एमेटकी आँखें नीचे झुक गयीं। वह शर्मसे गड़ा जा रहा था।

प्लंकेटने फिर कहना शुरू किया :—एमेटके नामसे आप लोग परिचित हैं। उसी वंशका यह युवक मेरे पास खड़ा है।

इतना कहकर उन्होंने एमेटको अपने बगलमें ले लिया और सभा-भवनके भीतर चले गये। मूर भी उनके पीछे-पीछे गया। प्लंकेटने उन्हें अन्दर ले जाकर गैलरीमें सबसे आगे बिठाया। वहाँसे वे सब-कुछ देख सकते थे और सारी बात स्पष्ट सुन सकते थे।

प्लंकेट उन्हें बिठाकर चलने लगे तब टामी मूरने पूछा :— आज तो आप अपना भाषण देंगे?

प्लंकेट—यदि घृणासे मैं बेचैन न हो गया तो मैं अपना मुँह नहीं खोलूँगा। ऐसी स्थितिका मुकाबला करनेके लिए उन्होंने सुन्दर भाषण तैयार किया था जिसे टाइप कराकर वे अपने साथ लेते आये थे।

—

१५

सभा-भवनके भीतर उसी तरहकी उत्तेजना और जोश-खरोश था जो ऐसे समयोंपर हर जगह देखा जाता है। सभा-भवनके कण-कणमें उसका प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा था। वहाँ उपस्थित सदस्योंके प्रत्येक इंगित, चेष्टा तथा कानाफूसीमें वह प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था। प्रत्येक व्यक्ति यह समझ रहा था कि विश्वासघाती सदस्योंकी करनीका फल आज प्रत्यक्ष हो जायगा। आयर्लैंडके ऐतिहासिक पार्लमेण्ट-भवनपर सदाके लिए ताला चढ़ जायगा।

इसी समय स्पीकरने सभा-भवनमें प्रवेश किया। उनके आगमनकी सूचनाके साथ ही चारो ओर शान्ति छा गयी। इसके बाद देश भक्त मेम्बरोंने जयध्वनि की क्योंकि फोस्टरसे बढ़कर आयरिश पार्लमेण्टका दूसरा कोई पक्षपाती नहीं था।

कुछ सदस्य बहुत देर करके आये और बिना संकोच उस तरफ आकर बैठे जिधर सरकारी अधिकारी बैठे थे। सबसे अन्तमें जो सदस्य आया वह बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ा। जब वह टेबुलके पास पहुँचा तो सहसा रुक गया और अधिकारियोंकी तरफ साभिप्राय दृष्टि डाली। अण्डर-सेक्रेटरी कुक इस समय कासिलरेसे कानाफूसी करनेमें व्यस्त थे। इस सफेद बालवाले बूढ़े सदस्यको खड़ा होकर अपनी ओर ताकते देख कुकने अपनी जेबसे सफेद रूमाल निकाला और लापरवाही-के साथ नीचे गिरा दिया। इसके साथ ही वह बूढ़ा बिना किसी झिझक या संकोचके चुपचाप आगे बढ़ा और अधिकारियोंके साथ आकर बैठ गया।

देश-सेवकोंने ताना देना शुरू किया और घृणासे हँसने लगे।

क्योंकि इस तरह प्रकारान्तरसे सौदा पटानेका मतलब सब समझ रहे थे।

बूढ़ा सर जोसुवा रोलैण्डका सौदा तबतक नहीं पटा था। उनकी माँग स्वीकृत नहीं हुई थी। इसलिए भवनमें प्रवेश करनेके बाद ही कुकपर अभिप्राय-भरी दृष्टि डाली। सफेद रूमाल जमीनपर गिराकर कुकने उन्हें बतला दिया कि आपकी माँग उनकी सरकारको मंजूर है और इतना आश्वासन पाते ही वे निःसंकोच देशके साथ विश्वासघात कर अधिकारियोंसे जा मिले।

इसके बाद बहस आरम्भ हुई। साथ ही बौछारका बाजार भी गर्म हो गया। ये छीटें साधारण छीटें नहीं थीं। उस समय जो कुछ जबानी हो रहा था, सबेरे वह सक्रिय रूप धारण कर तलवारों और पिस्तौलोंके बीच दिखाई देनेवाला था।

ग्रैटनका भाषण बड़ा ही मार्मिक था। उनकी वाणीमें ऐसी करुणा भरी थी मानो पुत्रकी मृत्युपर शोकार्त पिता करुण-विलाप कर रहा हो। लेकिन प्लंकेटके भाषणने देशभक्तोंके हृदयमें जोश भर दिया। उनका हृदय चञ्चल हो उठा। उनकी सोती आत्मा सहसा जाग उठी और वे युद्धके लिए बेचैन हो उठे।

प्लंकेट आकार और आकृति दोनोंमें सभी सदस्योंसे तगड़ा था। जब वह बोलने उठा तो सारे भवनपर उनका रोब छा गया। करतल ध्वनिसे सारा भवन गूँज उठा। पाँच मिनटतक प्लंकेटको चुपचाप खड़ा रहना पड़ा। उसने बड़े धीमे स्वरमें अपना भाषण आरम्भ किया, लेकिन ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता गया उसकी वाणी तेज होती गयी। अनुभवी वक्ताने शब्दोंका चयन इस तरह किया था कि ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता था घृणाके भाव गम्भीर होते जाते थे। सभा-भवनपर उसका रोब

छा गया। चारों ओर सन्नाटा विराज रहा था। एक तरफके लोग जहाँ सहानुभूति और दर्दसे चुप थे वहाँ दूसरी तरफके लोग शर्मसे चुप थे। उसने निर्भय होकर गरजते हुए कहा :—
"मेरा कर्तव्य स्पष्ट है और मैं यहाँ भी उसे स्पष्ट शब्दोंमें व्यक्त कर देना चाहता हूँ। यदि ब्रिटिश अधिकारियोंने हमारी युक्ति-युक्त और न्यायसङ्गत प्रार्थनाओंपर ध्यान नहीं दिया और अपनी अभिलाषाको ही पूरा करना चाहा तो मैं क्षणभरके लिए भी विचार नहीं करूँगा और ब्रिटिश सम्बन्धको ठुकराकर देशकी आज़ादीको गले लगा लूँगा। आयरिश पार्लमेण्टकी आवश्यकता और उपयोगिताको मैं भलीभाँति समझता हूँ और मुझे पूरी आशा है कि इसका मूलोच्छेद कर लोग उस स्थितिको उत्पन्न नहीं होने देंगे जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है। लेकिन यदि वह स्थिति उत्पन्न हुई तो उसकी सारी जिम्मेदारी उन लोगोंपर होगी जो इस पापकर्ममें सहायक हो रहे हैं।"

एक बार फिर करतल-ध्वनिसे सभा-भवन गूँज उठा। प्लंकेटका लम्बा-चौड़ा शरीर भावावेशसे फूलता हुआ प्रतीत हुआ।

क्षणभर रुककर उसने फिर बोलना आरम्भ किया। सभा-भवनमें पुनः अटल शान्ति छा गयी। भाषणके अन्तिम अंशमे उसने अपना हृदय निकालकर रख दिया। मन्त्रि-मण्डलको चेतावनी देते हुए उसने गम्भीर वाणीमें कहा :—

"यदि हमारी इस पुनीत पार्लमेण्टके अन्त किये जानेका घृणित काम किया गया तो निश्चय जानिये कि इसका क्रिया-त्मक विरोध करनेके लिए हज़ारों आयरिश युवक इसके इर्द-गिर्द जमा हो जायँगे। मैं आजीवन इसका विरोध करूँगा। अपने रक्तकी एक-एक बूँद इसके लिए बहादूँगा। इतना ही

नही, मैं अपने बालबच्चोको मातृभूमिकी वेदीपर लाकर खड़ा कर दूँगा और उनसे शपथपूर्वक प्रतिज्ञा कराऊँगा कि जिन्होंने तुम्हारी प्यारी जननी जन्म-भूमिका इस तरह सर्वनाश किया है, उनके साथ अनन्त कालतक युद्ध करते रहना।"

इसके बाद प्लंकेट अपनी जगहपर बैठ गया। उसका दम फूल रहा था। होंठोंपर पपड़े पड़ गये थे। एक बार फिर सुदीर्घ करतल-ध्वनिसे आकाश गूँज उठा।

प्लंकेटके इस जोशपूर्ण भाषणका एमेटके हृदयपर गहरा प्रभाव पड़ा। आत्मविस्मृतकी तरह वह झूमने लगा। उसने मूरसे धीरेसे कहा :—"आज मैं भी यही प्रतिज्ञा करता हूँ।"

जीवनकी अन्तिम घड़ीतक वह अपनी प्रतिज्ञासे विचलित नही हुआ। वीरताके साथ सङ्कटोका सामना करता हुआ उसने उसे निबाहा।

१६

इस प्रतिज्ञाके साथ-ही-साथ उसमें नयी स्फूर्ति आ गयी। उसका अङ्ग-अङ्ग फड़कने लगा। देशभक्तिकी उमङ्गें उसके हृयमें उठने लगी। इस समय भी वह अपनी प्रेयसीको भूल नही गया था। वह सोचने लगा :—मैं देशके युवकोंको संघटित कर आयलैंडकी स्वतन्त्र सेना संघटित करूँगा। इसका सञ्चालन कर मैं मातृभूमिका उद्धार करूँगा। सारे देशमे मेरा यश और कीर्ति फैलेगी। इसे देख-सुनकर सराह गर्वसे फूली न समायेगी।

संयोगकी बात, इसी समय फ्रांससे उसके बड़े भाईका पत्र उसे मिला। उस पत्रमें उसने लिखा था :—फर्स्ट कांसुल

आकर्षक, रहस्यमय पर साथ ही भयानक व्यक्ति प्रतीत होते हैं। वे हमलोगोंको आशा तो बँधाते हैं लेकिन दूसरोंके ही द्वारा। न तो वे हमलोगोंसे मुलाकात ही करते हैं और न कोई पक्का वादा ही करते हैं। कभी इस दूत और कभी उस दूतके द्वारा सम्वादमात्र भिजवाया करते हैं। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि अपना मकसद साधनेके लिए वे हमलोगोंको बातोंमें फँसाकर रखना चाहते हैं।"

"आर्थर ओगानर फर्स्ट कांसुलका विश्वासपात्र बन गया है। इससे वह अपनेको बहुत बड़ा आदमी समझने लगा है। वह मुझसे कहता है कि फर्स्ट कांसुलकी देखरेखमें हमलोग यहाँ और आयर्लैंडमें भी युद्ध छेड़ दें। लेकिन मैं आयर्लैंडके लिए फ्रेंच डिक्टेटरकी बात कभी स्वीकर नहीं करूँगा और न मैं ओगानरके साथ काम करनेके लिए ही तैयार होऊँगा क्योंकि मैं उसका विश्वास नही करता।"

"मैं यहाँ एकदम अकेला हूँ। अपने देशसे दूर अपने सगे-सम्बन्धियो तथा प्रेमियोंसे दूर। लेकिन इस अकेलेपनको मैंने इससे पहले कभी भी महसूस नही किया। आज मैं इस बुरी तरह महसूस कर रहा हू क्योंकि मेरे पास ऐसा कोई भी आदमी नहीं है जिससे मैं सलाह-मशविरा करूँ।"

एमेटको इस पत्रमें प्रकारान्तरसे प्रेरणका आभास मिला। उसने समझा कि उसके भाईने स्पष्ट शब्दोंमें नहीं लिखा है लेकिन वे चाहते हैं कि मैं फ्रान्स उनके पास पहुँच जाऊँ। उसका हृदय फ्रान्स जानेके लिए बेचैन हो उठा। उसने एक विश्वासपात्र आदमीके हाथ अपने भाईके पास सम्वाद भेज दिया कि अमुक तिथिको वह फ्रान्स पहुँच जायगा।

अवसर भी अच्छा हाथ लग गया। मछली मारनेवाली एक नाव जो बहुत दिनोंसे इस तरहके देशभक्तोंको चुपचाप आयर्लैण्डसे फ्रान्स और फ्रान्ससे आयर्लैण्ड चुपचाप पहुँचाती रही है, अगले सप्ताह कैलेके लिए रवाना होनेवाली थी।

एमेटने उसके सामने अपना प्रस्ताव रखा। वह तुरत राजी हो गया। लेकिन जब एमेटने किरायेकी बात छेड़ी तो वह झुँझलाकर बोला—"क्या आप समझते हैं कि स्वदेशके लिए कुछ करनेका अधिकार आपके और आपके वंशके सिवा अन्य किसीको नहीं है? यदि आपका इतना आग्रह है तो आप थोड़ा बहुत काम कर सकते हैं। यह दूसरी बात है। लेकिन यदि आपने रास्तेमें रुपये-पैसेकी चर्चा की तो मैं आपको वहीं समुद्रमें ढकेल दूँगा और आपको तैरकर ही किनारे लगना होगा। यदि आपको मेरी शर्तें स्वीकार नहीं हैं तो आपका मुझसे बातें करना व्यर्थ है।"

एमेटने उसकी शर्तें स्वीकार कर ली। उस दिनसे पाँच दिन बाद वह नाव किसी नियत स्थानसे रवाना होनेवाली थी। डबलिनसे रातभरका रास्ता था उस स्थानका। एमेटको सिर्फ पाँच दिन आयर्लैण्डकी भूमिपर रहना था। उसे बड़ी इच्छा हुई कि प्रस्थान करनेके पहले वह एक बार सराहसे मिल ले ताकि प्रवासमें उसकी मधुर स्मृति उसमें उत्साह भरती रहे; लेकिन उसे साहस नहीं हुआ।

कामन्स सभाकी उस दिनकी बैठकके तीन-चार दिन बाद रास्तेमें करेनसे भेंट हो गयी थी। बातचीतके सिलसिलेमें करेनने एमेटसे यह कहला लिया था कि उसने अपना भाग्यसूत्र उन लोगोंके साथ जोड़ लिया है जो इस गठबन्धनका विरोध शस्त्र-द्वारा करना चाहते हैं। यह बात जानकर करेनके चेहरेका भाव

बदल गया था। लेकिन इस भावमें घृणा, द्वेष या विलगावका कोई चिह्न नहीं था। उससे सिर्फ यही व्यक्त हुआ कि करेन एमेटसे दूर रहना चाहता है।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जिस तरह लोग उस आदमीसे दूर रहना चाहते हैं जो चेचकके रोगीकी सुश्रूषा करता हो, उसी तरह करेन एमेटसे दूर रहना चाहता है क्योंकि उन दिनों विद्रोहकी हवा जोरोंमें बह रही थी और उसके सङ्कटसे छोटा-बड़ा कोई भी अपनेको बरी नहीं समझता था।

सदाकी भाँति करेनने अपने घर चलनेके लिए उससे आग्रह भी नहीं किया। बल्कि उसने मुँह बनाकर कहा था :—देश-भक्तिका राग अलापना बहुत ही अच्छा लगता है लेकिन उसमें हाथ डालनेपर यही देखा गया है कि लाभ कुछ भी नहीं होता, हानि बहुत ज्यादा होती है। देशके लहलहाते पौधे असमयमें ही कालके गालमें चले जाते हैं। शत्रुका काम सहजमें बन जाता है। तुम्हारे इस त्यागसे किसीको कोई लाभ नहीं होगा पर तुम्हारी अपार क्षति होगी।

करेन यह उपदेश-भरी बातें कह तो गया लेकिन उसका हृदय उसे ही भर्त्सना दे रहा था। उसे अपनी जवानीकी बातें याद हो आयी जब वह देश-भक्तिके पीछे मतवाला हो रहा था। इससे वह और भी उग्र होकर बोला :—मानो कह रहा हो कि "मैंने तुम्हें बचानेका भरसक प्रयत्न किया लेकिन यदि आगके साथ खेलना ही चाहते हो तो तुम खुशीसे खेल सकते हो लेकिन मुझसे दूर रहकर ही खेलो।"

इस घटनाके बाद करेनके घरपर जाकर सराहसे मिलनेका प्रयास व्यर्थ था; तो भी उसका हृदय कोई-न-कोई बहाना ढूँढ़ निकालनेके यत्नमें था। दो बार वह द्वारतक आया और लौट

गया। उसका आगे बढ़नेका साहस नही हुआ। उसके हृदयमें यह बात बार-बार उठती थी कि यदि करेनको मेरे प्रेमप्रसङ्गकी बात मालूम हो जायगी तो वह क्रोधसे आग-बगूला हो जायगा क्योंकि करेन अपनी पुत्रीको उसके निकट नहीं देखना चाहता था जिसके गर्दनकी प्रतीक्षा फाँसीकी रस्सी कर रही हो।

साथ ही एमेट अपनेको प्रेमपात्र समझता भी नही था। वह सराहसे प्रेम जरूर करना चाहता था लेकिन वह उसका प्रतिदान नहीं चाहता था। वह यह भी नही चाहता था कि उसके प्रणयकी बात सराहपर प्रकट हो जाय जबतक कि......। विजय, यश, कीर्ति और नियोगकी कल्पना सहसा उसके मनमे उठी और फिर गायब हो गयी। लेकिन स्वदेशसे विदा होनेसे पहले वह सराहको एक बार देखभर लेना चाहता था। इसमें कोई हानि नही है। यह खयाल मनमे आते ही उसके पाँव आगे चल पड़े और वह करेनके बँगलेपर पहुँच गया।

फाटकपर ही धनी डेबलिनसे भेंट हो गयी। उसने हँसकर कहा :—मालिक तो घरपर नही है पर मिस सराह है। यदि आप उनसे मिलना चाहते हैं तो अन्दर चलें।

लेकिन उस समय भी जब उसका रास्ता हर तरहसे साफ था, उसके हृदयने उसका साथ नही दिया। कायरोंकी भाँति शर्मसे सिर नीचा किये वह लौट पड़ा।

१८

जहाँ साहसने साथ नहीं दिया वहाँ अवसरने सहायता प्रदान की। जिस दिन वह फ्रांसके लिए प्रस्थान करनेवाला था उसी दिन उसके भाग्यने उसकी सहायता की।

डाडर नदीके किनारे जंगलोंके बीचसे होकर छायादार सड़क गयी थी। वह बहुधा उसी सड़कपर घूमने जाया करता था। उस दिन भी तीसरे पहर वह अनायास उधर ही चल पड़ा। स्वदेश छोड़नेके पहले वह उन स्थानोंका अन्तिम दर्शन कर लेना चाहता था। स्थान शहरसे दूर नहीं था तो भी निर्जन और सुनसान था।

अपने विचारोंमें निमग्न वह चुपचाप आगे बढ़ा चला जा रहा था। उससे पहले उसने समुद्र-यात्रा नहीं की थी। कल वह मछुएकी एक छोटी नावमें समुद्रके बीच होगा। नाव डूब सकती है, वह पकड़ा भी जा सकता है। वहाँ पहुँचकर उस समयके संसारके सबसे बड़े आदमीसे मिलनेकी आशा, एक बड़ी सेना लेकर देशोद्धारकी आकांक्षाने उसके हृदयको चंचल और शरीरके रक्तको गर्म कर दिया।

उस समय उसे कोई दूसरी चिन्ता नहीं थी। सोचनेके लिए कोई दूसरी बात नहीं थी। इसी विचारधाराके साथ बहता हुआ वह आगे बढ़ता चला जा रहा था। बीच-बीचमें सराहकी याद उसे विचलित कर देती थी।

लेकिन उस प्रदेशके सुन्दर और मनोरम दृश्यने उसके हृदयको अपनी ओर इस तरह खींचा कि अन्य सारी बातें वह भूल गया। पेड़ोंके झुरमुटसे नीला आकाश अनुपम सौन्दर्य-शाली प्रतीत होता था। नदीकी मधुर कलकल ध्वनि चित्तको बरबस अपनी ओर खींच रही थी। पेड़ोंकी टहनियोंपर बैठे पक्षी प्रणयका अभिनय कर रहे थे। कहीं सुदूरसे कोयलका 'कू-कू' हृदयमें उत्कण्ठा पैदा कर रहा था। उसका हृदय भर आया। सभी क्रूर विचार बर्फकी भाँति पिघलकर बह गये। प्रेमकी मधुर अजस्र धारा उसके हृदयमें बहने लगी।

वह एक पेड़के नीचे लेट गया और हृदयकी गति जिस ओरको थी, उसी स्वप्नलोकमें वह विचरण करने लगा।

सराहको देखने, उसकी मधुर बातें सुननेके लिए उसका चित्त चंचल हो उठा, हृदय व्यथित हो उठा। वह उठ बैठा। सूर्यकी तेज किरणें पानीपर पड़ रही थीं। उसकी चमकसे उसकी आँखे चौंधिया गयी। आँखें फेरकर उसने सामनेकी ओर देखा तो उसके आश्चर्यकी सीमा न रही। वह चौंककर उठ खड़ा हुआ। उसके मुँहसे हलकी चीत्कार निकल पड़ी। उसने देखा कि पेड़ोंके झुरमुटके बीचसे सराह उसीकी तरफ चली आ रही है।

यह अचानक यहाँ कैसे पहुँच गयी। यों ही या मेरे प्रेमसे आकृष्ट होकर?

एमेटके वापस आ जानेपर अनीने सराहसे उसके आने और उदास मन लौट जानेकी बात कह दी थी। सराहको इससे बड़ी वेदना हुई। उसने अपने मनमें कहा :—"क्या यह प्रणय-जनित व्यथा तो नहीं है?" इसका समुचित और निर्दिष्ट उत्तर पानेके लिए वह एकान्त स्थान चाहती थी। इसलिए वह घरसे निकल पड़ी और उधर ही चली आयी।

पहले तो एमेटको विश्वास नहीं हुआ कि वह सराह है; उसने समझा कि वह स्वप्न देख रहा है और स्वप्नलोकमें सराह-की परछाईंका दर्शन कर रहा है जो उसके मनकी कल्पनासे प्रादुर्भूत हुई है। लेकिन यह भाव देरतक नहीं रह सका। उसे वास्तविकता का तुरन्त ज्ञान हो गया और उससे मिलनेके लिए वह दौड़ पड़ा।

क्या सराहने उसे देख लिया? कौन कह सकता है! क्योंकि वह इस तरह धीरे-धीरे आ रही थी मानो उसे उसकी

मौजूदगीका कोई ज्ञान नही था। जब दोनों एक दूसरेसे दस कदमके फासलेपर रह गये तब सराहकी निगाह उसपर पड़ी। वह विस्मयसे चौंक उठी।

एमेटकी आँखोंमें उल्लास भरा था। उसे देखकर सराहका रोम-रोम खिल उठा। उसने मुस्कुराते हुए अपना हाथ एमेटके हाथमें रख दिया। उसकी आँखें चमकने लगी। उसने हँसते हुए कहा :—अबतक मुझे यही खयाल था कि यहाँ मै ही अकेली घूमने आया करती हूँ।

एमेट—मुझे यहाँ देखकर आप दुखी नहीं होगी!

दोनों टहलते हुए निर्जन और एकान्त स्थानपर पहुँच चुके थे।

सराहने हँसकर कहा :—हर्गिज़ नही! मैं अपनी सम्पत्तिको अपने मित्रोंमें बाँटकर खाना चाहती हूँ। यह स्थान मुझे बहुत ज्यादा पसन्द है। टामी मूरने इसकी प्रशंसामें सुन्दर कविता बनाकर मुझे दी है।

जिस तरह हवा आगकी लपटको प्रज्वलित करती है उसी तरह प्रणय डाहको प्रज्वलित करता है। टामी मूरका नाम सुनते ही एमेटके हृदयमे यह भाव जग उठा कि न-जाने कितने दिनोंतक इसके साथ इस मनोरम स्थानमें भ्रमण करनेका आनन्द उसने लूटा होगा। इस खयालके आते ही उसका हृदय व्यथित हो उठा।

सराहसे उसका यह भाव छिपा नही रहा। उसकी व्यथा-पर शीतल लेप देनेकी गरजसे उसने कहा :—टामी मूरके गीत उतने ही सुन्दर लगते हैं जितनी पेड़की टहनियोपर चिड़िया। वह चहचहाती चिड़िया है जो अपनेको बाज या गीध समझती है। क्या उसने तुम्हें युद्धके अपने वे गीत सुनाये हैं?

टामी मूरके वे गीत याद आ गये। उसने मुस्कुराते हुए कहा :—टामी उदार, सहृदय और फौलादकी तरह सच्चा है।

उसके उत्तरमें सराहने उसी तरह हँसकर कहा :—वह उदार और सहृदय अवश्य है; वह फौलादकी तरह सच्चा और चमकीला भी है लेकिन फौलादकी दृढ़ता उसमें नहीं है। वह वेणुके लिए ही बना है, तलवारके लिए नहीं।

एमेट—आप उसके साथ अन्याय कर रही हैं। उसमें बहादुरीकी कमी नहीं है।

सराह—मैं यह भी जानती हूँ। वे अच्छी सङ्गतिमें पड़कर बहादुर भी बन सकते हैं। लेकिन उनमें वह तत्व नहीं है जिसकी प्रेरणासे मनुष्य खतरेमें कूद पड़ता है और उसके साथ बह जाता है। यदि उस दिन वे आपके स्थानपर सदुकमें होते तो बिगड़े हुए मेरे घोड़े मुझे यमके घर पहुँचा आये होते और टामी मेरी यादमें कविता लिखकर आँसू बहानेके सिवा कुछ न कर सकते।

उस घटनाकी यादसे उसके कपोल लाल हो गये। उसकी आँखें एमेटके प्रति कृतज्ञतासे भर गयी। अपने अनुपस्थित मित्रके प्रति उदार होना उसने अपना परम कर्तव्य समझा। बोला :—आप गलतीपर हैं। मैंने जो कुछ किया, वह भी वही करता। उस स्थितिमें कोई भी मनुष्य वही करता।

सराह—जबतक वे अपनेको उसके लिए तैयार करते तबतक सब कुछ खतम हो जाता। वे कर्मठ पुरुष नहीं है, बल्कि सच्चे कवि हैं। प्रकृति और प्रेमके कवि हैं उनकी मधुर वाणी सुनकर लोग पुलकित हो उठेंगे।

'प्रेम' शब्द हठात् उसके मुँहसे निकल पड़ा। उसने देखा

कि इस शब्दके सुनते ही एमेटका चेहरा खिल उठा है। शर्मसे उसका चेहरा लाल हो गया।

एमेटने पूछा :—तब तो आप कविसे सिपाहीको ज्यादा पसन्द करती होंगी।

सराह—यदि सिपाहीका उद्देश्य अच्छा है। यदि वह देश-भक्त है। यदि वह अपना जीवन और सर्वस्व स्वदेशकी बलि-वेदीपर अर्पण करनेके लिए सन्नद्ध रहता है।

जोश और उत्साहमें उसने इस बार भी खतरनाक रास्तेपर कदम रख दिया। उसकी ये बातें सुनकर एमेटको जो प्रसन्नता हुई थी उससे उसे सचेत हो जाना चाहिए था। लेकिन जोशके प्रवाहने उसे अपनी ओर खींच लिया। उसने कहा :—दूसरोंके लिए अपना सर्वस्व निछावर कर देना, जालिमोंको दबानेका यत्न करना, पीड़ितोंको उठाना विपद्ग्रस्तोंको सान्त्वना देना, उनके आँसुओंको पोंछनेका यत्न करना, अपने कृत्योंको कृतज्ञ राष्ट्रकी आँखोंमें पढ़ना—यही सच्चा जीवन है। इसके लिए जो प्राण गँवाता है वही सच्चा वीर है। यदि ईश्वरने मुझे भी पुरुष बनाया होता!

एमेट—यह बात मत कहो। देशभक्तिकी दीप-शिखा प्रज्व-लित करने और उसे पुरस्कृत करनेमें ही तुष्टिलाभ करो। तुम्हारी वाणी, तुम्हारी चमकीली आँखें, कायरको भी वीर और देशद्रोहीको भी देशभक्त बना देंगी। सराह! तुम्हारा प्रेम प्राप्त करनेके लिए मैं सबकुछ कर सकता हूँ। क्योंकि मैं तुम्हें हृदयसे प्यार करता हूँ।

इतना कहकर वह यकायक रुक गया मानो सराहकी भाव-भङ्गी और मुखाकृतिने उसे रोक दिया हो।

उसने धीरेसे कहा :—मुझे क्षमा करो। मेरी इच्छाके विरुद्ध बलात् ये शब्द मुँहसे बाहर निकल पड़े। मैं दोबारा तुम्हें रुष्ट नहीं करूँगा।

उसने दृढ़ता पर मुलायमियतसे कहा :—मै तुम्हारी भूलको भूल जाऊँगी। मैं समझूँगी कि तुम्हारे मुँहसे इस तरह शब्द निकले ही नहीं। जब मातृभूमिपर इस तरह विपत्तिके बादल मँडरा रहे है, जब हमारा प्यारा स्वदेश इस तरह हीन दीन हो रहा है तब ऐसा कौन युवक होगा, जिसकी नसोंमे स्वदेश-का लेशमात्र भी खून शेष होगा, जो प्रणयका मधुर राग अलापेगा।

इसका उत्तर देते एमेटको क्षणभर भी देर नही लगी। उसने कहा :—मेरा भी वही विचार है। मै अपना प्रेम गुप्त ही रखना चाहता था यद्यपि उसपर विजय पाना मेरे लिए सम्भव नही था। लेकिन आपको देखकर तथा आपकी बातें सुनकर मेरा धैर्य जाता रहा। किसी भी हालतमे दोस्तकी तरह तो हमलोग एक दूसरेसे विदा हो सकते है। अच्छा नमस्कार!

सराहने नमस्कारका उत्तर नमस्कारसे तो दिया लेकिन किसी अज्ञात भय और चिन्तासे उसका हृदय व्यथित हो उठा।

एमेट—मै कल फ्रान्सके लिए प्रस्थान कर रहा हूँ। वहाँसे मैं शीघ्र लौटनेकी आशा करता हूँ। लेकिन अकेले नही। क्रान्तिके लिए उपयुक्त अवसर आ गया है। फ्रान्सने सेना और हथियार देनेकी आशा बँधाई है। जो स्वदेश हम दोनोंको इतना प्यारा है उसे स्वतन्त्र करनेका मै प्रयत्न करूँगा अथवा उसी अध्यवसायमे मर मिटूँगा।

लेकिन उस कातर बालिकाने उसके उत्साह-भरे इन शब्दोंका उत्तर भाव-भङ्गी या वाणी किसीसे भी नहीं दिया।

उसका जोश ठण्डा पड़ गया। उसका चेहरा स्याह हो गया। वह काँप उठी। यदि एमेटने समयपर उसे पकड़ न लिया होता तो वह लड़खड़ाकर गिर पड़ती।

एमेटने उसे सँभालकर घासपर लेटा दिया। क्षणभर दोनों चुप रहे। अन्तमें उसने कहा :—तुम मत जाओ। कोई लाभ नहीं। तुम व्यर्थ इतने बड़े सङ्कटमें अपनेको क्यों डाल रहे हो। मौतको निमन्त्रण देना ठीक नहीं।

एमेट व्याकुल हो उठा। उसके हृदयका भाव जाननेके लिए उसने अपने चेहरेकी ओर देखा लेकिन उसने मुँह फेर लिया था। बोला :—यह तुम क्या कह रही हो! अभी तो तुम मुझे स्वदेशके लिए लड़नेकी प्रेरणा दे रही थी, उसकी रक्षाके लिए अपना सर्वस्व होम कर देनेकी मन्त्रणा दे रही थीं।

उसने गिड़गिड़ाकर कहा :—इस तरहकी भयानक बातें मैं तुमसे नहीं सुनना चाहती।

एमेट—यदि तुम पुरुष होती तो तुम खुद उसके लिए लड़ना चाहती।

सराह—वह दूसरी बात है। तुम जानते हो कि मैं पुरुष नहीं हूँ बल्कि एक गँवार लड़की। मुझे जोश आ गया था। उसी जोशके नशेमें तुम्हें वह सब बात कह गयी। लेकिन मेरा मंशा यह नहीं था कि तुम सचमुच खतरेमें कूद पड़ो। जो बात असम्भव है उसके पीछे पड़कर तुम नाहक अपने प्राणोंको सङ्कटमें न डालो।

एमेट—यदि ईश्वरकी कृपा हुई तो हमलोग अवश्य विजयी होंगे। सत्यकी सदा जीत होती है।

सराह—असम्भव है। पिताजी कहते हैं कि इङ्गलैण्डकी

शक्ति दुर्धट है। उसका मुकाबला करना [illegible] है मुझे वचन दो कि तुम इस पागलपनमें हाथ नहीं डालोगे।

क्षणभरमें इस विचित्र परिवर्तनका कारण एमेटको समझमें नहीं आया। उसने धीरेसे कहा :—ज्यादा-से-ज्यादा यही होगा कि औरोंके साथ मेरे भी प्राण जायँगे। तुमने अभी कहा है कि प्रत्येक स्वदेशाभिमानीका यह कर्तव्य है।

सराहने भावावेशमे कहा—पर तुम्हारा नही। मैंने तुम्हारे बारेमें कुछ नहीं कहा।

एमेट—तब क्या स्वदेशके प्रति मेरा कोई कर्तव्य नही है? दूसरोका है और मेरा नही!

सराह—क्योंकि! क्योकि ओह! तुम वह बात मुझसे कहलाना ही चाहते हो! क्योंकि मैं तुम्हे प्यार करती हूँ। मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगी।

विस्मय और आश्चर्यसे एमेट क्षणभर स्तब्ध रहा। इसके बाद आनन्दकी तरंगोमें डूब गया। उसने उसे अपनी ओर खींच लिया। हृदयसे लगाकर चुम्बन किया।

सराह—यदि युद्ध करना आवश्यक ही है तो दूसरोंको यह काम करने दो। तुम इसमें हाथ न डालो। मेरे लिए तुम अपनेको इससे दूर रखो।

इतना कहते-कहते उसका चेहरा लाल हो गया। अधीर और कातर शब्दोंमें उसने फिर कहा :—यदि तुम्हें मेरा जरा भी ख्याल है तो मुझे वचन दो।

एमेट—नहीं प्रिये! यह असम्भव है।

सराह—तब तुम मुझे प्यार नही करते।

क्षणभर रुककर एमेटने कहा :—इस जीवनसे भी बढ़कर तुम मुझे प्यारी हो। तुम्हारे प्रेमके बिना मेरा जीवन निस्सार

है। उसके बिना मैं क्षणभर भी जिन्दा नहीं रह सकूँगा। लेकिन यदि तुम्हारा ख्याल कर ही मैं स्वदेश तथा अपने साथियोंसे विमुख हो जाऊँ तो तुम्हीं मुझसे घृणा करने लगोगी।

सराह—तुम्हारा जीवन अपना है। इसे उत्सर्ग करनेके लिए तुमपर कोई बलप्रयोग नहीं कर सकता।

एमेट—यह बात सर्वथा सच नहीं है। इसे मैं भी जानता हूँ और तुम भी जानती हो। इस युगमें कोई भा सच्चा आयर्लैण्ड-निवासी यह नहीं कह सकता कि यह जीवन उसका अपना है और इच्छानुसार वह इसका उपयोग कर सकता है। मुझपर तो और भी अधिक जिम्मेदारी है। मैंने अपने मित्रोंके सामने शपथपूर्वक देश-सेवाका व्रत लिया है। यदि मैं कदम पीछे रखूँ तो उनके तथा तुम्हारी नजरोंमे कायर और देशद्रोही कहलाऊँगा।

उसने धीरेसे कहा:—"मेरी नजरोंमें कभी नहीं।"—उसका अवरोध अब शान्तिका रूप धारण कर रहा था। उसने देखा कि वह उसे किसी तरह विचलित नहीं कर सकती। उसकी इस दृढ़ताने सराहके अनुरागको और भी बढ़ा दिया।

एमेट—प्रियतमे! मुझे रोकनेकी चेष्टा करके तुम मेरे साथ अन्याय करोगी। प्रेम और शर्म—दोनों एक साथ नहीं रह सकते। यदि मैं तुम्हारी कातर-वाणी सुनकर विचलित हो जाऊँगा तो मैं तुम्हारे प्रेमके योग्य कभी नहीं रहूँगा। तुम्हें भयसे इस प्रकार कातर नहीं होना चाहिए। तुमने मुझमें नवजीवनका संचार कर दिया है। तुमसे मुझे प्रेरणा मिली है। मैं अपनेमें असीम शान्तिका अनुभव कर रहा हूँ। मुझे पूरी आशा है कि मैं अपने अध्यवसायमें सफल होऊँगा।

सराह—मेरे लिए ही सही; सदा सतर्क और सावधान रहना।

एमेट—इस अमूल्य निधिके लिए कौन जीना नहीं चाहेगा। मै तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मै व्यर्थ अपने जीवनको कभी भी खतरेमें नही डालूँगा। सावधानीके मामलेमें मैं पूरा कायर बन जाऊँगा।

इसके बाद उसने किसी तरहका विरोध नही किया। सच्चे साथी की भाँति उसके साथ अनेक तरहकी बातें करने लगी।

प्रायः दो घंटेतक इसी तरह आनन्दमें समय काटकर एक दूसरेसे विदा हुए।

उसी रातको रावर्ट एमेट फ्रांसके लिए रवाना हो गया और सराह उसकी यादमें अपने पलंगको तकिया अपने आँसुओसे भिगोने लगी।

१८

मछुएकी उस नावमें सवार होकर एमेट सही-सलामत कैले पहुँच गया। उसका भाई उसे लेनेके लिए वहाँ पहलेसे ही मौजूद था। एक दूसरेको देखते ही दोनो गलेसे लिपट गये। अपने छोटे भाईसे मिलकर टामस एमेटको बड़ी प्रसन्नता हुई।

रावर्टका सामान नौकरके हाथ रवाना कर दोनों भाई पैदल ही डेरेकी तरफ चले। उनकी बगलमे एक फ्रांसीसी अफसर भी साथ-ही-साथ चल रहा था जो अबतक इनके सम्पर्कमें नही आया था।

रावर्टने उस अफसरसे परिचय करा देनेका आग्रह अब-तक अपने भाईसे नहीं किया लेकिन वह अफसर रह-रहकर रावर्ट एमेटकी तरफ इस तरह ताकता था मानो वह यह कह रहा हो कि तुम मुझे पहचानते क्यों नही। सूरत रावर्टकी पहचानी हुई प्रतीत होती थी लेकिन उसकी याद काम नहीं कर रही थी। रावर्ट अपने मनमें कहता—"चेहरा कहता है कि मैं इसे पहचानता हूँ लेकिन दाहने गालपर घावका यह निशान और ये तनी मूँछें तो एकदम नयी हैं।" उसकी पोशाक उसे और परेशान कर रही थी क्योंकि किसी भी फ्रांसीसी अफ-सरसे उसकी जान-पहचान नहीं थी।

अन्तमें वह युवक अफसर अधीर हो उठा और टामस एमेटसे कहने लगा—क्या आप अपने भाईके साथ मेरा परि-चय नहीं करावेंगे ?

टामस एमेट—यह तो मैं भूल ही गया था। रावर्ट! ये मेरे मित्र एम० ले कैप्टेन टेरेंस ओगार्मन हैं। आप फर्स्ट कांसुलके अंगरक्षक हैं। मुझे खेद है कि लाख चेष्टा करनेपर भी मैं इनके नामका अनुवाद फ्रांसीसी भाषामें नहीं कर सका।

यह सुनते ही रावर्टकी स्मृति जाग उठी। उसने प्रसन्न होकर कहा :—कौन, टेरी ?

टेरी—हाँ, एमेट! वही तुम्हारा टेरी!

दोनों एक दूसरेसे लिपट गये।

टेरी—मेरी कथा बहुत लम्बी है। मैं इतमीनानसे तुम्हें सुनाऊँगा। इस समय केवल इतना ही जान लो कि मैं फ्रांसीसी हूँ।

रावर्ट—लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि आयरिश रक्त तुम्हारी नसोंमें सदा दौड़ता रहेगा।

टेरी—लेकिन मैं तो हर तरहसे फ्रांसीसी हो गया हूँ। फ्रेंच भाषा बोलता हूँ, फ्रेंच पोशाक पहनता हूँ, फ्रांसका दिया खाता हूँ और उसके साथ ही साथ......

शर्मसे उसकी जबान रुक गयी।

राबर्ट—तब क्या स्वदेशमें कुछ होनेपर तुम्हारी मददकी आशा न करूँ?

टेरी—शायद! पहले मौका तो आने दो भाई।

राबर्ट—मेरे कहनेका अभिप्राय यह है कि......

टामस—उसका अवसर जाता रहा। फ्रांसकी सहायता विना हमलोग कदम आगे नहीं बढ़ा सकते। नेपोलियन केवल इस शर्तपर मदद करनेको तैयार है कि ब्रिटेनके बदले हमलोग फ्रांसका जुआ अपने कन्धोंपर लाद लें।

लेकिन राबर्टने इस निराशाको अपने पास नहीं फटकने दिया। युवक हृदय अन्ततक आशासे लिपटा रहता है।

टामसकी बातें निराशापूर्ण थी। आशाकी क्षीण रेखा भी उसके हृदयमें नहीं रह गयी थी। वह निराश हो गये थे। गुप्त सन्देशवाहकोद्वारा वह फर्स्ट कांसुलके आयर्लैण्डपर चढ़ाईका सम्वाद उनके पास सदा भेजते रहते थे लेकिन तिथि सदा टालते जाते थे।

वह टामस एमेट और आर्थर ओकानरसे सदा प्रतिद्वन्द्विता करानेके लिए यत्नमे रहते थे। कभी वह टामसको आयर्लैण्डका प्रतिनिधि मानते और कभी आर्थर ओकानरको। मित्रोंने दोनोको मिल जानेकी सलाह दी। उन लोगोंका कहना था कि इससे काम आसान हो जायगा; लेकिन फर्स्ट कांसुल एक-न-एक वहाना निकालकर मिलनेसे सदा दूर रहते थे।

"मिलना-जुलना, पत्र-व्यवाहार, वातचीत सव कुछ डेपुटियों-

के ही जरिये होता है। नेपोलियन डेपुटियोंकी बातोंसे कभी मुकरते नहीं, लेकिन अन्तिम समय कोई-न-कोई ऐसी त्रुटि निकल ही आती है।जिससे आगेके लिए काम टाल दिया जाता है।"

"बीच-बीचमें यह भी अफवाह उड़ती रहती है कि नेपोलियन केवल हीलाहवाली देकर हमलोगोंको फँसाकर रखना चाहते हैं और वह ब्रिटेनके साथ बातचीत कर रहे हैं कि ब्रिटेनमें जो फ्रेंच विद्रोही हैं, उन्हें वह नेपोलियनके हवाले कर दें और फ्रांसमें जो आयरिश विद्रोही हैं, उन्हें वह ब्रिटेनके हवाले कर देंगे।

इन बातोंसे टामस एमेटका मन पक गया था और वह अधीर तथा निराश हो गये थे। लेकिन टेरीको इस तरहकी निराशाने नहीं घेर रखा था और राबर्टको भी उसने उसीसे प्रोत्साहित किया। टेरी केवल एक सौ गिनी लेकर इस अनजान देशमें आया था। लेकिन यहाँ आते ही उसका भाग्य चमक गया। सभी बात उसके अनुकूल हो गयी थीं। इसलिए उसका आशान्वित होना स्वाभाविक था। वह नेपोलियनका अङ्गरक्षक था, उसका कृपापात्र था। उसे पत्नीरूपमें एक फ्रेंच सुन्दरी मिल गयी थी। उसे अपनी अवस्थाका गौरव था और वह नेपोलियका अन्ध भक्त था।

यह सब होते हुए भी टेरीमें एक विशेषता थी जिसका उल्लेख राबर्टने प्रथम मिलनमें ही कर दिया था। सबकुछ होते हुए भी मातृभूमिका प्रेम उसके रग-रगमें समाया हुआ था। टामस एमेटके हृदयमें जो आशंका और निराशा थी, वह उसे छूतक नहीं गयी थी। उसे पूरा विश्वास था कि उपयुक्त अवसर आनेपर वह नेपोलियनकी सहायता अवश्य प्राप्त करेगा और

अंग्रेजोंको भेड़-बकरीकी तरह आयर्लैण्डसे निकाल बाहर करेगा। इसके बाद वे लोग सुखसे अपने देशमें रहेंगे। अपनी प्रेयसी जीनेटीसे वह आयर्लैण्डके सौन्दर्यका वर्णन बड़ी रोचक भाषामें करता था। जीनेटी इससे बहुत प्रसन्न होती थी और आयर्लैण्डके प्रति उसका अनुराग दिन-रात बढ़ता जाता था। उसीकी बदौलत तो फ्रांसमें टेरीका भाग्योदय हुआ था!

१६

एक दिन टेरी राबर्टको लेकर एक होटलमें गया और दोनो मित्र चाय पीने बैठ गये। राबर्ट एमेटने कहा—आज मैं तुम्हारी कहानी सुनना चाहता हूँ।

टेरी—तुम मुझपर बराबर हँसा करते थे कि मैं तलवारका खेल खेलनेमें व्यर्थ समय गँवाता हूँ। लेकिन इसीने मुझे इस जगह पहुँचाया है। उस दिन यदि तुमने बीचबिचाव न किया होता तो मैं उस शैतान नीलनका काम तमाम ही कर देता।

राबर्टने हँसकर कहा—उन बातोंको जाने दो, अपनी कहानी सुनाओ।

टेरी—अच्छी बात है। यहाँ मेरे पहुँचनेके एक महीना बादकी बात है। यहाँ मेरी तबीयत खूब लग गयी थी। विनोदके सारे साधन यहाँ मौजूद थे लेकिन तो भी मैंने किसी छोकरीसे तबतक बाततक नहीं की थी। एकदिन रातको मैं अकेले डेरेसे निकला और आयर्लैण्डकी चिन्ता करता हुआ एक तरफ निकल गया। चाँदनी रात थी। आकाश स्वच्छ और निर्मल था। मैं अपने ध्यानमें मग्न आगे बढ़ता जा रहा था कि

मुझे किसीके पैरोंकी आहट लगी। मेरा ध्यान भङ्ग हो गया। मैंने देखा कि मुझसे कुछ दूरीपर एक अतिशय कमनीय युवक फौजी लिबासमें चला जा रहा है। उसकी आकृति बहुत ही सुन्दर थी लेकिन उसके चेहरेसे परेशानी टपक रही थी। वह रह-रहकर इस तरह पीछेकी ओर देखता था मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो। दिलमें आया कि मैं उसके पीछे हो लूँ और यदि जरूरत पड़े तो इसकी सहायता करूँ। क्योंकि उसे देखते ही मेरा मन उसकी ओर खिंच गया था।

वह थोड़ी दूर भी नहीं गया था कि खतरेका सामना करना पड़ा। लेकिन यह खतरा पीछेसे नहीं आया— जैसी उसे आशंका थी, बल्कि सामनेसे। वह तेजीसे आगे बढ़ रहा था। आगेको मोड़से वह ज्यों ही घूमने लगा कि एक हट्टे-कट्टे जवानने म्यानसे तलवार निकालकर उसे ललकारा। मैं चुपचाप निकट चला गया ताकि दोनोंकी बातें सुन सकूँ, और जरूरत पड़े तो सहायता भी करूँ।

आगन्तुक नशेमें चूर था, यह उसकी चाल ढाल और बोली दोनोंसे साफ प्रकट होरहा था। उस युवकका रास्ता रोककर उसने कहा—"मुझसे मतलब नहीं कि आप कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं लेकिन रातमें इस रास्तेसे जानेकी जो धृष्टता आपने की है उसका इनाम तो आपको मिलना ही चाहिए।" इतना कहकर वह अपनी तलवार म्यानसे खींचने लगा। मैंने उसकी चमक साफ देखी। लेकिन ज्यों ही उसने उस युवकको निकटसे देखा और उसके सीनेपर नजर डाली त्यों ही उसके भाव बदल गये। तलवारको उसने पुनः म्यानमें डाल दिया और अपना भाव बदल कर बोला :—

"यह मैं क्या देख रहा हूँ। ओह! आप है? मैं तो आपका

बेदामका गुलाम हूँ। ऐसे नायकके साथ तो मैं नरकमें भी खुशी-खुशी जा सकता हूँ।

इतना कहकर उसने अपनी टोपी उतार ली और व्यंगसे सिर झुका दिया।

युवकने नरमीसे कहा :—मैं क्षमा चाहता हूँ। मुझे आवश्यक काम है। मैं रुक नहीं सकता।"

उसकी मीठी आवाज कानमें पड़ते ही मैं चौंक उठा। यह तो पुरुषकी आवाज नहीं वल्कि किसी स्त्रीकी थी।

आगन्तुकने ठहाका लगाते हुए कहा :—मेरे सेनापति ! मैं साधक होना चाहता हूँ, बाधक नहीं। यदि आपको अंगरक्षक-की जरूरत हो तो इस दाससे बढ़कर दूसरा नहीं मिलेगा।

वह—मुझे आपकी मददकी जरूरत नहीं है। आप कृपाकर मुझे जाने दें।"

इसपर उसने कहा—मैं व्यर्थकी वातोंमें नहीं पड़ना चाहता। इस तरह रातमें पुरुषका वेष बनाकर घूमना निरर्थक नहीं हो सकता।

मुझसे बढ़कर तुम्हारा प्रणय निबाहनेवाला दूसरा कौन हो सकता है। ज्यादा नहीं तो एक चुम्बन तो देती जाओ।

इतना कहकर उसे अपने बाहु-पाशमें लपेट लेनेके लिए उसने अपनी दोनों बाँह फैला दीं। वह रमणी छुटकारा पानेके लिए छटपटाने और चिल्लाने लगी।

मैंने देखा कि मुझे प्रकट होनेका अवसर आ गया। मैंने अपनी तलवार खींच ली और झपटकर सामने पहुँच गया।

बोला—उस स्त्रीको जाने दो। यदि बहादुर हो तो मेरा मुकाबला करो।

मुझे देखते ही उसको क्रोध हो आया। उसने गरजकर

कहा,—शैतानका बच्चा ! जिसमें तेरा कोई मतलब नहीं उसमें तू व्यथ टाँग अड़ानेकी धृष्टता करनेवाला है। अपनी करनीका फल भोग।"

इतना कहकर उसने तलवार बाहर खींच ली। उसने सोचा था कि एक ही वारमे मेरा काम तमाम हो जायगा लेकिन जब मैंने फुर्तीसे उसका वार व्यर्थ कर दिया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह गम्भीर हो गया। उसकी भौंहें टेढ़ी हो गयीं, उसके होंठ कड़े हो गये, उसकी आँखें शेरकी आँखोंकी तरह चमकने लगीं। मेरी तलवारपर उसकी तलवारके जो वार पड़ते थे उससे मैंने स्पष्ट देखा कि वह मुझे समाप्त ही कर देना चाहता है। उसका पहला वार व्यर्थ हो जानेसे वह सावधान हो गया था। एक दो वार उसने असावधानी दिखाकर मेरी जाँच कर ली। इसके बाद वह शेरकी तरह मुझपर झपटने लगा। हम दोनोंके बीच खूँखार युद्ध छिड़ गया। डबलिनमें मेरी तलवारका मुकाबला करनेवाला कोई नहीं था लेकिन इस फ्रांसीसीके सामने मैं कुछ नहीं था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी भी क्षण वह मेरा अन्त कर सकता है।

तलवार बजते ही वह स्त्री तो भागकर न जाने कहाँ चली गयी। उस निर्जन स्थानमें केवल हम दोनों लड़नेके लिए रह गये थे। मैंने देखा कि रक्षार्थ युद्धमे मैं नहीं ठहर सकूँगा, इसलिए मैंने बढ़चढ़कर वार करना आरम्भ किया। लेकिन वह हमेशा इसी यत्नमें रहा कि युद्ध देरतक चलता रहे और जब मैं थक जाऊँ तब वह सहजमें मेरा काम तमाम कर दे। मानो उसने मेरी शक्ति तोल ली थी।

दो वार उसे अवसर मिला। यदि चाहता तो वह मुझे घायल करके गिरा सकता था। लेकिन उस अवसरसे या तो

उसने लाभ नहीं उठाया था वह चूक गया। लड़ते लड़ते मैं थक गया था। उस युद्धमें मेरे मानापमानका प्रश्न नहीं था। इसलिए मैं भाग भी जाता लेकिन भागनेमें बचनेकी आशा नहीं थी। वह मेरा पीछा अवश्य करता और मुझे मार डालता। इसलिए अपनी सारी शक्ति बटोरकर मैं और तेजीसे तलवार चलाने लगा।

इसी समय कुछ लोगोंकी चिल्लाते हुए उधर ही आनेकी आहट हमलोगोंको मिली। वह चिल्लाहट सुनकर मेरे साथीका क्रोध भड़क उठा और उसने तेजीसे वार करना आरम्भ किया। इस तरहका परिवर्तन मैंने कभी नहीं देखा था। उसकी धीरता गायब हो गयी। वह उस जंगली जानवरकी तरह खूँखार हो उठा जिसका शिकार उसके मुँहसे छीना जा रहा हो। उन लोगोंके पहुँचनेके पहले ही वह मेरा अन्त कर देना चाहता था। उसने मेरे सीनेका लक्ष्य करके वार किया। यदि मेरी भीतरी जेबमें चमड़ेकी जिल्दवाली मेरी पाकेट बुक न होती तो उसकी तलवार मेरा सीना पार कर गयी होती। लेकिन उसकी तलवार वहीं जाकर अटक गयी। तबतक मेरी तलवार उसके सीनेको छेदकर पार हो गयी। वह लड़खड़ाकर जमीन-पर जा गिरा।

इसी समय भीड़ने आकर चारो ओरसे हमलोगोंको घेर लिया। खूनसे लथपथ मेरी तलावार छीन ली गयी और मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। वे लोग मुझे मारनेके लिए मुक्का तानने लगे और गालियाँ देने लगे। मैं केवल इतना ही समझ सका—"यह कुत्ता अंग्रेज मालूम होता है। उसने हत्या की है।" उनलोगोंकी बातोंसे मुझे मालूम हुआ कि मेरे शिकारके वे साथी हैं और यदि मेरे भाग्यसे फौजका एक अफसर उसी

समय वहाँ नही आ गया होता तो वे मुझे मारकर अपने साथी-का बदला वही चुका लेते। उस अफसरके साथ वही स्त्री थी। वह बड़ी आजिजीके साथ मेरी रक्षाके लिए उस अफसरसे प्रार्थना कर रही थी। उसने कहा :—मैंने सब कुछ अपनी आँखों देखा है। इन्होंने आत्मरक्षाके लिए यह किया है।

लेकिन उस अफसरने उसे इस निर्दयतासे ढकेल दिया कि वह दूर जा गिरी। किस्मतकी बात थी कि वह अफसर बड़े ही नेक मिजाजका था और प्रतिद्वन्द्वी फौजका अफसर था।

उस स्त्रीका चेहरा पीला पड़ गया। अपने को किसी तरह सम्हालकर वह मेरे निकट आयी। दीनताके साथ मेरी ओर एक बार देखा और उसके बाद भागकर न-जाने कहाँ चली गयी।

अफसरने उन सैनिकोंको ठेलकर अलग किया और वह मेरे पास आ पहुँचा। मैं कत्ल होनेसे बच गया। उसने कहा—"इस हत्यारेकी जान मत लो। इसे बाँध लो।" इतना सुनते ही उन लोगोंने मेरे हाथ पाँव इसलिए बाँध दिये कि दूसरे दिन मुझे सूलीपर लटकते हुए देखकर वे प्रसन्न होंगे। मैंने भी समझा कि न्यायका तो नाटक ही रचा जायगा। अन्तमें मुझे फाँसीके तख्तेपर ही चढ़ना होगा।

२०

उस रातको मुझे बैरेकके एक कमरेमें बन्द कर दिया गया। इस बातपर कोई विश्वास नही करेगा कि उस दशामें भी खाली बेंचपर मैं गहरी नींद सो सका। और भोरमें जँगलेकी खड़खड़ाहटसे मेरी नींद खुली। मैं एक तगड़े आदमीको कमरे

में प्रवेश करते पाया। मेरे कन्धेपर हाथ रखते हुए उसने कहा :—भले आदमी ! अब तो उठो। तुम्हारे ही समान वीर पुरुष तो इतनी निश्चिन्तताके साथ सो सकता है जब कि मौत-की तलवार उसकी गर्दनपर लटक रही हो।

मैं उठकर खड़ा हो गया। यह याद आते ही कि इस तरह मेरे जीवनका अन्त होगा, मुझे असीम वेदना हुई। मैंने झुँझला-कर कहा :—अभी तो अदालतका वक्त नहीं हुआ। फिर तुम मेरी शान्तिमें क्यों बाधा देने आ गये। जबतक मुझे जीना है तबतक तो शान्तिसे रहने दो।

इसपर उसने मुस्कुराकर कहा :—तुम्हारे लिए न तो अदालत बैठेगी और न तुम अदालतमें पेश ही किये जाओगे।'

इतना कहकर उसने मेरी ओर इस अभिप्रायसे देखा कि मुझपर इसका क्या असर होता है।

मैंने समझा कि मेरे भाग्यका फैसला हो गया। मुझे सीधे सूलीपर चढ़ा दिया जायगा। यह सोचते ही मैंने दिलको मज-बूत बना लिया। मृत्युकी घड़ी ज्यों ज्यों निकट आने लगी उसकी विभीषिका त्यों त्यों घटने लगी। मैंने कहा :—कोई हर्ज नहीं। मैं तैयार हूँ। जो अनिवार्य है वह अभी हो या दो घण्टे बाद।

मेरी बात सुनकर उसकी हँसी और भी तीव्र हो गयी। "अच्छी बात है, तब चलो।" इतना कहकर वह मुझे लेकर चला। रास्तेमें जो भी सैनिक मिलते उसे झुककर सलाम करते।

मेरे ऊपर किसी तरहका पहरा नहीं था। मुझे वह कैदीकी तरह नहीं ले चला बल्कि मित्रकी भाँति अपनी बगलमें।

मैं समझता था कि इस धरतीपर मेरी यही अन्तिम यात्रा है। इसलिए मैं अपने आसपासकी सभी वस्तुओंको गौरसे

देखता जा रहा था। मेरी स्मृति भी पूर्णरूपसे जागरूक हो गयी थी। काफी दिन चढ़नेपर हमलोग स्नोवरेके बागमें पहुँचे। सूर्यके पूर्ण प्रकाशमें मैं अपने साथीकी शकल देखी। वह सुन्दर और तगड़ा पुरुष था। उसके शरीरसे वीरताके ८।९ तमगे लटक रहे थे। उसके चेहरेको गौरसे देखनेपर सहसा मेरे मनमें यह भाव पैदा हुआ:—यह चेहरा तो उस आदमीका नहीं हो सकता जो किसीको मौतके द्वारपर पहुँचाने जाता हो।' इस ख्यालके आते ही जीवनकी आशाकी क्षीण रेखा मेरे मनमें उदय हो गयी। उसकी झलक मेरे चेहरेपर भी प्रकट हो गयी। मेरी तरफ गौरसे देखकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला:—आपकी आशङ्का निर्मूल नहीं है, दोस्त! कमसे-कम आज तो तुम फाँसीपर नहीं ही चढ़ाये जाओगे। यद्यपि जिसके पास तुम ले जाये जा रहे हो उसका सामना करनेकी अपेक्षा हमलोग फाँसीका तख्ता ज्यादा पसन्द करते है। लेकिन मैं यह क्या कह गया। मुझे कुछ न बतलानेकी सख्त आज्ञा है। पर कोई हर्ज नही। क्षणभर बाद ही तुम्हें स्वयं मालूम हो जायगा कि तुम्हारे भाग्यमे क्या बदा है।

इसी समय हमलोग एक विशाल भवनके सामने पहुँच गये। उसने बड़ी फुर्तीसे अपनेको सम्हाला और आगे बढ़ा। उसे देखते ही द्वारपरका सन्तरी अलग हट गया। उसने धीरे-से दरवाजा खटखटाया। दूसरे ही क्षण भीतरसे किसीने स्पष्ट और दृढ़ शब्दोंमे कहा:—"भीतर आओ।"

जिस कमरेमें हमलोगोंने प्रवेश किया उसमें कुल तीन द्वार थे। कमरा छोटा पर साफ-सुथरा था। एक छोटी खिड़कीके द्वारा उसमें प्रकाश आ रहा था। सूर्यकी किरणें अभी उसे नही छू पायी थीं।

कमरेके बीचोबीच एक छोटा टेबुल रखा था। उसके पास ही एक ठिगना, गठीला आदमी खड़ा था जो हमलोगोंके आगमनकी सूचना पाकर खड़ा हो गया था। उसके हाथमे काफीका प्याला था जिसमेंसे वह काफी पी रहा था। उसकी पीठ प्रकाशकी तरफ थी इसलिए मै उसका चेहरा साफ साफ नही देख सका। लेकिन उसकी पोशाकसे ही उसकी असलीयतका पता लग रहा था। वह था फ्रांसका फर्स्ट कांसुल नेपोलियन। उससे कुछ हटकर अन्धेरेमे शायद कोई और भी था। पर मैं साफ साफ कुछ नही देख सका।

मेरे साथीने झुककर सलाम किया और एक तरफ खड़ा हो गया। उसकी सारी चंचलता काफूर हो गयी थी। उसने कहा :—"हुजूर यही वह आदमी है।" इतना कहकर उसने मेरी ओर अंगुलीसे इशारा किया।

नेपोलियन—ठीक है। तुम जा सकते हो।

इसपर उसने हेकलाते हुए कहा :—लेकिन हुजूर! मैं इसे यहाँ अकेला नहीं छोड़ना चाहता। इसका क्या भरोसा......

न जाने वह क्या कहना चाहता था। लेकिन नेपोलियनने इससे ज्यादा कहनेका उसे अवसर ही नही दिया। डपटकर कहा:—"जाओ।" इस एक ही शब्दमे उसने उस अफसरको इस तरह शान्त कर दिया जिस तरह मालिक अपने कुत्तको।

उस अफसरके चले जानेपर उसने धीरेसे प्यालेको टेबुलपर रख दिया और मेरी ओर घूरकर देखा।

तुम जानते ही हो कि मैंने उस शैतान लार्ड क्रेयरकी खूँखार आँखोंका अनेक बार मुकाबला किया है और मुझे लेशमात्र भी डर भय नहीं हुआ था। लेकिन नेपोलियनके सामने वह बच्चा है। इसकी उन खूँखार आँखोमें न दया है और न

करुणा । यदि तुमने चिड़ियाघरमें पींजड़ेके भीतर इधरसे उधर घूमते हुए कभी शेर या शेरनीकी आँखें देखी हैं तो नेपोलियनकी खूँखार आँखोंका तुम्हें कुछ अन्दाजा मिल सकता है ।

कुछ क्षणतक वह मुझे नीचेसे ऊपरतक देखता रहा । मैं इतना भयभीत हो गया कि काटो तो शरीरमें एक बूँद भी खून नहीं मिलता । अन्तमें उसने बड़ी रुखाईसे कहा :—तब तुम्हींने मेरे अंग-रक्षक और कप्तानको मार डाला है जिसके समान मेरी फौजमें तलवार चलानेवाला दूसरा कोई नहीं था !

मैंने लड़खड़ाते हुए कहा :—आत्मरक्षाके लिए द्वन्द्वयुद्धमें वह मेरे द्वारा मारे गये ।

नेपोलियन—यह बात तुम्हारे और उनके बीचमें सफाईका काम दे सकती है । लेकिन मुझे उससे कोई प्रयोजन नहीं । आपके न्याय संगत युद्धका परिणाम यह हुआ कि मुझे सबसे बहादुर अफसरसे हाथ धोना पड़ा है ।

उसने यह बात इस तरहसे कही मानो मैंने उसके अफसरको चुरा लिया है और उसे लौटा नहीं सकता । उसके जीवन मरणसे उसे मानो कोई प्रयोजन नहीं था । इसका प्रयोजन सिर्फ उसकी सुविधा और असुविधा थी ।

मेरे पास कोई उत्तर नहीं था । मैं उस अफसरको जीवन-दान भी नहीं दे सकता था । मैं चुपचाप खड़ा रहा ।

उसने मुझसे पूछा—क्या तुम अंग्रेज हो ?

मैं—जी नहीं, मैं आयरिश हूँ ।

वह—एक ही बात है । क्यों ?

मैंने समझा कि वह मुझे उसका रहा है । मैंने साहस बटोरा और अंग्रेजोंको गालियाँ देना आरम्भ किया । मैंने कहा :—"अंग्रेज बेईमान हैं । हमारे देशका उन्होंने सर्वनाश कर डाला

है। उनके नामसे मुझे घृणा है। मैं उनसे बदला लेना और अपने देशको आजाद करना चाहता हूँ।" इस तरह मैंने अपने हृदयसे सारा गुबार निकाल बाहर किया।

वह धैर्यके साथ मेरी बातें सुनता रहा और उसकी आकृतिसे मैंने यह भी अनुमान किया कि मेरी बातोंसे वह नाराज नहीं है।

लेकिन उसने अपनी गम्भीर वाणीसे मुझे बीचमें ही रोक दिया। बोला—यहाँ अंग्रेजोंका सवाल नहीं है। सवाल मेरा है। तुमने मेरे अङ्गरक्षक, अफसर तथा तलवार-विशारदको मार डाला है। तुम्हें उसकी पूर्ति करनी होगी।

मैंने उदासीके साथ कहा—यह तो असम्भव है।

वह—असम्भव! मुझे तुम्हारे 'असम्भवकी परवाह नहीं है। तुम जानते हो कि न्याय इस मामलेमें कितना कठोर है। 'आँखके बदले आँख, दाँतके बदले दाँत, जानके बदले जान, और अफसरके बदले अफसर!

उसने यह बात इतनी गम्भीरतासे कही कि मेरी रही-सही आशा जाती रही। मैंने लड़खड़ाते हुए कहा—दया!

उसने उत्तर दिया—न्याय! क्या तुम्हें इनकार है?

मैंने घबराकर पूछा—इनकार? क्या इनकार?

वह—मेरी शर्त!

मैं—आपने कोई शर्त नहीं पेश की है।

वह—मेरे अफसरकी क्षतिकी पूर्ति!

मैं—मैं नहीं कर सकता।

"लेकिन यदि तुम उसकी पूर्ति कर सकते हो तो क्या तुम उसे ईमानदारीसे पूरा करोगे?"

इस प्रश्नको उसने बड़ी सहूलियतसे पूछा।

मैंने पागलोंकी तरह कहा—ईश्वर साक्षी है, मैं जरूर करूँगा।

वह—तुम्हारा नाम क्या है?

मैं—टेरेन्स ओगार्मन!

इसपर उसने कहा—सोशिये टेरेन्स ओगार्मन। मैं तुम्हें अपने रक्षकोंका गार्ड और अपना विशेष अङ्गरक्षक नियुक्त करता हूँ। तुम्हारी सारी व्यवस्था तुरत हो जाती है। अपनी वर्दी पहनकर तैयार हो जाओ।

मेरा सिर चकरा गया। मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकल सका।

नेपोलियनका सारा रुख क्षणभरमें बदल गया। उसके चेहरेपर हँसीकी रेखा इस तरह दौड़ गयी मानो बादलोंको चीरकर सूर्य निकल आया हो। मुझे तो मूर्च्छा-सी आ गयी। मेरी आँखे बन्द हो गयी।

२१

अपने इस क्रूर परिहासकी सफलतापर नेपोलियनको अत्यधिक प्रसन्नता हुई। वे दो कदम आगे बढ़ आये और चिर-परिचितकी भाँति मेरे कान ऐंठते हुए बोले—तुम्हे सन्तोष है?

मैंने कहा—आवश्यकतासे अधिक। मैं किन शब्दोंमें आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करूँ?

वह—मुझे धन्यवाद देनेकी जरूरत नहीं है। इसका अधिकारी दूसरा ही है।

इससे तुम भलीभाँति समझ सकते हो कि उसके समक्ष मेरी आँखें इस तरह चौंधिया गयी थीं कि सूर्यकी रोशनीका प्रकाश कमरेमें पूरी तरह फैल जानेपर भी कोनेमें खड़ी उस दूसरी मूर्तिको नहीं देख सका था। लेकिन उसके हाथके इशारे-पर जब मैंने उधर आँखें फेरीं तो देखा कि सुन्दर पोशाकोंसे सुसज्जित वही युवती खड़ी है जिसे मैंने पिछली रातको उस अफसरसे बचाया था।

वह युवती भयसे थरथर काँप रही थी। नेपोलियनने झुक-कर आदरके साथ उसका हाथ चूम लिया। मुझे लक्ष्यकर उसने कहा—"अपने प्राण तथा इस गौरवमय पदके लिए तुम्हे कुमारी जिनेटीको धन्यवाद देना चाहिए। यह कुलीन खानदान-की है लेकिन इनका हृदय फ्रांसके लिए सदा ईमानदार रहा है। इनके बड़े भाई एड्रियनकी मृत्यु मेरी सेवामें हो गयी। वह इन्हे अपने चाचाकी देख-रेखमे छोड़ गया। वह ऊपरसे तो प्रजातंत्रका मित्र बना रहा लेकिन भीतर-ही-भीतर फ्रांसके विरुद्ध साजिश करता रहा। इन्हे मालूम हुआ कि मेरी हत्याके लिए साजिश की जा रही है। यह सम्वाद पाते ही इन्होंने अपने भाईकी पोशाक पहनी और मुझे सचेत करनेके लिए आ ही रही थी जब रास्तेमे यह दुर्घटना हुई।"

"इन्होने तुम्हारी बहादुरीका वर्णन मुझसे किया और यह भी बताया कि तुमने किस तरह इनकी रक्षा की। इन्हींकी सिफारिशसे तुम्हारे अपराध क्षमा किये गये और तुम्हें यह पद दिया गया। लेकिन इससे पहले तुम्हें जाँच लेना आवश्यक था क्योंकि बहादुर और ईमानदार आदमीको ही मै अपना अंगरक्षक नियुक्त कर सकता हूँ। इन्होने तुम्हें यह पद दिला

दिया। इसे कायम रखना तुम्हारे हाथ है। इस कृपाके लिए तुम्हें उन्हें धन्यवाद देनेकी स्वतंत्रता है।"

मैं घुटने टेककर कुमारी जिनेटीके सामने बैठ गया। उन्होंने अपना दाहिना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने उसे चूम लिया। यही मेरी रामकहानी है।

इतना कहकर टेरी चुप हो गया।

राबर्ट—नही भाई, इतना ही नहीं है।

टेरी—मित्र! संसारमें वह सबसे ज्यादा सुन्दर है, सबसे ज्यादा आकर्षक है। मुझे तो उसकी तरफ देखनेमें भी धृष्टता मालूम होती है।

एमेट—और वह?

टेरी—वह मुझे हृदयसे चाहती है। नेपोलियनने हमलोगोंके विवाहकी अनुमति दे दी है। लेकिन मुझे एक साल प्रतीक्षा करनी है। जिनेटी सम्पत्तिकी वारिस है। क्या ही अच्छा होता कि वह युवक होती। अब संसारमें उसका कोई नहीं है। उसका चाचा इङ्गलैण्ड भाग गया। नेपोलियनने उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली। अब वे ही जिनेटीके अभिभावक हैं। किस तरह, यह मैं नही जानता। इस देशमें वे जो चाहते है वही होता है। पहले तो वह शादीके लिए राजी नहीं थे। वह जिनेटीकी शादी किसी बड़े अफसरसे करना चाहते थे। लेकिन जिनेटीने विनय-प्रार्थनासे उन्हें किसी तरह राजी कर लिया किन्तु एक साल-की अवधिमें वे एक दिनकी भी कमी नही करना चाहते। शायद उसने यत्न ही नही किया। स्त्रियाँ जब पुरुषको अपने वशमें कर लेती हैं तब उन्हें शादीकी जल्दी नहीं रहती।

टेरीने अपना महत्व दिखाते हुए कहा—आयलैंण्डके बारेमें उनसे बातें करनेका मुझे मौका मिलेगा। उनकी मुझपर बड़ी

कृपा रहती है। मैं उनसे खूब हिलमिल गया हूँ। बड़े ही स्वतंत्रता-प्रेमी हैं। एक दिन उन्होंने स्वयं मुझसे आयलैंण्डकी चर्चा छेड़ दी थी। अंग्रेजोंके जुल्मसे हमलोगोंका उद्धार करनेके लिए वे स्वयं व्यग्र हैं।

इसपर एमेट हँस पड़ा। बोला—कह डालना कठिन नहीं है। लेकिन जब आदमी, शस्त्र और जहाजका प्रश्न आता है तब लोगोंकी उदारता उतनी सस्ती नहीं रह जाती।

टेरी—वे उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षामें हैं।

एमेटने रुखाईसे कहा—वे वचन देनेमें बड़े उदार हैं। लेकिन उनके वचन सन्दिग्ध होते हैं जिनका कोई मतलब नहीं। वे जानते हैं कि मेरे भाई आर्थरओगानरका विश्वास नहीं करते इसलिए वे एकको दूसरेके खिलाफ उभाड़ते रहते हैं। वे कभी इनके और कभी उनके पास अपने अफसरोंको भेजा करते हैं। दोनोंसे वादा करते रहते हैं। लेकिन खुद न इनसे मिलते हैं और न उनसे।

टेरी क्षणभर चुप रहा। कुछ सोचता रहा। अन्तमें बोल उठा—यदि तुम उनसे मिलना चाहो तो मैं प्रबन्ध कर सकता हूँ।

एमेटको अपने साथीकी सिधाईपर हँसी आयी। बोला—मुझसे? उन्हें यह मालूम भी नहीं होगा कि मैं यहाँ हूँ।

टेरी—ऐसी बात नहीं है। फ्रांसका रत्ती-रत्ती हाल उन्हे मालूम होता रहता है। तुम्हारे आनेके दो ही दिन बाद उन्होंने मुझसे तुम्हारे बारेमें पूछताछ की। मैंने सारी बाते बतला दीं।

एमेट—मैं अनुमान करता हूँ कि तुमने क्या कहा होगा?

टेरी—मैंने सारी बाते सचसच कह दीं। मैंने उन्हें बतला दिया कि तुम्हीं एकमात्र ऐसे व्यक्ति हो जिसपर आयरिश स्व-

तंत्रताके लिए लड़नेवाले युवकोंको विश्वास और भरोसा है। मेरी वातसे उन्हें वड़ी खुशी हुई। उनके समान आदमीके विषयमें दृढ़तापूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन देखनेसे यही मालूम हुआ। इन्होंने हँसकर कहा—"कर्मशील आदमी मालूम होते हैं।" फ्रांसमें इसी तरहके आदमीकी जरूरत थी। आयलैंण्डको भी इसी तरहके आदमीकी जरूरत है।" कल टुलेरीजमें दरवार होगा। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें भी उनके समक्ष उपस्थित करनेकी झोंकी लूँ।

नेपोलियनने रावर्ट एमेटका ठीक ठीक चित्रण किया था। वह अवसरको कभी भी हाथसे जाने नहीं देता था चाहे वह कितना भी अस्पष्ट क्यों न हो। वह उसे कसकर पकड़ता था। नेपोलियनतक पहुँचनेका यह अवसर भी अस्पष्ट और सन्दिग्ध था तो भी वह इसे हाथसे जाने नहीं देना चाहता था। वोला—यदि तुम यह झोंकी उठानेके लिए तैयार हो तो मैं हर तरहसे राजी हूँ।

टेरीने ठंडी साँस लेकर कहा—तव यह तय रहा। कई दिनोंसे यह वात मेरे दिमागमें चक्कर मार रही थी।

इसके वाद दोनो मित्र वहाँसे चलते वने।

२२

यह दरवार अनुपम था। फ्रांसकी श्री, समृद्धि, और सौन्दर्य सव कुछ वहाँ जा जुटे थे। लेकिन इन सवके ऊपर उस ठिगने और खूँखार आँखोवाले मनुष्यका रोव था। जिधर वह निकल जाता था उधरके लोग इस तरह सतर्क हो

उठते थे मानो भीड़में हड्डोका दल पहुँच गया हो। कहनेका मतलब यह है कि उसे देखकर लोग सहम जाते थे और उसके हटते ही स्थिर हो जाते थे। बड़ेसे बड़े बहादुर सिपाही भी उसे देखकर सहम जाते थे। जिन्हें अपने सौन्दर्यका घमण्ड था, वे भी उसके सामने पहुँचते ही भीगी बिल्ली बन जाते थे। जिसकी ओर वह घूरकर देखता था वह समझता था कि उसका काल आ गया। जिसे देखकर वह मुस्कुरा देता था वह समझता था कि उसके ईश्वर उससे प्रसन्न है।

जोसेफाइन भी सुन्दर आभूषणो और वस्त्रोंसे सुसज्जित वहाँ मौजूद थी। वह भी अपनी मन्द मुस्कुराहटसे लोगोंको आनन्दित करती इधर-उधर घूम रही थीं, लेकिन वह इस बातसे सदा सतर्क रहती थी कि नेपोलियनसे उनका सामना न हो। क्योंकि एक बार सामना होते ही नेपोलियनने उनकी फजूल-खर्चीके लिए कड़ी फटकार दी थी जिससे उनका हँसमुख चेहरा मलिन हो गया था। भयसे काँपते हुए उन्होंने कहा—लेकिन आपने ही तो कहा था कि उत्तम पोशाकमें शरीक होना।

नेपोलियन—उत्तम पोशाककी भी सीमा है। पर तुम्हें इसका ज्ञान कहाँ। मैंने दूकानदारका बिल देखा है। तुम्हारी पोशाकमें जितना खर्च होता है उतनेसे मैं एक सेनाका खर्च चला सकता हूँ। जो हो गया सो हो गया लेकिन भविष्यके लिए तुम्हें सावधान हो जाना चाहिए। यदि तुम अन्य खर्च कम नहीं करोगी तो सैनिकोंका वेतन देनेके लिए मेरे पास रुपये नहीं रह जायँगे।

जोसेफाइनने "जैसी आज्ञा" कहकर सिर झुका लिया और खिसककर आगे बढ़ गयी मानो इतनेसे ही जान बच गयी।

नेपोलियन भी दूसरी तरफ चला गया। इसी समय उसकी निगाह ब्रिटिश राजदूत लार्ड ह्वाइट वर्थपर पड़ी। उन्हें देखते ही उसका कोर्सिकन रक्त गर्म हो उठा। उसकी आँखें खूँखार हो उठीं। उसकी भौंहोंमें बल पड़ गये। वह टहलता-टहलता उधर ही जा निकला। उसे देखते ही लार्ड ह्वाइट वर्थने झुककर सलाम किया। नेपोलियनने रुखाईसे उसका उत्तर दिया। उसका यह रुख देखकर दरबारी लोग एक-एककर वहाँसे खिसक गये। उन दोनोंको वहाँ अकेले छोड़ दिया।

अचानक नेपोलियन पूछ बैठा—तब तुमलोग युद्ध ही करना चाहते हो?" उसने धीरेसे, लेकिन दृढ़ शब्दोंमें पूछा।

लार्ड ह्वाइट वर्थ इस प्रश्नके लिए तैयार नहीं थे। वह घबरा गये। अपनेको सम्हालकर कहा—जी नहीं, हमलोग शान्तिके लाभको भलीभाँति समझते हैं।

नेपो०—तब तुमलोग मेरी माँगको क्यों स्वीकार नहीं करते? मेरी माँग तो बहुत बड़ी नहीं है। तुम्हारे यहाँ कुछ अखबारवाले शैतान हैं। वे सदा मुझपर कीचड़ उछाला करते हैं। और सदा गलत बातोंका प्रचार करते हैं। तुमलोगोंने अपने देशमें फ्रांसके देशद्रोहियों और हत्यारोंको शरण दे रखा है। यदि तुमलोग चाहते हो कि हमलोगोंके बीच मेल बना रहे तो तुम्हें उचित है कि उन अखबारोंका मुँह बन्द कर दो और उन देशद्रोहियों और हत्यारोंको वहाँसे निकाल दो।

राजदूतने नर्मीसे कहा—जैसा आप कहते हैं वैसा करनेके लिए हमारे शासन-विधानमें कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा........।

नेपोलियन बीचमें ही बोल उठा—ये बच्चोंकी-सी बातें हैं। जिस तरह मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ, उसी तरह पिट वहाँ

जो चाहें कर सकते हैं। मै तो सिर्फ बदलैन चाहता हूँ। तुम्हारे यहाँ यहाँके देशद्रोही हैं और हमारे यहाँ आयलैण्डके देशद्रोही भरे हैं जो तुम्हारे लिए कहीं ज्यादा खतरनाक है। वे लोग मुझसे सहायताकी प्रार्थना कर रहे हैं। अभीतक तो मैंने उन्हें कोरा जवाब दे दिया है। यदि तुम फ्रांसके देशद्रोहियोंको निकाल दो तो मैं आयलैण्डवालोंको यहाँसे धता बताऊँ। इससे ज्यादा कौनसा प्रमाण तुमलोग चाहते हो कि मैं मेल चाहता हूँ। ये हो लोग हमलोगोंके बीच वैमनस्यका बीज बो रहे हैं।

राजदूत—इसका निश्चित उत्तर देना मेरे हाथ नहीं है। मैंने अपनी सरकारको आपका प्रस्ताव लिखकर भेज दिया है। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कर सकता।

नेपो०—और उन लोगोंने मेरी बात स्वीकार नहीं की। इतना बड़ा हौसला !

राजदूत—उन्होने मुझे आपसे यह निवेदन करनेके लिए कहा है कि जो लोग हमारे कानूनका उल्लङ्घन नहीं करते उन्हें न तो हम निकाल ही सकते हैं और न तो चले जानेके लिए कह सकते हैं। ब्रिटिश शासन-विधानने प्रेसवालोंको जो स्वतन्त्रता दे रखी है उसमे भी वे किसी तरहका हस्तक्षेप स्वयं या किसी विदेशी शक्तिके आग्रहपर नहीं कर सकते।

यह सुनकर नेपोलियनका चेहरा खूँखार हो गया। क्षणभरके लिए तो यही प्रतीत हुआ कि वह वहीं राजदूतके गालमे थप्पड़ जमा देगा। लेकिन अपनेको सम्हालकर उसने अपने क्रोधको अपने उद्गारोंद्वारा यों प्रकट किया—

"झूठो बदमाशो, हत्यारो और देशद्रोहियोंकी जमातके संङ्गी हो तुमलोग और जड़ताके उपासक हो।"

लार्ड ह्वाइट वर्थने इसकी इस तरह उपेक्षा की मानो उन्होंने सुना ही नहीं। क्षणभरमें उसका क्रोध शान्त हो गया। क्योंकि उसकी बोलीमें अब वह कटुता नहीं रह गयी थी लेकिन उसकी दृढ़ता ज्यों-की-त्यों वर्तमान थी। उसने कहा—राजदूत महाशय ! ये कोरे सिद्धान्तकी बातें हैं। खैर, उन्हें जाने दो। कोई बड़ी बात नहीं है। मैं तुमसे इस समय एक महत्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। सन्धिकी शर्तोंके अनुसार तुम्हारी सरकारको माल्टा द्वीप फौरन खाली कर देना चाहिए।

राजदूतके चेहरेपर शिकन आ गयी। उसने कहा—मुझे पूरी आशा है कि हमारी सरकार इस प्रश्नको शीघ्र ही हाथमें लेगी।

नेपोलियनने कड़ककर कहा—सन्धिकी शर्तोंमें जो तिथि दी गयी है वह बीत गयी। मर्यादाकी बात यही है कि तुमलोगोंको उस शर्तका शीघ्र-से-शीघ्र पालन करना चाहिए। हमारा हक है कि मैं उस शर्तका बलात् पालन कराऊँ। तुम्हारे राजाने सन्धिके द्वारा इसका वचन दिया है। इसके पालन होते ही युद्धके काले बादल आकाशसे हट जायँगे। लेकिन यदि वे अपनी प्रतिज्ञासे विचलित होते हैं तो ये युद्धके काले बादल बरसे बिना नहीं रहेंगे। सात सालतक तो हमलोग लड़ चुके हैं......।

लार्ड ह्वाइट वर्थने धीमे स्वरमें कहा—वही बहुत था।

नेपोलियनने रुखाईसे कहा—लेकिन तुम लोग अगले सात वर्षीय युद्धके लिए हमें मजबूर कर रहे हो। यदि तुमलोग युद्धके लिए प्रेरित करोगे तो युद्ध अनिवार्य है। यदि तुमलोग तलवार पहले खींचोगे तो मैं सबसे पीछे उसे म्यानमें रखूँगा। यदि तुमलोग शान्ति चाहते हो तो सन्धिकी शर्तोंका पालन

करो। जो लोग शर्तोंको तोड़ते हैं वे पापी हैं। उन्हींके ऊपर यूरोपके युद्धकी सारी जिम्मेदारी होगी।

राजदूत—आप जो कुछ कह रहे हैं उसकी सूचना मैं अपनी सरकारको दूँगा ; लेकिन मैं किसी बातके लिए वचन-बद्ध नहीं हो सकता।

नेपो०—ठीक है। मुझे आपसे कोई झगड़ा नहीं है।

इस समयतक नेपोलियनने समस्त स्थितिको पूरी तरह अपने काबूमें कर लिया था। बोला—मैं समझता हूँ कि मैंने कोई भी बात अशिष्ट नहीं कही है। आपकी सरकारके लिए दो ही मार्ग हैं। सन्धिकी शर्तोंका पालन या युद्ध। लेकिन आपके और हमारे बीचमें सदा सद्भाव बना रहेगा।

इतना कहकर वह मुस्कुराने लगा। उसने अपनी सोनेकी नसदानी उस व्याकुल राजदूतके हाथमें रख दी।

लार्ड ह्वाइट वर्थने उसको खोला और एक चुटकी नस्य लेकर जब वे नसदानी लौटाने लगे तो नेपोलियनने उसे लेनेसे इनकार किया। बोला—आप उसे रखें। आपके पास यह मेरी अन्तिम यादगार रहेगी।

राजदूतका चेहरा पीला पड़ गया। उन्होंने समझ लिया कि युद्ध अनिवार्य है। वे वहाँसे हटकर दूसरी तरफ चले गये।

नेपोलियनकी आकृति क्षणभरमें बदल गयी। उस खूँखार चेहरेका स्थान ग्रहण कर लिया पुलक और मुस्कानने। कारण यह था कि उसी समय उसकी निगाह जिनेटीपर पड़ी। सादे लिबासमें भी उसका सौन्दर्य फूटा पड़ रहा था। उसने इशारेसे उसे अपनी ओर बुलाया।

नेपोलियन जितना ठिगना था, जिनेटी उतनी ही लम्बी थी। नेपोलियन लम्बी स्त्रियोंको बहुत पसन्द करता था।

उसने हँसते हुए जिनेटीसे कहा—आह ! मेरे बहादुर कप्तान ! इस पोशाकमें भी तुम मुझे बहुत पसन्द आते हो। क्या तुम्हारी कृपाके पात्र तुम्हारे आयरिश सरदार भी आज यहाँ मौजूद हैं ?

जिनेटी—जी हाँ, वे अपने आयरिश दोस्त रावर्ट एमेटके साथ उधर घूम रहे हैं।

ओगार्मेनने देखा कि नेपोलियनकी नजर उसीकी तरफ है। इस अवसरसे लाभ उठाकर वह रावर्टको लेकर नेपोलियनके पास जा पहुँचा। यह मौका बहुत ही अच्छा था क्योंकि नेपोलियन इस वक्त आशासे अधिक प्रसन्नचित्त था।

ओगार्मेनने झुककर नेपोलियनको अभिवादन किया और आदरके साथ बोला—यदि आज्ञा हो तो मैं अपने मित्र रावर्ट एमेटको हुजुरमें पेश करूँ जिसकी चर्चा मैंने आपसे की थी।

नेपोलियनने स्थिर दृष्टिसे रावर्ट एमेटकी ओर देखा और धीरेसे अपना हाथ बढ़ा दिया। एमेट इससे बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि उसे इतनी उदारताकी आशा नहीं थी।

नेपोलियन—मैं अपने दरबारमें आपका हृदयसे स्वागत करता हूँ। मैं आपके देशवासियोंको हृदयसे चाहता हूँ और आपको सतानेवाले अंग्रेजोंसे घृणा करता हूँ। वे बड़े भारी शैतान हैं।

एमेट—इतनेपर भी तो आप हमलोगोंकी सहायता नहीं कर रहे हैं ताकि हमलोग अपनी आजादी उन सबसे छीन लूँ।

नेपोलियनके ललाटपर क्रोधकी रेखा दौड़ गयी। उसका चेहरा सिकुड़ गया। लेकिन क्षणभर बाद ही उसने अपना भाव बदलकर मुस्कुराते हुए कहा—"आप आयलैण्डके लोग भी हम कोर्सिकावालोंकी तरह अधीर और जल्दबाज होते

हैं।" उसने दोनों हाथ उठाकर कहा—"मैं क्या कर सकता हू। ईश्वर भी उन्हींकी मदद करते हैं जो अपनी मदद आप करते हैं।" इस अवसरपर ईश्वरके स्थानपर अपनेको रखनेमे उसे कोई अतिशयोक्ति नही प्रतीत हुई।

राबर्ट—हमलोग अपना पार्ट अदा करनेके लिए तैयार हैं।

नेपोलियन—केवल जबानी?

राबर्ट—जी नही, क्रियात्मक रूपसे।

इस बार फिर नेपोलियनने इस तरह उसे घूरकर देखा मानो उसके हृदयके भीतर घुस जाना चाहता हो। बोला—क्या आप यह बात सच्चे दिलसे कह रहे हैं? तब तो मुझे मालूम होता है कि आयर्लैण्डमें सच्चा कर्मवीर पैदा हो गया है। इस सम्बन्धमें यहाँ बातचीत करना उचित नही होगा। कल अकेलेमें मैं आपसे इस सम्बन्धमे बातें करूँगा। आपके मित्र ठीक समयपर आपको मेरे पास पहुँचा जायँगे।

इतना कहकर उसने इन लोगोंको विदा किया और पूर्ववत् इधर उधर वह टहलने लगा।

अपनी सफलतापर टेरी बेहद खुश था। उसकी चतुरताने असाधारण काम किया था। उसे नेपोलियन बोनापार्ट और राबर्ट एमेटमें असीम विश्वास था। उसकी धारणा थी कि यदि दोनों मिल जायँ तो ससारकी कोई भी शक्ति उनका मुकाबला नही कर सकती। दोनो दुर्द्धर्ष और अजेय हो जायँगे।

२३

नियत दिन ओगार्मेन रावर्ट एमेटके पास आया। उसका चेहरा उदास था, हृदय क्षुब्ध था। वह इतना मर्माहत हो रहा था कि विना कुछ कहे रावर्टने उसके हृदयकी वात जान ली। टेरीने रोनी सूरत वनाकर कहा—अचानक राजकीय सम्बन्धी कोई आवश्यक काम आ गया। उसीमें वे फँस गये। मुझे उन्होंने इसकी सूचना दे दी लेकिन यह नहीं कहलाया कि वे फिर कब मिल सकेंगे।

रावर्ट—मैं पहलेसे ही समझता था। नेपोलियनने वादा तो कर दिया था लेकिन उसे पालन करनेकी नीयत उनकी कदापि नहीं थी।

लेकिन टेरीके दिलमें यह वात नहीं धँसी। उसने कहा—मुझे उनपर पूरा विश्वास है। वे आपसे अवश्य मिलेंगे।

वात भी यही हुई। टेरीकी जीत हुई। दूसरे ही दिन नेपोलियनने रावर्ट एमेटको वुलवा भेजा। असीम उत्साह और प्रसन्नताके साथ टेरी यह सम्वाद लेकर रावर्टके पास आया।

नेपोलियन उसी कमरेमें था जिस कमरेमें पहले दिन टेरीको उसका दर्शन हुआ था। उसकी दोनों भुजाएँ पीछेकी ओर मुड़ी थीं और उसका सिर इस तरह नत था मानो अपने ही भारसे झुका हो। वह जंगली जानवरकी भाँति चुहलकदमी कर रहा था। वह शान्त पर खतरनाक प्रतीत होता था।

इन दोनोंके प्रवेश करते ही वह रुककर खड़ा हो गया और टेरीको चले जानेके लिए इशारा किया। टेरीकी उत्सुकता और भी जाग उठी। वह ठमक गया लेकिन नेपोलियनकी आँखें

तरेरकर अपनी ओर देखते ही वह चुपचाप कमरेसे वाहर हो गया।

उसके वाहर होते ही नेपोलियन रावटकी तरफ घूम पड़ा और वोला—"यहा हमलोगोंके बीच जो वातें हो रही हैं वे हमीलोगोंतकके लिए हैं। यदि आप कही अन्यत्र इसकी चर्चा करेंगे तो मैं साफ इनकार कर जाऊँगा। आपने उस दिन कहा था कि आयर्लैण्डके लोग इन वेईमान, दगावाज, नीच और कमीने अंग्रेजोंके साथ लड़नेके लिए तैयार हैं।" उसके प्रत्येक शव्दमें असीम घृणा भरी थी। "तव मुझे यह वतलाइये कि वे कव और कैसे लड़ना चाहते हैं।"

रावर्ट—यदि आदेश दिया जाय तो इसी क्षण।"

उसने मुँह वनाते हुए कहा—लेकिन उन्हे आदेश कौन देगा।

रावर्ट—यदि कोई दूसरा योग्य व्यक्ति नहीं मिलेगा तो मैं ही।

इस वातको रावर्टने विना किसी डींग या वनावटके सीधे तौरसे कहा था।

नेपोलियनका वह भाव वदल गया था। उसने कहा—आप स्वयं! मुझे आपपर पूरा भरोसा है। लेकिन क्या सफलताकी कोई आशा है? पिछली वारका प्रयत्न तो एकदम विफल रहा। मैंने उस विद्रोहके वारेमे सव कुछ सुना है। उस विद्रोहमे आयर्लैण्डवालोंके पास वहुत वड़ा साधन था। पाँच लाख चुने सैनिक थे, अनुभवी संचालक थे। लार्ड एडवर्ड स्वयं वड़े वहादुर सेनापति थे, आर्थर ओगार्मन और तुम्हारे भाई वगैरह सभी शामिल थे। लेकिन तो भी वुरी तरह परास्त होना पड़ा।

राबर्ट—आन्दोलन अपने ही भारसे टूट गया। उसकी गति मन्द थी, वह सम्हालके बाहर था और वजनी था। गुप्तचरोंको धोखा देनेका मौका मिल गया। शत्रुओंको तैयारी करनेका अवसर मिल गया। क्रान्ति तीव्र, तेज, आकस्मिक और निर्दिष्ट होनी चाहिए।

नेपोलियनने उत्फुल्ल होकर कहा—तुम्हारे भी यही विचार हैं? अच्छा, तुम्हारी क्या व्यवस्था है?

राबर्ट—मैं सीधे हृदयपर प्रहार करना चाहता हूँ। थोड़े विश्वसनीय युवकोंके साथ मैं पहले डबलिन कैसिलपर कब्जा कर लेना चाहता हूँ। उसके बाद राजधानीपर।

नेपो०—क्या तुम डबलिनपर कब्जा कर सकोगे?

राबर्ट—कब्जा तो हमलोग अवश्य कर लेंगे लेकिन नयी ताकतके जोड़ बिना हमलोग अधिकार बनाये नहीं रह सकेंगे। मैं सारी बातें स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। यहीं आकर हमें फ्रांसकी सहायताकी जरूरत पड़ती है।

नेपो०—तुम्हें कितने सैनिकोंकी जरूरत पड़ेगी? दस या बीस हजार?

राबर्ट—दस हजार पर्याप्त होंगे। कैसिल युद्धमें हम्बर्टके साथ लड़नेवाले सैनिकोंके समान पाँच हजार भी कम नहीं होंगे। आदमियोंसे ज्यादा हमें हथियारकी जरूरत है।

नेपो०—यदि तुम जीत गये तब क्या होगा। मैं आयर्लैण्डका दोस्त हूँ और स्वतन्त्रताका उपासक! इसे कहनेकी जरूरत नहीं। लेकिन मुझे जो मदद मिलेगी उसके बदलेमें तो मुझे भी कुछ मिलना चाहिए। तुम्हारी सफलतासे फ्रांस या मुझे क्या लाभ होगा?

राबर्ट—फ्रांसके दुश्मन और आपके दुश्मन हमलोगोंके दुश्मन होंगे। हमलोगोंकी सफलता आपके सबसे खूँखार दुश्मनको पंगु बना देगा। आयलैंण्ड आपका कृतज्ञ होगा। इस उपकारको कभी नहीं भूलेगा। सदा आपका सच्चा मित्र बना रहेगा।

नेपो०—यदि आपलोग ब्रिटिश प्रभुताको परास्त कर सके तो आपलोग किस तरहकी शासन-व्यवस्था कायम करेंगे? स्वतन्त्र राजतन्त्र?

नेपोलियनने यह सवाल जिस ढङ्गसे किया था उसे सुनकर राबर्ट चकित हो गया। उसने तुरत उत्तर दिया—हमलोग आयलैंण्डमें राजा नहीं रखेंगे आपकी तरह हमलोग भी प्रजा-तन्त्र स्थापित करेंगे। संसारके सभी स्वाधीनता-प्रेमियोंके समक्ष फ्रांसने एक उदाहरण रखा है। राजा और सम्राट्को हमलोग सदाके लिए विदा कर देंगे।

नेपो०—प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली सुदृढ़ नहीं कही जा सकती। अभी वह जाँचकी कसौटीपर है। यद्यपि फ्रांसमें वह हर तरहसे सुरक्षित है। लेकिन अगर एकसे ही काम चल जाय तो दो प्रजातन्त्रकी क्या आवश्यकता है। क्यो न आय-लैंण्ड फ्रांसका सहयोगी बन जाय और उसकी स्वतन्त्रता, यशकीर्ति और शक्तिका साझीदार हो। अमेरिकाका उदाहरण हमलोगोंके सामने है। एक संयुक्तराष्ट्रमें कई स्वतन्त्र राष्ट्र शामिल हैं। एक ही राष्ट्रपतिसे सबका काम चलता है।

उसकी आँखोंमें उद्दण्डता और प्रभुताका मद छा रहा था। निकृष्ट लोलुपता, विजयकी वह आकांक्षा जिसके सामने समूचा यूरोप तुच्छ प्रतीत होता था उसकी आँखोंमें नाचने लगा। उसकी इस आकांक्षाका आभास पाकर क्षण-

भरके लिए राबर्ट एमेट थर्रा उठा। लेकिन उसने अपनेको सम्हालकर दृढ़तासे कहा :—असम्भव ! आयलैंण्ड एकका बोझ फेंककर दूसरेका बोझ अपने सिरपर लादना नहीं चाहता।

नेपोलियनने धीरेसे कहा—आयलैंण्डमें फ्रांसका जो प्रतिनिधि रहेगा उसके पीछे फ्रांसकी समूची ताकत रहेगी। वह राजाकी उपाधिसे भी मुक्त रह सकता है।

इतना कहकर उसने राबर्टकी तरफ स्थिर दृष्टिसे देखा। लेकिन राबर्ट उसके भुलावेमें नहीं आ सकता था। उसने उसका अभिप्राय पूरी तरह समझा। उसने उसी तरह स्थिर दृष्टिसे नेपोलियनकी तरफ देखते हुए कहा—जिस तरह मैं आज ब्रिटेनका मुकाबला करनेके लिए तैयार हूँ उसी तरह उस समय मैं उसका मुकाबला करनेके लिए उठ खड़ा होऊँगा चाहे उसके लिए मुझे प्राणोंसे ही हाथ क्यों न धोना पड़े।

नेपोलियनका प्रस्ताव राबर्टने स्वीकार नहीं किया। वह क्रुद्ध हो उठा और कमरेमें इधर-उधर टहलने लगा। क्षणभर बाद उसने फिर पूछा—क्या आपको विश्वास है कि आप अपने प्रजातंत्रकी रक्षा कर सकेंगे?

राबर्ट—उस खतरेमें हमलोग पड़ना चाहते हैं। मुझे तो कोई आशंका नहीं है। नेपोलियनने उत्तेजित होकर कहा—मैं समझता हूँ कि आप गलतीपर हैं। लेकिन यह आपकी समस्या है मेरी नहीं। फ्रांससे मिल जानेपर आयलैंण्ड फ्रांसका एक अंग बन जायगा। संसारमें कोई उसकी ओर अंगुली नहीं उठा सकेगा। इस शर्तपर मैं उसे अधिकारमें कर लेनेके लिए तुरत सेना भेज सकता हूँ। फ्रांसकी स्वतंत्रता और प्रतिष्ठाका पूरा उपभोग आपका देश करेगा। कोई भी राष्ट्र इससे अधिककी क्या आशा कर सकता है।

राबर्ट—सम्भव नहीं है।

नेपोलियनने दोनों कन्धोंको हिलाकर कहा—यदि यह तुम्हें स्वीकार नहीं है तो मित्रताकी ही शर्त हमारे तुम्हारे बीच रहेगी। आयलैंड प्रजातंत्र और फ्रांस प्रजातंत्रमें भाईचारेका सम्बन्ध रहेगा। आप यहाँसे जाकर काममें लग जाइये और अपनी बात पूरी कीजिये। जिस दिन आप राजधानीपर कब्जा कर लेंगे उसी दिन मैं यहाँसे सेना डबलिनके लिए रवाना कर दूँगा।

राबर्ट एमेट आगा-पीछा करने लगा। उसे नेपोलियनकी बातपर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन उसके मुँहपर अपने दिलकी बात कह भी देना सम्भव नहीं था।

नेपोलियन उसके दिलकी बात समझ गया। बोला—आप अपने मनमे सोचते होंगे कि आपकी बातपर किस तरह भरोसा किया जाय। आपके मनमें इस तरहकी शंका उठना स्वाभाविक है। हमलोग अपने अपने देशके लिए ही पूर्ण जिम्मेदार हैं। मै सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि आप जो कह रहे हैं उसे आप पूरा करनेके लिए कटिबद्ध हैं। इस काममें हम दोनोका समान स्वार्थ है। मै अग्रेजोंको हर तरहसे पगु बना देना चाहता हूँ। आयलैंण्डसे उन्हें यदि मै भगा सका तो उन्हे बहुत जबर्दस्त धक्का लगेगा। मेरी यह अभिलाषा ही मेरी सबसे बड़ी गारंटी है।

राबर्ट—यह तो हो सकता है।

नेपोलियन—मै भी तो यही कहता हूँ कि कार्यारम्भ करके आप मुझे इतमीनान दिलाइये। आप अपने हिस्सेका काम पूरा कीजिये। मैं अपने हिस्सेका पूरा करूँगा।

राबर्ट—कबतक ?

नेपोलियन—यह आप जानें। मेरे लिए तो जितना जल्दी हो उतना ही अच्छा है। मेरा वादा एक सालतक कायम रहेगा।

राबर्ट—मैं कल ही आयलैंण्डके लिए प्रस्थान कर दूँगा। क्या मैं अपने कामकी प्रगतिकी सूचना आपको देता रहूँ?

नेपो०—नहीं, जबतक आप अपने काममें सफल नहीं हो जाते तबतक मैं आपसे कुछ सुनना नहीं चाहता। आयलैंण्ड और इंगलैण्ड दोनों जगह मेरे दूत हैं। आपके कामकी प्रगति-की सूचना मुझे बराबर मिलती रहेगी। आपकी सफलताके बाद सप्ताह भरके भीतर ही हमारी सेना वहाँ पहुँच जायगी। आपको और कुछ कहना है?

यह विदाईकी सूचना थी। एमेटने झुककर नमस्कार किया और चलता बना। उसे इस बातका पक्का विश्वास हो गया कि आयलैंण्डके नामपर नहीं, स्वतंत्रताके नामपर नहीं, पर अपने स्वार्थके लिए नेपोलियन अपना वादा अवश्य पूरा करेगा।

टेरेन्स ओगार्मेन भी राबर्ट एमेटके साथ आयलैंण्ड वापस जानेके लिए व्यग्र था। राबर्टका विरोध और जिनेटीका नम्र विनय उसे विचलित नहीं कर सका। लेकिन जब नेपोलियनको मालूम हुआ तो उसने साफ इनकार कर दिया। बोला—

तुम्हें अभी नहीं जाना होगा। यदि ये अपना वचन पूरा करेंगे तो हमें फ्रेंच सेना यहाँसे भेजनी होगी। उसी समय तुम फ्रेंच सेनाका संचालक बनकर जाना।'

टेरीके सन्तोषके लिए इतना काफी था। उसने अपना विचार स्थगित कर दिया।

२४

राबर्ट एमेट जिस तरह फ्रांस गया था उसी तरह चुपचाप लौट आया। गवर्नमेंण्टने भी इसे उपेक्षासे देखा। उसके पिताकी मृत्युके बाद उसे कई हजार पौंड मिले थे। उसका पाई-पाई उसने अपने अध्यवसायकी सफलताके लिए लगा दिया। उसने अपने पुराने मकानमें डेरा दे दिया और चुपचाप आदमी तथा हथियार तैयार करने लगा। मेलची नीलनके सहयोग तथा तत्परतासे आरम्भमें उसका काम बिना किसी विघ्नबाधाके सहजमें चल निकला।

उसने समझा था कि ट्रिनटी कालेनका उसका संघ टूट गया होगा और सब सदस्य तितर बितर हो गये होंगे। उसकी कल्पनाके प्रतिकूल वह और भी दृढ़ हो गया था, सदस्योंकी संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गयी थी और उनमें पूरा उत्साह था। उसकी अनुपस्थितिमें नीलन ही उसका संचालन कर रहा था। उसने अपने साथियोंको इतमीनान दिलाया था कि एमेटकी फ्रांसयात्रा विफल नहीं होगी, वह सहायता लेकर ही आवेगा। इससे उसके साथियोंका उत्साह भंग नहीं हुआ था।

एमेटके लौट आनेपर क्रान्तिकी सफलताके लिए वह उसके साथ जीतोड़ परिश्रम करने लगा। उसने अपना डेरा छोड़ दिया और एमेटके साथ ही रहने लगा। उनके इस काममें समस्त आयलैंण्डकी सहानुभूति थी। जहाँसे उन्हें मददकी तनिक भी आशा नहीं थी, वहाँसे भी उन्हें मददके वचन मिलने लगे।

हथियार और गोलाबारूद संग्रह करनेके लिए दो गोदाम ठीक किये गये। एक पैट्रिक स्ट्रीटमें था—इसकी देखरेखका भार

नीलनके ऊपर था। और दूसरा टामसस्ट्रीटमें—इसकी देखरेखका भार एमेटके ऊपर था। यह अध्यवसाय खतरेसे भरा था तो भी उसमें हाथ बटानेके लिए आदमियोंकी कमी नहीं रही। नीलन सबसे ज्यादा उत्साहपूर्ण और आशान्वित था। उसका आत्मविश्वास देखकर विस्मय होता था। भय और असफलताका नाम लेते ही वह हँस पड़ता था। लेकिन एमेट उतना आशापूर्ण नहीं था तो भी वह कटिबद्ध था।

दोनों साथ ही एक ही मकानमें अगल-बगलके कमरेमें रहते थे। दोनों कमरोंके बीच उन्होंने गुप्त मार्ग बना लिया था। इस तरह भाग जानेके लिए उन्होंने दो रास्ते तैयार कर लिये थे। वे ज्यादातर डेरेपर ही रहते थे। वे शामको गोदाममें जाते थे। कभी-कभी वहाँ रातभर काम करते थे और सवेरा होते-होते घर वापस आ जाते थे। घरका काम-काज करनेके लिए उन्होंने एक दाई रख ली थी जो कानकी बहरी और खफ्त थी लेकिन थी ईमानदार।

उनके हाथमें इतना ज्यादा काम था कि किसी दूसरी ओर ध्यान देनेका उन्हें अवसर ही नहीं मिलता था। सैनिक भर्ती करना, उन्हें आवश्यक हिदायत देना, हथियार बटोरना, डबलिन कैसिल तथा शहरपर कब्जा करनेका उपाय सोचना इन्हीं कामोंमें वे रात-दिन व्यस्त रहते थे।

एमेटके वापस आनेके एक मास बाद एक दिन दोनों मित्र एमेटके कमरेमें जलपान करने बैठे। बूढ़ी दाईको गठियाने पकड़ लिया था इसलिए जलपान तैयार करनेका भार नीलनके ऊपर पड़ा था। उन्होंने दरवाजा चारों ओरसे बन्द कर दिया था। इसलिए निश्चिन्ततापूर्वक वे लोग सलाह-मशविरा कर रहे थे। टेबुलपर कागज-पत्र और नक्शे फैले हुए थे। वे लोग

बातचीतमें इतने व्यस्त थे कि उन्हें दरवाजा खुलने तथा किसीके भीतर प्रवेश करनेका पतातक नहीं चल सका। नीलन सामनेकी तरफ मुँह करके बैठा था। अचानक उसने सिर उठाया तो विस्मयसे अवाक् रह गया। मुँहकी बात मुँहमे ही रह गयी। उसके चेहरेका यह भाव देखते ही एमेट·का हाथ उसके सीनेपर चला गया जहाँ पिस्तौल थी। साथ ही वह दरवाजेकी तरफ मुड़ गया जिधर नीलनकी टकटकी उस समय भी लगी हुई थी।

उसने देखा कि दरवाजेके बीचोबीच एक युवती खड़ी उनकी ओर देखकर मुस्कुरा रही है। उसे देखते ही एमेटने कहा—अरे-यह तो अनी डेवलिन है ?

अनी कमरेमें घुस गयी और दरवाजा सावधानीसे बन्द करते हुए उसने कहा :—आपने क्या कोई भूत समझा था ? मैं यहाँ आपके साथ रहनेके लिए आयी हूँ।"

इतना कहकर वह टेबुलको साफ करने लगी।

नीलन उसे आँखें फाड़ फाड़कर देखनेल गा। विस्मयका स्थान उल्लासने ग्रहण कर लिया था।

अनीने उसकी उपेक्षा करते हुए कहा :—मुझे आपको कुछ सन्देश देना है।

नीलन—मेरी चिन्ता मत करो। जो कुछ कहना हो कह दो।

अनी शुरूसे ही नीलनसे घृणा करती थी। पूर्ण उपेक्षाका भाव दिखाते हुए उसने कहा—आपकी मुझे चिन्ता नहीं है। लेकिन सम्वाद उन्हे अकेलेमें ही कहना है।

नीलन—अच्छी बात है। तब मैं यहाँसे चला जाता हूँ।

कहनेको तो वह कह गया लेकिन उसकी बात सुननेकी गरजसे वह वहीं अड़ा रह गया। उसकी आँखें कभी एमेटको देखतीं और कभी अनीको।

एमेटके प्रति वह हमेशा श्रद्धाका भाव ही प्रकट करता रहता था, लेकिन इस समय अनी डेवलिनके आ जाने और इस तरह बातें करनेसे उसका वह भाव जाता रहा। उसने उद्दण्डताके साथ कहा—मैं तुम्हें उनकी संगतमें छोड़कर जाता हूँ। यदि प्रणय प्रसंग और संग्राम दोनोंमें तुम्हें सफलता मिल गयी तब तो तुम सरीखा भाग्यवान् कोई नहीं होगा। सम्वाद अच्छी तरह मिल जानेके बाद शायद—'

एमेटने घूरकर उसकी ओर देखा। नीलन बीचमें ही चुप हो गया।

एमेटने क्रुद्ध होकर कहा—इससे तुम्हारा मतलब ?

नीलन भीगी बिल्ली बन गया। धीरेसे बोला—कुछ नहीं। चाहे मेरा जो भी अभिप्राय रहा हो पर मुझे इस बातका खेद है कि मेरी बातसे तुम्हें कष्ट पहुँचा।

एमेट—मुझे कोई कष्ट नहीं पहुँचा। लेकिन तुम्हारे मुँहसे इस तरहकी बात सुनकर क्षणभरके लिए विस्मय अवश्य हुआ।

नीलन—मैं तो चला।

इतना कहकर उसने अनी डेवलिनकी ओर दृष्टि फेरी। उसकी आँखोंमें खून उतर आया था। वह चुपचाप कमरेसे बाहर हो गया। अनी दौड़कर दरवाजेतक गयी। झाँककर बाहर देखा और दरवाजा बन्द कर दिया।

'उसने कहा—मैं उसे घृणाकी दृष्टिसे देखती हूँ।'

वह उत्तेजित हो रही थी। उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था, साँस फूल रही थी।

एमेटको उसकी हालत देखकर हँसी आ गयी। उसने हँसकर कहा—अनी, तुम उसके साथ अन्याय कर रही हो। उसकी तबीयत तुमपर आ गयी है।

उसने सोचा था कि मजाकसे वह उसके क्रोधको ठंडा कर देगा, लेकिन इससे उसका क्रोध और भी भड़क उठा। उसने कहा—मुझे आपकी हँसी पसन्द नहीं है। हँसना ही है तो मेरी तरफसे मुँह फेर लीजिये। मैं सच कहती हूँ कि वह आदमी विश्वसनीय नहीं है।

एमेटने शान्तभावसे कहा—अनी! उसे मैं तुमसे अधिक जानती हूँ। वह फौलादकी तरह ठोस है। उसकी तरफसे तुम निश्चिन्त रहो। हाँ, तुमने अभी सन्देशकी चर्चा की थी। क्या कुमारी करेनने कोई सन्देश भेजा है? वे अच्छी तरह है न? क्या कोई खत है।

अनीके चेहरेका भाव तुरत बदल गया। जितनी तेजीसे उस-पर ललाई दौड़ गयी थी उतनी ही जल्दी वह पीला पड़ गया। एमेटकी यह आतुरता देखकर उसका हृदय व्यथित हो उठा। उसने साहस बटोरकर कहा—न तो कोई खत ही उन्होंने दिया है और न कोई लम्बा-चौड़ा सम्वाद ही है। आप उनसे भेट करने क्यो नही आये?

एमेट—क्या वे मिलनेके लिए बहुत उत्सुक है?

अनी—यदि वे उत्सुक न होती तो मुझे क्यो भेजती।

एमेट—अनी! तुम उनसे जरूर कह देना कि मै उन्हे खिन्न करना नहा चाहता था। मै सफल मनोरथ होकर ही

उनके सामने जाऊँगा अन्यथा अब कभी भेंट नहीं होगी। उनसे दूर रहनेमें मुझे जो व्यथा हो रही है उसे वे क्या समझेंगी।

अनीने रुखाईसे कहा—जो कुछ कहना हो आप स्वयं उनसे कहें। लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी जबान नम्र हो गयी। उसने कहा—आपके मुँहसे ही सब बातें सुनना वे अधिक पसन्द करेंगी। लेकिन यह सन्देश लेकर मैं नहीं आयी हूँ। उन्होंने मुझे आपको सचेत करनेके लिए भेजा है। यह सम्वाद आपतक भेज देनेके लिए वे बहुत ही व्यग्र थीं।

इतना कहकर वह मुस्कराने लगी। उसकी मुस्कराहटमें व्यंग्य था। उसने कहा—सच बात यह है कि आपके लिए वे बहुत ही भयभीत हो उठी हैं। इसीलिए उन्होंने मुझे अपने यहाँसे भेज दिया है।

एमेट—तुम्हें भेज दिया है?

अनी—आपकी देख-रेखके लिए अपने यहाँसे भेज दिया है। आपको उनके यहाँ जाना चाहिए था।

एमेट—मैंने सोचा कि शायद वे मेरा स्वागत न करें इसके बाद अचानक प्रसंगको बदलते हुए उसने कहा:—अनी! तुमने सदा सच्चे मित्रकी भाँति मेरा साथ दिया है।

इतना सुनते ही अनीका चेहरा खिल उठा। उसने आँखें नीची करके कहा—मैं सदा आपकी सच्ची मित्राणी बनी रहना चाहती हूँ।

एमेट—लेकिन हमलोगोंने बहुत बड़े खतरेका काम हाथमें लिया है। अधिकारीवर्ग उसे द्रोह कहते हैं और हमलोगोंको विद्रोही। इसके प्रकट होनेके माने हैं मृत्युदण्ड! मैं तुम्हें यहाँ नहीं रहने देना चाहता।

अनी—यदि आपका वश चले तब ! लेकिन मैं तो रहूँगी ही ! क्या आप समझते है कि इसमें जो हैं वे मूर्ख हैं ! आपने जो कुछ कहा है उससे बहुत अधिक इसके बारेमे मैं जानती हूँ। मुझे आपके दोनों गोदामोंका पता है। वहाँ जो लोग काम करते हैं उन्हें भी मैं जानती हूँ। वहाँ जो कुछ होता है वह भी जानती हूँ। आप धोखेमे न रहे। मैं स्त्री होते हुए भी यह सब काम कर सकती हूँ और भेदको गुप्त रख सकती हूँ। क्या आपका ख्याल है कि पुरुषोंके अतिरिक्त अन्य किसीको देशसे प्रेम नहीं है और पुरुषोंके अतिरिक्त दूसरा कोई देशके लिए अपना प्राण निछावर नहीं कर सकता ?

उसने इन शब्दोंको बड़ी नरमीसे कहा था। लेकिन प्रत्येक शब्द प्रगाढ़ देश प्रेमसे ओतप्रोत था।

एकाएक अपना भाव बदलकर उसने कहा—मैं फिर उसी पुराने प्रश्नको दोहराती हूँ। आप उनसे मिलने क्यों नहीं आये। वे आपसे मिलनेके लिए बहुत व्यग्र हैं।

एमेट—मैंने तुम्हे अभी बतलाया है कि जिस काममें हमने हाथ डाला है वह बहुत ही खतरनाक है। मैं उनकी शान्ति भंग नहीं करना चाहता। यदि मैं सफल हुआ तब तो मैं अपनेको उनके प्रेमके योग्य समझूँगा और यदि मेरा यह अध्यवसाय असफल हुआ तब तो—उसने अपने दोनों कन्धोंको हिलाते हुए धीरेसे कहा—जहाँतक मेरा सम्बन्ध है सबका अन्त हो जायगा।

इतना सुनते ही एमेटके चेहरेपर अनीकी टकटकी लग गयी। उसकी दोनों आँखें आँसुओसे तर हो गयीं। उसने नरमीसे कहा—पुरुष समाज भी विचित्र होता है। आपको उनकी शान्ति भंग करनेका भय है। तब आपकी समझमें

स्त्रियोंका हृदय किस धातुसे बना है। आप यह समझते हैं कि यह जानकर भी कि उसके प्रेमपात्र आगके साथ खेल रहे हैं वे आनन्दका जीवन बिता रही होंगी। आपको समझना चाहिए कि जब आपने इस तरहके खतरनाक काममें हाथ डाल रखा है तब उन्हें किसी प्रकार भी शान्ति नहीं मिल सकती। आपसे क्षणिक भेंट थी आपके दो शब्द उन्हें कितनी सान्त्वना दे सकते हैं।

एमेटने अधीर होकर कहा—उनसे न मिलकर मैं कितनी व्यथाका अनुभव कर रहा हूँ। क्या वे मुझसे मिलेंगी? कब और कहाँ?

अनीने दुष्टताके साथ कहा—यह सन्देशसे बाहरकी बात है। मुझे सिर्फ इतना ही आदेश मिला है कि यहाँ आपके साथ रहूँ, आपकी देख-भाल करूँ, आपको समयपर खाने-पीनेकी व्यवस्था किया करूँ। इसका मतलब तो मैं समझती हूँ और ईश्वरकी दयासे इसे पूरी तरह सम्पन्न कर लूँगी। लेकिन कुमारी करेनके समान भद्र महिला इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकती, कहनेकी बात तो दूर है—कि वे मेरे द्वारा अपने प्रेमपात्रके पास मिलनेके लिए सन्देश भेजें।

एमेटने उसके मजाकके भावको नहीं समझा। उसने उसकी बातको निश्चित सत्य माना। उन्होंने गम्भीर होकर कहा—तुम ठीक कहती हो अनी! यह मेरी भूल थी!

इतना कहते कहते एमेटका चेहरा उदास हो गया। अनीका हृदय करुणासे भर गया। साथ ही उसे हँसी भी आ गयी। इस बार उसने इस तरह मुँह बनाकर बात कही कि एमेट विस्मयसे उसको देखने लगा। उसने कहा—'लेकिन आजकल कुमारी करेनको डाडर नदीके किनारेवाली सड़कपर टहलनेकी

आदत पड़ गयी है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कल रात-को आठ बजेके बाद वे उधर टहलने अवश्य जायँगी। रात भी चाँदनी है।

एमेटका चेहरा खिल उठा। उसके गालोंपर लाली दौड़ गयी। प्रसन्नताके उद्वेगमें उसने अनीका दोनों हाथ कसकर पकड़ लिया।

लेकिन अनीने अपने हाथोंको इस तरह खींच लिया मानो वे लपटसे छू गये हों। उसका चेहरा सुर्ख हो गया। उसके हृदयमें न जाने कौनसा गुप्तभाव जाग उठा। वह निर्निमेष दृष्टिसे एमेटको चुपचाप देखती रही।

२५

इसी समय किसीने दरवाजेको जोरोंसे खटखटाया। दूसरे ही क्षण उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही नीलन धक्का देकर ताला तोड़ता हुआ कमरेमें घुस आया। उसने नीची निगाह दोनोंपर डाली। वे दोनो आमने-सामने खड़े एक दूसरेको देख रहे थे। एमेटके चेहरेपर विस्मय था और अनी डेवलिनके चेहरे-पर आवेश। उसके पापी मनने इसका उलटा ही अर्थ लगाया। उस ख्यालसे उसका सारा शरीर जल गया। इसके बाद अनीकी उपस्थितिकी सर्वथा उपेक्षा करते हुए उसने एमेटसे कहा—पेट्रिक स्ट्रीटवाले गोदाममें जो राकेट बनाया जा रहा है उसमें कुछ गड़बड़ी हो गयी है। लोगोंको भय है कि वहाँ विस्फोट हो जायगा। तुम्हीं ऐसे हो जो उसे सम्हालकर ठीक कर सकते हो।

यह बात सुनते ही एमेटने अपना हैट उठानेके लिए हाथ बढ़ाया और अनीसे कहा—तुम्हें अनेक धन्यवाद है अनी! इस समय तो मैं चला।

अनी—भगवान आपकी सहायता करें। मुझे धन्यवाद की जरूरत नहीं है।

अनीका सारा उत्साह भङ्ग हो गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया। एमेटके चले जानेपर मेलचीने अनीसे पूछा—अभी तुम क्रुद्ध क्यों हो रही थी।

नीलनकी आवाज सुनकर वह चौंक पड़ी। उसे उसका एकदम ध्यान नहीं था। उसने निगाह ऊपर उठाकर देखा तो दो चमकीली आँखें उसे घूरकर देख रही थीं उनमें वासनाकी स्पष्ट छाप थी।

मेलचीने अनुराग-भरे शब्दोंमें पूछा—क्या उसने तुम्हारा चुम्बन लेना चाहा था? मुझे हमेशा इस बातकी आशंका रही है कि इन मामलोंमें राबर्टकी प्रवृत्ति बड़ी ही नीच रही है। लेकिन मैं उन्हें दोष क्यों दूँ। तुम्हारा आकर्षण ही ऐसा है। लेकिन तुम्हें इतना क्षुब्ध नहीं होना चाहिए। यदि कोई योग्य व्यक्ति चुम्बन कर ही ले तो कोई हर्ज नहीं।

इतना कहकर वह दो कदम आगे बढ़ गया। अनी दो कदम पीछे हट गयी। लेकिन उसके चेहरेपर भयके कोई लक्षण नहीं थे। उसने कहा—यदि उपयुक्त व्यक्ति चुम्बन ले तो।"

नीलन—यह तो विश्वासकी बात है। हमारे मित्र राबर्ट-में कुछ खास गुण है। उसे देखते ही स्त्रियाँ अपना सर्वस्व उसपर जैसा मुझपर निछावर कर देती हैं

अनीने धीरेसे कहा—यदि तुममें उनका जूता झाड़नेकी भी योग्यता होती तो तुम्हारे लिए यह गौरवकी बात होती।

अपने शब्दोंमें वह जितना ज्यादा घृणाके भाव भर सकती थी उतनी घृणाके साथ उसने उपर्युक्त शब्दोंको कहा।

घृणासे मेलचींका चेहरा विकृत हो गया। लेकिन उसे विश्वास नहीं हुआ कि अनी ये बातें हृदयसे कह रही है। उसने उसे केवल मजाक समझा। उसने हँसकर कहा—तब तो मालूम होता है कि हमलोगोंका प्रणय अद्भुत तरीकेसे आरम्भ होगा। उसे चील्ह झपट्टाका नाम दिया जा सकता है।

इतना कहकर उसे पकड़नेके लिए वह झपटकर आगे बढ़ा।

अनी इसके लिए पहलेसे ही तैयार थी। वह फुर्तीसे बगलमें हट गयी और उसके गालपर ऐसा तमाचा जड़ दिया मानो किसीने पिस्तौल चलायी हो।

अचानक थप्पड़ लग जानेसे वह चौंधियाकर पीछे हट गया। वह क्रोध और काम-वासनासे उत्तेजित हो उठा। चाँटेसे उसका गाल जल रहा था। दर्द और अपमानसे वह पागल हो उठा। उसने उसपर उसी क्षण दूसरा आक्रमण भी किया होता लेकिन इसी समय अनीने टेबुलपरसे छुरा उठा लिया। उसकी आँखोंमें कुछ ऐसा तेज था कि नीलनका कायर हृदय उसके सामने भींगी बिल्ली बन गया।

क्षणभर दोनों एक दूसरेको चुपचाप देखते रहे। अन्तमें नीलनने मुँह बनाकर कहा—मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं देना चाहता था। यदि एकाध चुम्बन ले ही लेता तो इससे तुम्हारी कोई क्षति न हो जाती। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं करना चाहता था। लेकिन जैसा तुम्हारा मिजाज कड़ा है वैसा ही तुम्हारा हाथ भी मजबूत है। इससे मेरा अनुराग और भी बढ़ गया।

उत्तरमें अनीने हँसकर कहा—यदि इससे तुम्हें सन्तोष है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन इस तरहकी हर-कतोंका सदा यही फल मिलेगा। इसे मत भूल जाना।

नीलनने सूखी हँसीके साथ भुनभुनाते हुए कहा—अच्छी बात है, कभी तो मेरी बारी आवेगी।"

इतना कहकर वह तेजीसे कमरेसे बाहर हो गया।

अनी खड़ी मुस्कराती रही। लेकिन उसके बाहर होते ही उसकी सारी प्रसन्नता गायब हो गयी। उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। उसकी सारी दृढ़ता शिथिल पड़ गयी। वह कटे पेड़की तरह कौंचपर जा गिरी और बिलख-बिलखकर रोने लगी। लेकिन उसका यह करुण क्रन्दन एमेटके लिए था। उसने सिसकते हुए कहा—वह उसे चाहता है और मैंने उसे उसके पास भेज दिया है। न तो मैं उसके लिए कुछ हूँ और न उसे मेरी कोई परवा है। मैं उसके लिए अपना सर्वस्व निछा-वर कर सकती हूँ। जहाँ उसका पसीना गिरे वहाँ मैं खुशी-खुशी अपना खून बहा सकती हूँ। लेकिन दासीसे बढ़कर मेरी कदर नहीं है। दो-चार मधुर शब्दोंसे अधिक मेरे लिए उसके पास कुछ नहीं है। कुमारी करेनने भी तो यही कहा था—'अनी! तुम उनके साथ जाकर रहो और मेरी खातिर उनकी देख-भाल करो।' कुमारी! मैं तुम्हारी खातिर उनकी देख-भाल नहीं करूँगी, बल्कि उनकी ही खातिर! उनकी ही रक्षाके लिए। पर उनकी देखभाल और रक्षामें चाहे मैं अपनेको होम ही क्यों न कर दूँ। वे इसका क्या पुरस्कार देंगे। आजकी तरह सूखा धन्यवाद! यही तो मेरे भाग्यमें बदा है।

नीलन इस तरह अपमानित होकर वहाँसे निकला और पैट्रिक स्ट्रीटके गोदामकी तरफ चला। उसके हृदयमें प्रणय

और विश्वासघातके विचार विविध कामनाओंका सृजन कर रहे थे। लेकिन अनीके हृदयमें उसका ख्याल एक बारके लिए भी नहीं आया।

२६

उस रात एमेटको नींद नहीं आयी। उसका दूसरा दिन भी व्यग्रतामें बीता। क्रान्तिके जिस आयोजनके लिए उसने अपना जीवन निछावर कर दिया था वह भी उस दिन उसे अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सका। उसकी दशा देखकर तो यही कहना पड़ता है कि प्रणयके सामने सबको सिर झुकाना पड़ता है। सभी भावनाओंको वह पराश्त कर देता है।

उसे लेशमात्र भी आशा नहीं थी कि कुमारी करेनसे उसकी भेंट हो सकेगी। वह अपने मनमें कहता—मेरा इतना बड़ा भाग्य कहाँ कि उस देवीके दर्शन मुझे इतने सहजमें प्राप्त हों। अनीने उन्हें समझनेमें जरूर भूल की है। उन्होंने जो कुछ कहा था उसका गलत ही अर्थ इसने लगा लिया है अथवा मैंने ही अनीको समझनेमें भूल की है।

उसके हृदयमें इसी तरहका भीषण द्वन्द्व मचा हुआ था तो भी उसके निवारणके लिए उसने अनीसे कुछ पूछना उचित नहीं समझा यद्यपि वह दिनभर उसके पास रही।

उसे यह दृढ़ धारणा थी कि कुमारी करेन उससे मिलने कदापि नहीं आवेंगी तो भी वह नियत समयसे एक घण्टा पहले ही नियत स्थानपर पहुँच गया। वह इधर-उधर इतनी तेजीसे

टहलने लगा मानो समय भी उसके वेगका साथ देगा और शीघ्र ही घट जायगा। आधा घण्टा इसी तरह टहलते रहनेके बाद वह धीरे-धीरे और भी निराश होने लगा। इसी समय उसकी निगाह सड़कके उस पार पड़ी। उसने देखा कि सराह उसीकी तरफ चली आ रही है।

विस्मय और आह्लादसे क्षण भरके लिए उसके हृदयकी गति रुक-सी गयी। उस समय उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उसका आना वह निश्चित समझता था; शंकाके लिए उसके हृदयमें कोई स्थान नहीं था।

पेड़ोंकी घनी छायाके बीचसे होकर वह तेजीसे उधर ही चली आ रही थी। चाँदनीके शुभ्र प्रकाशमें उसकी परछाईं नदीकी तरङ्गोंसे खेल कर रही थी।

एमेटको देखते ही उसने अपने दोनों हाथ बढ़ा दिये। एमेटने उसे दोनों भुजाओंके बीच समेट लिया। वह बच्चोंकी तरह उससे लिपट गयी। बिना किसी शिष्टाचार, बिना किसी आडम्बरके उसने कहा—रावर्ट, तुम इतने दिन क्यों मुझसे दूर रहे? तुम अनुमान नहीं कर सकते कि इससे मुझे कितना कष्ट हुआ है।

दोनों उसी जगह जा बैठे जहाँ दोनोंका प्रथम प्रणय मिलन हुआ था। उसकी गोदमें उसी तरह लोटती हुई उसने फिर पूछा—तुम इतने दिनतक मेरे यहाँ क्यों नहीं आये? मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही। तुम्हें देखनेके लिए व्यग्र थी मैं।

उसके होठोंपर मुस्कुराहट थी लेकिन उसकी हिरण-सी आँखोंमें आँसू भरे हुए थे।

धीरेसे उसका चुम्बन करते हुए एमेटने कहा—हृदयेश्वरी! तुम्हारा स्नेह ही मेरे रास्तेमें बाधक था। मैं खतरेसे घिरा

लैरी—यह कुछ नहीं है। साधारण चोट है। आप इसकी चिन्ता न करे। मै इस अवस्थामे भी जो आदेश हो, उसका पालन करनेके लिए तैयार हूँ।

एमेटने अधीर होकर कहा—"अब कुछ नहीं हो सकता।" इसके बाद उसने अपने साथियोंसे कहा—किलेपर आज हमला नही किया जा सकता। जिस किसी भी तरह हो उन्हें हमलोगोकी व्यवस्थाका पता लग गया और उन लोगोंने उसे व्यर्थ कर दिया। आपलोग एक एक करके यहाँसे चले जायँ। इस बीच हमलोगोंको डायरसे मिलकर उसके आदमियोको ठीक करनेका मौका भी मिल जायगा और हमलोग विश्वास-घातीका पता भी लगा सकेंगे।

सभी लोगोंको यह राय पसन्द आयी। इस विश्वासघातके कारण सबका दिल बैठ गया था लेकिन कदम पीछे रखनेकी बात मुँहसे निकालनेका किसीको साहस नही था। शत्रुको छकानेका मौका हाथसे जाता रहा। उस हालतमें किलेपर हमला करना पागलपन होता, इसलिए उसकी बात सबने मान ली।

इसके बाद वे लोग नीचेके तल्लेमें आये जहाँ विद्रोहियोंकी जमात आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रही थी। वे लोग खतरेको भली-भाँति समझते थे तो भी वे धीर और शान्त थे।

एमेटको देखकर वे प्रसन्नतासे कुछ कहने ही जा रहे थे कि एमेटने हाथके इशारेसे उन्हें रोककर कुछ कहना चाहा। लेकिन उसके मुँह खोलनेके पहले ही कमरेका द्वार खुल गया और लोगोंने मेलची नीलनको चौखटपर खड़े देखा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसके केश बिखरे थे, उसकी आँखें जङ्गली जानवरोंकी तरह चमक रही थीं। उसके दाहने हाथमें

नङ्गी तलवार थी। उसकी सूरत पागलों सी हो रही थी। एमेटको देखते ही वह चिल्ला उठाः—

"हमलोगोंपर आक्रमण करनेके लिए सैनिक आ रहे हैं यदि हमलोग तुरत उनका मुकावला नहीं करते तो हमलोग बुरी तरह घिर जायँगे और कुत्तोंकी मौत मारे जायँगे।"

२६

नीलनकी जवानी पुलिसके धावाकी वात सुनकर सभी सन्नाटेमें आ गये। सबकी आँखें एमेटका मुँह निहारने लगी। यदि क्षणभर भी वह सोचने-विचारनेमें लगाता तो चारों ओर आतंक छा जाता।

एमेटने तुरत अपना कर्तव्य निश्चय किया। उसने कहा— भाइयो! हमलोग रास्तेमें ही सैनिकोंका मुकावला करेंगे और उन्हें क्षणभरमें ही मार भगावेंगे। मेरे पीछे चले आओ। यदि हमलोगोंने हिम्मतसे काम लिया तो अब भी हम किलेको दखल कर सकते हैं। कब्जा कर लेनेपर हमलोग सरकारी फौजके मुकावले तबतक इसपर अधिकार वनाये रह सकते हैं जबतक कि हमें वाहरी सहायता नही पहुँच जाती।

इतना कहकर उसने अपनी तलवार म्यानसे खीच ली और सड़कमें आ गया। उसके पीछे उसके सभी साथी थे। आक्रमणका सिगनल था रॉकेट फेंकना। इसे जमीनपर पटकते ही भयंकर विस्फोट हुआ और इसके प्रकाशसे दिशाएँ चमक उठीं। सड़कपर भगदड़ मच गयी। सभी लोग घवराकर

हुआ हूँ। मैं तुम्हारे जीवनको अशान्त और संकटमय नहीं बनाना चाहता।

इसपर सराहने भर्त्सनाके साथ कहा:—यही तुम्हारे प्रणयका सबूत है। इसका मतलब तो यही हुआ कि यदि मैं खतरेमें होऊँगी तो तुम मुझसे दूर रहनेका यत्न करोगे!

एमेट—तुमने ऐसी कठोर कल्पना कैसे कर ली? इस जीवनको एक नहीं हजार बार कुर्बान कर मैं तुम्हारी रक्षा करना अपना कर्तव्य समझूँगा।

सराह—तब क्या इसी तरहका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर नहीं है? विपत्तिके बादल तुम्हारे सिरपर मँडरा रहे हैं। मैं इसे जानती हूँ। ऐसे समय भी तुम मुझसे दूर रहना चाहते हो और मुझे दूर रखना चाहते हो। तुम मेरी शान्तिको भंग नहीं करना चाहते लेकिन जिसे इन विपत्तियोंका क्षण क्षण आभास मिलता रहता है और जो इनके डरसे हर क्षण आँसू बहाया करती है उसे शान्ति कैसे मिल सकती है? तुम नहीं समझ सकते कि मैं कितनी उद्विग्न हूँ। जब बात मेरे बरदाश्तसे बाहर हो गयी तब मैंने अनीको तुम्हारे यहाँ भेजकर तुम्हें बुलवाया है। तुम अपने काममें व्यस्त रहते हो। इसलिये विपत्तिकी तुम्हें चिन्ता नहीं रहती। फिर तुम पुरुष हो। तुममें साहस है। तुम साहससे उसका सामना कर लेते हो। लेकिन मैं अबला नारी हूँ। न तो मुझमें साहस है और न धैर्य। मेरे भाग्यमें तो रोना ही बदा है।

वह काँप रही थी। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह निकली। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा:—मेरे राबर्ट! तुम यह क्या कर रहे हो? हमलोगोंका बिछोह क्यों हो?

एमेट—यह बिछोह क्षणिक है। इसके बाद ········।

उसने बाधा देते हुए कहाः—शायद "इसके बाद" की नौबत ही नहीं आवे। बीचहीमें सबका अन्त हो जाय।

एमेट—विजयसे ही सुखकी प्राप्ति होती है।

सराह—सफलतासे! लेकिन असफलताका परिणाम तो मृत्यु है। केवल सम्भावनापर तुम अपनी जानको खतरेमें क्यों डालोगे! यदि तुम्हारा प्रेम सच्चा है तो तुम इससे विमुख हो जाओ।

उसकी इस आर्तवाणीसे एमेटको बड़ी व्यथा हुई। उसकी कातर आँखोंको देखकर वह विचलित हो उठा। उससे साफ साफ कुछ कहा नहीं गया। उसने लड़खड़ाते शब्दोंमें देशके प्रति अपने कर्त्तव्यका उसे स्मरण दिलाया।

इसका उत्तर सराहने बड़ी निर्दयतासे दियाः—लेकिन तुम्हीं यह संकट अपने सिरपर क्यों उठाओ। क्या अकेले तुम्हींने इसका ठेका ले रखा है। तुम स्वयं इस खतरेमें क्यों जाना चाहते हो। तुम्हारा जीवन तुम्हारा अपना है। तुम इसका मनमाना उपयोग कर सकते हो। मैं तुम्हारी प्रणयिनी हूँ। इससे तुमपर मेरा अधिकार है। मैं अपना सब कुछ तुमपर निछावर कर चुकी हूँ। क्या बदलेमें तुम मुझे कुछ भी नहीं देना चाहते? हम-लोगोंका जीवन कितने सुखसे बीतेगा! क्या सुख भोगनेका हम लोगोंको कोई हक नहीं है? तुम इसे क्यों ठुकरा रहे हो? यह संसार सुख भोगनेके लिये ही तो बना है। तुम क्यों मेरा जीवन नष्ट करना चाहते हो। इस तरह बिलख बिलखकर रोनेके लिये तुम क्यों मुझे छोड़ जाना चाहते हो।

इतना कहकर वह सिसक सिसककर रोने लगी। एमेटने उसके आँसू पोंछे और लगा उसे सान्त्वना देने। सराहने अपने

भुजपाशोंको उसकी गर्दनमें डालकर नरमीसे कहाः—मेरे लिये एमेट ! सिर्फ मेरे लिये तुम मान जाओ।

सराहकी आँखोंमें प्रेमकी वह जादूभरी अपील थी कि उसे देखकर एमेटका भी दृढ़ हृदय धीरे धीरे पिघलने लगा। सारा भविष्य मूर्त्तरूप होकर उसके सामने आकर खड़ा हो गया। उसने प्रत्यक्ष देखा कि कितनी बड़ी क्षति उसे उठानी पड़ रही है। सुखमय भविष्य उसके सामने खड़ा होकर मुस्कुराने लगा। जिसे उसने अपना हृदय सौंप दिया था, वह उसकी बगलमें खड़ी अपने प्रणयका इजहार कर रही थी। उसने देखा कि सराहकी आँखें मूक प्रार्थना कर ही हैं। उसका हृदय दयार्द्र हो उठा। वह फिसलकर गिरनेहीवाला था कि उसका पुरुषत्व सहसा जागृत हो उठा। उसने सम्हलकर कहा !—रानी ! यह असम्भव है। मेरी सारी प्रतिष्ठा दाँवपर है। मेरे ऊपर विश्वास कर बहुतोंने अपना जीवन खतरेमें डाल दिया है।

सराहने जोर देकर कहाः—अभी भी समय है। सबकी रक्षा हो सकती है।

एमेट—वे लोग इतने आगे बढ़ गये हैं कि अब सही सलामत पीछे कदम नही हटा सकते। यदि यह सम्भव भी हो तो वे पीछे हटनेवाले नही हैं क्योंकि वे दृढ़निश्चयी और अधीर है। देशकी पीड़ाको उन्होंने अपनी पीड़ा बना ली है। इस काममें मेरा सबसे बड़ा सहायक मेलची नीलन है। वह सदा मुझे प्रोत्साहित करता रहता है। उसने प्रतिज्ञा की है कि या तो सफलता हाथ लगेगी या मर मिटेगा। यदि मैं इस नाजुक समयमें मुँह मोड़ लूँ तो मैं उनकी घृणा भले ही सह लूँ लेकिन मैं स्वयं अपनी घृणा नही सह सकूँगा। मैं स्वयं अपनेको कायर और विश्वासघाती समझूँगा और तुम भी मुझसे घृणा करने लगोगी।

सराह—कभी नहीं, कभी नहीं।

एमेट—यह सम्भव ही नहीं है। तुम्हारी निर्मल प्रकृति इस तरहकी नीचता कभी बरदाश्त नहीं कर सकती। इस समय भी तुम्हारी अन्तरात्मा यही कहती होगी कि इस तरह अपने साथियों और अपने दोस्तोंके साथ विश्वासघात करना कायरता और नीचता है। जिसे तुम हृदयसे प्यार करती हो उसका सिर तुम कभी नीचा नहीं होने देना चाहोगी।

अपने चेहरेको उसके विशाल वक्षस्थलमें छिपाते हुए उसने धीरेसे कहाः—मैं जिसे प्यार करती हूँ उसे इस क्रूरताके साथ मरने नहीं देना चाहती।

उसे अब लेशमात्र भी आशा नहीं रह गयी थी। उसे अच्छी तरह विश्वास हो गया था कि उसकी माँग असम्भव है।

एमेट—जिसे तुम प्यार करती हो उसे तुम अपमानसे बचाओगी, उसमें फँसनेके लिये प्रलोभन नहीं दोगी।

सराहकी आँखें नीचेकी ओर झुक गयीं। इसका उसके पास कोई उत्तर नहीं था। न तो उसे इस बातकी आशा ही थी और न वह उसे अपने सदुद्देश्यसे हटाना ही चाहती थी, फिर भी वह नारीका हृदय था। भयसे वह काँप रही थी। उसने फिर धीरेसे कहाः—तुम मृत्युके मुखमें जानेके लिये मुझसे विदा ले रहे हो।

एमेट—ऐसा न कहो। मैं विजयके लिये तुमसे विदा ले रहा हूँ। जब मैं विजयी होकर लौटूँगा तो हमलोग सुखकी जिन्दगी बितायेंगे। उस दिन तुम्हारे पिता भी मेरी प्रशंसा करेंगे। मेरी हरकतोंसे आज वे दुःखी हैं और मुझे तुम्हारे योग्य नहीं समझते हैं। उस दिन वे भी मेरी पीठ ठोकेंगे।

२७

वह रात एमेटने किस तरह काटी इसके वर्णनकी यहाँ आवश्यकता नहीं। सवेरे उठते ही उसे फ्रांससे भेजा हुआ टेरीका पत्र मिला। उसने लिखा था—"ब्रिटेनकी नीचता, कमीनापन और बेईमानीसे शान्तिप्रिय फ्राँस ऊब उठा है इसलिये ब्रिटेनके साथ युद्ध बहुत जल्द छिड़नेवाला है।" इसके अलावा इधर उधरकी बहुतसी बातें थीं लेकिन आयलैंण्ड और उसके साथ जो अन्याय हो रहा था उसकी चर्चा उस पत्रमें नहीं थी। आयलैंण्डकी मददका वचन नेपोलियनने दिया था उसका भी कोई उल्लेख उस पत्रमें नहीं था। इस सम्बन्धमें उसने केवल मात्र इतना ही लिखकर टाल दिया था :—"इस सम्बन्धमें अगले पत्रमेंलिखूँगा। इस समय मैं केवल इतना ही लिख सकता हूँ कि अधीर नहीं होना, साहस और धैर्यसे काम लेना।"

इस पत्रसे एमेटको बड़ी निराशा हुई। जलपानके वक्त उसने नीलनके साथ इसपर विचार आरम्भ किया। इसी समय जलपानका कुछ सामान लेकर अनी वहाँ चली आयी। एमेटका भोजन इन दिनों एकदम कम हो गया था इसलिये उसे खिलाने पिलानेमें अनी सदा यत्नशील रहा करती थी।

अनी नीलनको सदा उपेक्षासे देखती थी। उसका ध्यान सदा एमेटपर रहता था तो भी नीलन उसके रूप लावण्यका सुधारस पीनेका एक भी अवसर खोता नहीं था। इस समय भी एमेटकी निगाह बचाकर वह अनीकी तरफ ललचाई आँखोंसे देखने लगा।

अनीके चले जानेपर उसने उस पत्रकी कड़ी आलोचना करते हुए कहा :—फ्रांसवाले सदाके लालची और कमीने हैं।

मैं कभी भी उनका विश्वास नहीं करता। हमलोगोंको अपने ही प्रयाससे अपनी आजादी प्राप्त करनी होगी। स्वतंत्रता प्राप्त कर लेनेपर वे लोग भले ही हमारी मदद करें। मैं तो क्षणभर भी ठहरना नहीं चाहता।

एमेट—लेकिन अभी तो हमलोगोंकी तैयारी पूरी नहीं हो सकी है। उसमें कुछ समय लगेगा।

नीलनने मुहँ बनाकर कहा :—मैं तैयारी और सतर्कतामें विश्वास नहीं करता। साहसके साथ आगे बढ़नेसे ही काम हो जायगा।

छोटे भाईकी उद्दण्डतापर जिस तरह बड़ा भाई हँस देता है उसी तरह नीलनकी बातोंको सुनकर एमेट हँस पड़ा। उसने कहा :—साहसका सबसे बड़ा दोस्त सतर्कता है। हमलोगोंको समयकी प्रतीक्षा अवश्य करनी चाहिये। हमलोगोंकी तैयारी ऐसी होनी चाहिये कि प्रथम प्रहारमें ही हमलोग बाजी मार लें। यदि पहला प्रयास असफल हुआ तो दूसरेका हमलोगोंको मौका ही नहीं मिलेगा।

क्षणभर तो वह अपने अचेतन साथीकी ओर देखकर दाँत पीसता रहा। लेकिन अनीकी तीव्र दृष्टि उसके ऊपर पड़ते ही वह स्थिर हो गया। उसने नम्र होकर कहा :—आपका कहना सही है। मैं ही गलतीपर हूँ। स्वदेशके साथ जो अन्याय हो रहा है उसने मुझे अधीर बना दिया है। हमलोगोंको अपनी तैयारी तेजीसे पूरी कर लेनी चाहिये क्योंकि जितने शीघ्र हमलोग प्रहार करेंगे उतनी ही सफलता निश्चित है।

इसके बाद दोनों दोस्त वहाँसे निकल और अपने अपने काम-पर चले गये। उनके चले जानेपर अनीने अपने मनमें कहा :—न जाने क्यों मेरा हृदय उस मेलची नीलनसे सदा शंकित

रहता है। इसकी हरकतें मुझे ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे बिल्ली अँधेरेमें चूहेकी घातमें बैठी हो। क्या ही अच्छा होता यदि मि० राबर्ट उसका साथ छोड़ देते और किसी अधिक विश्वासपात्र आदमीको अपने साथ रखते।

उस दिन अनाजके बोरोंमें भरकर अनेक हथियार और गोला बारूद बाहरसे आया था। नीलन रातको बहुत देरतक अपने आदमियोंके साथ पैट्रिक स्ट्रीटकी गोदाममे काम करता रहा। सभी बण्डलों और बोरों और पीपोंमेसे सामान निक-लवाकर उसने उन्हे ठीक जगह रखवा दिया। काम खतम कर सबलोग चले गये। अकेला नीलन गोदाममें रह गया। अभी पूरी तरह सवेरा भी नहीं हुआ था कि वह गोदामसे बाहर निक-लनेके लिये प्रस्तुत हुआ। उस समय उसके हाथमें एक पतली रस्सी थी उसका एक छोर गोदामके सबसे पिछले भागमें बारूद-के एक बोरेमें बँधा हुआ था। नीलनने धीरेसे सलाई जलाई और उस रस्सीके दूसरे छोरमें उसे लगा दिया। सलाईसे छू जाते ही उस रस्सीसे फुलझरीकी तरह चिनगारी निकलने लगी। नीलनने उसे जमीनपर रख दिया और दरवाजेमें ताला लगाकर वह वहाँसे चलता बना।

दो घंटे बाद भयंकर बिस्फोटसे डबलिन शहर थर्रा उठा। जिस समय पैट्रिक स्ट्रीटके गोदामके नष्ट होनेका सम्वाद एमेटके पास पहुँचा नीलन अनजान की तरह उसका चेहरा विस्मयके साथ देखने लगा।

भाग्यसे क्षति विशेष नही हुई। विस्फोटसे अगले हिस्सेकी छत जो गिरी तो उसने आगको वही दबा दिया। आगे तक वह बढ़ने नहीं पायी। इससे पिछले हिस्सेमें जो अस्त्र शस्त्र रखे हुए थे वे बेदाग बच गये। सन्देह तो अपने ही आदमियोंपर

हुआ लेकिन कुछ निश्चित पता नहीं लग सका। लेकिन इससे उनके कार्यक्रमको बहुत बड़ा धक्का लगा। नीलन तो क्रोधके मारे आपेसे बाहर हो रहा था। वह चिल्ला-चिल्लाकर यही कहता था कि किसी अपने ही आदमीने विश्वासघात किया है।

इसका सबसे बुरा परिणाम यह हुआ कि अधिकारि-वर्ग सतर्क हो गया। तलाशियोंकी धूम मच गयी। दूसरा गोदाम भी खतरेमें पड़ गया।

२८

मेलची बार-बार उतावलापन प्रकट करता रहा। वह बराबर यही कहता रहा कि अभी उठ खड़े होनेमें सफलता निश्चित है। अन्तमें एमेटको भी विवश होकर यही निश्चय करना पड़ा कि या तो तुरन्त कुछ किया जाय या हमेशाके लिए मुँह मोड़ लिया जाय।

एमेटको विश्वस्त रूपसे यह मालूम था कि आयर्लैण्डके उन्नीस काउन्टीके लोग अपनी सारी शक्तिके साथ विद्रोहमें योगदान देनेके लिए हर तरहसे तैयार हैं। लेकिन उचित यही समझा गया कि केवल तीन काउण्टी—डबलिन किलडेयर और विकलो—जो सबसे निकट थे—प्रथम हमलेमें शामिल किये जायँ। इनके चुने हुए लोग अचानक हमला करके डबलिन किलेपर अलग कर लें।

इनमें सबसे प्रधान बिकलोके सैनिक थे। इनका नेता प्रसिद्ध विद्रोही माइकेल डायर था। अपने प्रदेशके पहाड़ी रास्तोंकी उसे पूरी जानकारी थी। सन् १७९८ के विद्रोहके समयसे ही

वह बागी बन बैठा था लेकिन उसे पकड़नेके सरकारके सारे प्रयत्न व्यर्थ गये थे।

डायरने एमेटको वचन दिया था कि घण्टे-भरकी सूचनापर वह अपने हजार चुने हुए आदमियोंको लेकर गुप्त रूपसे डबलिन पहुँच जायगा। उसके आदमी शस्त्रसे सुसज्जित रहेंगे और कठिनसे कठिन काम करनेके लिए तैयार रहेंगे।

डायरका प्रस्ताव था कि कुछ चुने हुए आदमियोंको लेकर वह डबलिनमें छिपकर रहेगा और विद्रोह उठते ही वह बाकी आदमियोंको खबर देकर बुला ले। लेकिन नीलनने इस प्रस्तावका विरोध किया और ठीक समयपर उसके पास सूचना भेजनेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। ठीक समयपर सम्वाद पहुँचनेकी सारी व्यवस्था करके वह अपने पहाड़ी निवासको चला गया और सम्वादकी प्रतीक्षा करने लगा, लेकिन सम्वाद उसे मिला ही नहीं।

इधर एक सप्ताहसे एमेट दिन-रात तैयारीमें लगा रहा। डबलिन किलेके आसपासकी सड़कोंमें ऐसी व्यवस्था कर दी गयी कि सरकारी फौज वहाँतक निर्विघ्न नहीं पहुँच सके। शहरके प्रधान स्थानोंपर कब्जा कर लेनेकी भी सारी व्यवस्था कर दी गयी। पीजन हाउस कोर्ट तथा आयर्लैण्ड ब्रिजके बैरकके पास विशेष सैनिक तैनात करनेकी व्यवस्था की गयी।

डायरके सैनिकोंको यहींके लिए उपयुक्त समझा गया। ब्रिटिश सेनाके सेनापतिको अचानक गिरफ्तार कर लेनेका भी प्रबन्ध किया गया।

डबलिन कैसिलपर आक्रमण करनेका भार एमेटने अपने तथा अपने साथियोंके ऊपर लिया। उनमें नीलन सबसे प्रधान था। इसके लिए दो सौ आदमी चुने गये। इसके लिए तय

किया गया कि एमेट किलेमें सबसे पहले प्रवेश करेगा। दो आदमी जो अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित रहेंगे उसे कुर्सीपर लादकर भीतर ले जायँगे। उसके बाद एक गाड़ी भीतर प्रवेश करेगी। इसके साईस और कोचवान तथा चारो सवार शस्त्रसे सुसज्जित रहेंगे। भीतर घुसते ही एमेटसे सूचना पाकर वे लोग झपटकर सन्तरियोंको गिरफ्तार कर लेंगे और किलेका फाटक विद्रोहियोंके लिए खोल देंगे।

हर तरहके शस्त्रोंसे सुसज्जित एक सौ जवान पहलेसे ही किलेके आसपास चक्कर लगाते रहेंगे। फाटक खुलते ही वे भीतर घुस पड़ेंगे। इसके साथ ही एक सौ आदमी गोदामसे भेज दिये जायँगे।

किलेमें रहनेवाले सभी अधिकारी लार्ड लेफ्टनेण्टके सहित गिरफ्तार कर डायरके पहाड़ी प्रदेशमें भेज दिये जायँगे। जहाँ वे बतौर जमानतके रखे जायँगे।

हमलेके दिन एमेट अपने चुने हुए बीस साथियोंके साथ टामस स्ट्रीटके गोदामके ऊपरवाली मंजिलमें बैठा था। शहरमे चारों ओर स्काउट भेज दिये गये थे कि सारा प्रबन्ध देखकर सूचना दें तो हमला कर दिया जाय। वे लोग अँधेरेमें बैठे सायँ-सायँ बातें कर रहे थे। एमेट उन्हें सारी व्यवस्था समझा रहा था।

गोदामके निचले हिस्सेमें जो कुछ हो रहा था वह ऊपर साफ सुनायी देता था। एकाएक वहाँ सन्नाटा छा गया। उसके बाद कुछ शोर-गुल और ऊपर चढ़नेकी लोगोंके पैरोंकी आहट। एक स्काउट कमरेमें घुस आया। उसका चेहरा ही बतला रहा था कि कोई असाधारण समाचार है। उसने कहा—

"डायरने हमलोगोंको धोखा दिया। उसके एक आदमी भी

नहीं आये। हमलोगोंने दूर-दूरतक आदमी दौड़ाया लेकिन उन लोगोंका कहीं पता नहीं लगा।

आरम्भमें ही इस तरहकी दुर्घटना बहुत बड़ा धक्का था। लेकिन उसे साहसके साथ बर्दाश्त किया। उसने तुरन्त दूसरे आदमियोंको तैयार किया और डायरके आदमियोंका स्थान ग्रहण करनेके लिए भेज दिया।

लेकिन यह सम्वाद तो विपत्तिका अग्रदूत था। एकके बाद दूसरे स्काउट आते गये और सभीकी जबानपर निराशाका ही सम्वाद था। वेक्सफोर्डके विद्रोही घण्टाभर पहले ही आ गये थे। उन्हें किसीने एमेटका जाली पत्र दिखाकर वापस कर दिया कि विद्रोह सम्प्रति स्थगित कर दिया गया।

चारों ओर इसी तरहके विश्वासघातसे काम लिया गया था। जहाँ-जहाँसे मदद आनेकी व्यवस्था कर ली गयी थी हर-जगह एमेटका जाली पत्र खास आदमियोंद्वारा भेजकर उन्हें रोक दिया गया था। सभी एक दूसरेकी ओर विस्मयसे देखने लगे। सभी विचलित हो उठे। लेकिन एमेट धीर और गम्भीर बना रहा। उसने कहा—हमलोगोको यह नहीं भूल जाना चाहिये कि हमलोगोके सारे अध्यवसायका मर्मस्थल डबलिन किला है। यदि हमलोग उसपर कब्जा कर लेगे तो हमारी विजय निश्चित है। हमारे कुर्सीवाहक और गाड़ीवाले आते ही होगे।

इसी समय सीढ़ीपर कुछ लोगोंके पैरके शब्द सुनायी दिये। उसने कहा—वे लोग आ ही गये।

इसी समय कमरेका दरवाजा खुला और खूनसे लथपथ एक विशालकाय आदमी लड़खड़ाता हुआ उनके सामने जाकर खड़ा हो।गया

खूनसे उसका चेहरा विकृत हो रहा था तो भी एमेटने उसे पहचान लिया। उतावला होकर पूछा—कुर्सी और गाड़ीका क्या हुआ लैरी?

खूनका धक्का अपनी आँखोंपरसे हटाते हुए उसने कहा—चला गया। सब कुछ चला गया। जिन्होंने उसे छीना है उन-पर ईश्वरका कोप हो। लेकिन इसमें हमलोगोंका कोई दोष नहीं है।

इस सम्वादसे एमेटको जो चोट पहुँची उसका आभास उसके चेहरेसे पाकर वह अपने दुःखको भूल गया। उसने कहा—हमलोगोंने अपना वेष इस तरह बनाया था कि हमलोगोंकी माताएँतक नहीं पहचान सकती थीं। इस तरहके सीधे सादे लोग डबलिनकी सड़कोंपर आजतक देखे भी नहीं गये होंगे। हमलोग चुपचाप इधर चले आ रहे थे और उधरसे करीब बीस सैनिक चुपचाप उस तरफ जा रहे थे। वे लोग अपनी राह जा रहे थे और हमलोग अपनी राह आ रहे थे। न तो हमलोगोंसे उनका शरीर छू गया और न उन लोगोंने हमलोगोंसे कुछ पूछा ही कि कोई कड़ा शब्द कहता। ज्यों ही वे लोग हमलोगोंके पास पहुँचे, वे अचानक हमलोगोंपर टूट पड़े। कुर्सी तोड़ दी। हमलोगोंको घायल कर दिया था। गाड़ी छीनकर ले गये। हमलोगोंको वहीं सड़कपर बेहोश छोड़ दिया। होश आनेपर मैं किसी तरह यहाँ आया हूँ। हमलोगोंमेंसे किसीने विश्वासघात किया है, नहीं तो उन लोगोंको क्या पता कि हमलोग कौन हैं।

राबर्टका दिल व्यथित हो उठा। उसने मीठे स्वरमें कहा—तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। नीचे जाकर घावपर पट्टी बँधवा लो।

आगे बढ़कर एक आदमीके सिरपर बन्दूकके कुन्देसे प्रहार कर दिया।

दूसरे ही क्षण एक तेज भाला ऊपरको उठकर चमक उठा और उस सिपाहीकी छाती को पार कर गया। इसके साथ ही मारपीट शुरू हो गयी। एक साथ ही कई बन्दूकें तन गयी और गोलियोंकी बौछार शुरू हो गयी। वह आदमी आहत होकर लड़खड़ाकर जमीनपर गिर पड़ा। भाला उसके हाथसे छूट गया। रोशनीके प्रकाशमें एमेटने उसका चेहरा देखा। उसे पहचानकर चिल्ला उठा :-"यह तो बोवेन रैफर्टी है। अन्ततक यह सच्चा बना रहा।" इतना कहकर वह उसकी तरफ झपटा। यदि ठीक वक्तपर नीलनने उसका हाथ पकड़कर पीछेकी ओर नहीं खींच लिया होता तो वह भी उस मारपीटमें शामिल हो गया होता।

३०

यह तूफान जितनी तेजीसे उठा उतने ही शीघ्र समाप्त हो गया। जनसमूह पटरीपर उस मृत शरीरको उसी तरह छोड़कर चलता बना। एमेट उत्तेजनासे पागल हो रहा था। वह छुटकारा पानेके लिए छटपटा रहा था लेकिन नीलन उसे कसकर पकड़े रहा। उसने हाँफते हुए कहा:—यह निरा पागलपन है। जिन प्राणोंका बहुत अधिक मूल्य नहीं था यदि तुम उन्हें खतरेमें नहीं डालना चाहते थे तो तुम अपना जीवन क्यों संकटमें डालने जा रहे हो। इसका मूल्य बहुत ज्यादा है। अंगुल-अंगुल जमीन खुफियों और सिपाहियोंसे घिरी है। किसी क्षण भी हमलोग पहचाने जा सकते है। उस समय कुत्तेकी मौत मारे जायँगे।

उस मौतसे क्या लाभ ? लेकिन यदि हमलोग आज भागकर अपनेको बचा लेते हैं तब कल फिर लड़ सकते हैं। इसलिए हमलोगोंको यहाँसे चुपचाप भागकर अपने डेरेमें जा छिपना चाहिये। अभी डेब्लिनको पहरेपर रखकर हमलोग समयकी प्रतीक्षा करेंगे।

इतना कहकर वह एमेटको एक तंग गलीमें खींच ले गया। यहाँ भीड़भाड़का नामतक नहीं था। लेकिन उस गलीके दूसरे मुहानेपर बन्दूकों तथा पिस्तौलोंके दगनेकी आवज सुनायी पड़ी। इन शब्दोंने एमेटको पुनः उत्तेजित कर दिया। उसने नीलनसे अपना हाथ छुड़ा लिया और उधर ही दौड़कर जाने लगा। लेकिन नीलन पुनः सामने खड़ा हो गया और उसका रास्ता रोक लिया। बोलाः—मैं इस तरह तुम्हें मौतके मुँहमें नहीं जाने दूँगा। इससे कोई लाभ नही हो सकता। देखो उपद्रव आपसे आप ठण्डा पड़ता जा रहा है। यह उसकी अन्तिम साँस थी। अपने लिए—नहीं, नही—अपने देशके लिए तुम्हें अपनी रक्षा करनी चाहिए।

इतना कहकर वह एमेटकी कमरमें हाथ डालकर उसे फिर गलीमें खींच लाया।

सड़कोंपर जो भयानक तूफान उठा था वह मन्द पड़ने लग गया था। उसकी क्षीण आवाज कभी कभी कानोंमें पड़ जाती थी। बीच बीचमें बन्दूक छूटनेकी आवाज और किसीकी चीख भी सुनाई दे जाती थी। उनके इर्द गिर्द अन्धेरा, शान्ति और सन्नाटा था। इसी तरफ़से एमेटको अपने साथ लेकर वह आगे बढ़ा, कभी दायें मुड़ता और कभी बायें। वे अपने डेरेसे करीब सौ कदमकी दूरीपर थे कि अचानक अन्धेरे-

को चीरकर एक रमणी सामने आयी और एमेटका हाथ जोरसे पकड़ लिया।

उसका हाँफना उन्हें स्पष्ट सुनाई देता था; लेकिन अन्धेरेमें वे उसकी सूरत नहीं पहचान सकते थे। नीलनने उसपर प्रहार करनेके लिये अपना हाथ उठाया ही था कि एमेटने उसकी कलाई पकड़ ली।

दूसरे ही क्षण अनीकी आवाज उनके कानमें पड़ी जो घबराहटके कारण स्पष्ट नहीं थी। वह कह रही थीः—एक कदम भी आगे बढ़े कि मौतके मुँहमें चले गये। डेरेपर कड़ा पहरा बैठा है। थोड़ी दूर हटकर सैकड़ों सिपाही छिपे बैठे हैं। चुपचाप यहाँसे भाग चलिये। मैं घटोंसे यही खड़ी आपकी प्रतीक्षा कर रही थी ताकि मैं सावधान कर सकूँ।

अनीका इस तरह अचानक आ जाना मेलचीको अच्छा नहीं लगा। वह मन ही मन उसे भला बुरा कहने लगा। अन्तमें जोरसे कह उठा :—'या तो तू स्वप्न देख रही है या भयने तेरी बुद्धि नष्ट कर दी है। यहाँ हमलोगोंकी खोज वे क्यों करेंगे? चलो जी!"

लेकिन अनीने झुंझलायी बिल्लीकी तरह उसका मुकाबला किया, बोली :—जरूर भयसे मेरी बुद्धि नष्ट हो गयी है। लेकिन मैं इतना जानती हूँ कि मुझसे कहीं जल्दी भय आपको ग्रस सकता है। यदि आप चाहे तो जा सकते हैं; लेकिन मि० राबर्ट मेरी लाशपरसे ही आगे बढ़ सकते है। मैं निश्चित जानती हूँ कि वहाँ खतरा है। इसलिए ये मेरे ही साथ रहेंगे।

लेकिन मेलची एमेटका हाथ पकड़कर आगेकी ओर खींच रहा था। इसपर एमेटने रुखाईसे कहा :—यह ठीक कह रही

है नीलन ! इसके संचेत करनेपर भी उधर जाना पागल-पन होगा।'

अनीने एमेटका हाथ पकड़ लिया और अंधेरी गलीमें उसे लेकर एक ओर चल पड़ी। नीलन भी उसके पीछे चला।

वहाँसे कुछ दूर निकल जानेपर एमेटने पूछा :—आखिर कहाँ चलना होगा मुझे ?

अनीने उसी तरह चलते चलते कहा :—विकलो !

एमेटने विस्मयसे पूछा :—विकलो ?

अनी—मैं वहाँ तुम्हें माइकल भाईके यहाँ पहुँचा दूँगी। वहाँ तुम उतने ही सुरक्षित रहोगे, जितने सुरक्षित तुम फ्रांसमें अपने बड़े भाईके साथ रह सकते थे। वहाँ रहकर तुम एक बार पुनः प्रयत्न कर सकते हो।

मेलची—यह तो निरी मूर्खता होगी। इतनी दूरकी यात्रा आसान नहीं है। सड़कोंपर पुलिसका कड़ा पहरा है। हम-लोग आधा रास्ता भी तै नहीं कर सकेंगे कि सूर्य निकल आवेंगे। यदि इधर उधर होंगे तो रास्ता ही भूल जायँगे।

अनी—इसकी आप चिन्ता न करें मैं हर दस दिनपर भाई माइकलसे मिलने जाती रहती हूँ। मुझे यहाँकी एक-एक इंच जमीनका पता है। जिस तरह लोग अपनी हथेलीको जानते हैं उसी तरह मैं वहाँके प्रत्येक रास्तेको जानती हूँ। आप मेरा विश्वास कीजिये मि० रावर्ट।

उसे जोकुछ कहना होता एमेटसे कहती। मेलचीकी तरफ एक बार भी उसने ध्यान नहीं दिया।

एमेट—अनी ! मैं नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारा कितना ज्यादा कृतज्ञ हूँ। अपनी रक्षाके अतिरिक्त मुझे माइकलसे दो बातें भी करनी हैं।

संकीर्ण मार्ग भी उसे कहीं दिखाई नहीं देता था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसके जीवनकी सारी उपयोगिता नष्ट हो गयी। अध्यवसाय, उद्योग, आनन्द, सफलताका अवसर सदाके लिए लुप्त हो गया। कालेजसे निकाल दिये जानेके वाद वकालतकी तो कोई आशा नहीं रही, साथियोंका साथ छूट जानेसे उसे देशभक्तिके लिए भी प्रश्रय मिलनेकी आशा नहीं रही।

कालेजमें जागरण उत्पन्न करनेका जो काम वह कर रहा था उसका तो इस निर्वासनके साथ ही अन्त हो गया। मकान उसे मनहूस प्रतीत होने लगा उसका बड़ा भाई देश-निकालाका दण्ड भोग रहा था। उसके माता-पिता इससे नितान्त दुखी थे। रावर्टने उनके संकटको और भी दूना कर दिया। यद्यपि मुँहपर वे सदा उसके साहसकी प्रशंसा करते थे पर उसका परिणाम सोचकर वे सिहर उठते थे। अधिकारियोंकी क्रूरछाया उसके मकानके इर्दगिर्द शनिकी भाँति मँड़रा रही थी।

कालेजके उसके केवल तीन ही साथी उसके पास आते जाते थे। टामी मूरका आना जाना बहुत ज्यादा होता था। टामी मूरके साथ कभी कभी मेलची भी आ जाता था। टेरी कभी कभी अकेला ही आ जाता था।

टामी मूर ही एक ऐसा था जो इस निराशाके घोर अन्धकारके परदेको कभी कभी हटा देनेमें समर्थ होता था। वह कालेजकी प्रति दिनकी घटनाएँ उसे सुनाया करता था। निर्वासनसे वच जानेका उसपर उलटा प्रभाव पड़ा था। वह मन:ही मन खीझसा गया था। यद्यपि वह इससे मन ही मन प्रसन्न भी होता था क्योंकि उसके समान सरस व्यक्ति और कवि-हृदयके लिए कालेजमें बड़ा आकर्षण था। उसे अपने भविष्यकी भी

चिन्ता थी। लेकिन निर्वासित न होनेकी बात उसके दिलमें सदा खटकती रही। उसकी देशभक्तिके ऊपर यह अमिट कलङ्क था। इस खयालने उसे उत्तेजित कर दिया था और देशभक्ति प्रकट करनेका वह कोई भी अवसर छोड़ना नहीं चाहता था। जालिमोंके जुल्मकी लेशमात्र भी परवा न कर वह देशभक्तिपर कविताएँ लिखने लगा।

एक दिन टामी मूर ज्यों ही एमेटके पास आया, एमेटने उससे पूछा :—कहो भाई, आजका क्या समाचार है?

टामी मूर—आज मेरे पास ऐसा कोई सम्वाद नहीं है जिसे मैं स्वतन्त्रतापूर्वक तुम्हें बतला सकूँ।

एमेट—क्या कोई बहुत ही गुप्त बात है जिसे प्रकट करना खतरनाक है? लेकिन मुझपर तुम भरोसा कर सकते हो।

टामी—बात तो कुछ ऐसी ही है। तुम जानते ही हो कि मैं तुम्हारा कितना ज्यादा विश्वास करता हूँ। लेकिन वह भेद मेरा अपना नहीं है। इसे गुप्त रखनेके लिए मुझे शपथ दिलायी गयी है।

एमेटने मुस्कुराकर कहा :—मैं नहीं चाहता कि तुम अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग करो। आजकल क्या लिख रहे हो? कविता तरह चल रही है।

कविताकी चर्चा होते ही टामी मूरको अपने 'गुप्त रहस्य की बात भूल गयी। बोला :—इधर काममें इतना व्यस्त कि लिखनेकी फुरसत नहीं मिली। जो कुछ लिखा भी है व बहुत बढ़िया नहीं है।

एमेट—तुम्हारी राय तो मैंने पूछी नहीं। मैं पढ़कर राय स्वयं कायम करूँगा।

प्रशंसा किसे प्रिय नहीं है। टामी मूर फूल गया।

अपनी जेबसे अखबारके दो कतरन निकालकर एमेटकी तरफ बढ़ा दिये। बोला :—मैं तुम्हारी सच्ची राय जानना चाहता हूँ।

एमेट—सुनो, तुम्हारी प्रेमकी कविता बहुत ही सुन्दर उतरी है लेकिन इस देशभक्तिवाली कवितामें तुम थोड़ा बहक गये हो।

टामी—मैं गद्य और पद्य दोनो लिख सकता हूँ। कविता तो मै केवल मनबहलावके लिए करता हूँ। मैंने ट्रिनिटी कालेजके छात्रोंके नाम एक खुला पत्र लिखा है। इसपर मैं तुम्हारा विचार जानना चाहता हूँ। मै तुम्हें पूरा पत्र सुननेका हक नही दूँगा। दो चार वाक्य सुन लो। इसे पढ़कर उस शैतान क्लेयरका होश ठिकाने आ जायगा। वह जान जायगा कि उसने छात्रोकी देशभक्तिको सर्वथा कुचल नही दिया है। छात्रोंपर निर्वासनका कोई असर नही पड़ा है। अभी भी देश-भक्तोंकी संख्या पर्याप्त है। पहले तो मैंने सोचा था कि इसके नीचे अपना नाम भी जोड़ दूँ लेकिन पीछे मेरे मनमे यह खयाल आया कि बिजलीकी कौंधके समान ही इसे उसपर पड़ने दो।"

टामीके सारे जोश-खरोशको ठंढा करते हुए एमेटने कहा :—मूर, इस तरहकी गलती मत करो। इसी तरहकी हरकतोंसे जालिमको जुलम करनेका बहाना मिल जाता है। मैं मानता हूँ कि तुम्हारी नीयत बुरी नही है। मेलचीकी नीयत भी बुरी नही थी। लेकिन उसके पागलपनका कितना बुरा परिणाम हुआ।

मेलचीकी चर्चा होते ही टामी मूरको अपने गुप्त भेदका स्मरण हो आया। वह चौंक पड़ा। उसका चेहरा सहसा गम्भीर हो गया। बोला :—तुम्हारा कहना सर्वथा सत्य है।

मेलचीकी नीयत बुरी नहीं थी। उसने पागलपन जरूर किया लेकिन उसके लिए उसे कायर या विश्वासघाती नहीं कहा जा सकता। मुझे विश्वास है कि तुम उसकी नेकनीयतीपर विश्वास करते हो।

उसमें अचानक यह परिवर्तन देखकर एमेटको विस्मय हुआ। बोला :—मैंने तुमसे अभी तो यही कहा है। मैं उसे फौलादकी तरह पक्का समझता हूँ।

टामी—तब तुम सिर्फ यदि—

इतना कहते कहते वह चुप हो गया।

एमेट—तुम सहसा चुप क्यों हो गये।

टामी—मैं नहीं कह सकता। मुझे नहीं कहना चाहिए। यही तो विपत्ति है। मैं जानता हूँ कि यदि तुम्हें मालूम हो जाय तो तुम वैसा नहीं होने दोगे। लेकिन उसने मुझे शपथ जो दी है।

एमेट—किसने तुम्हें शपथ दी है।

टामी—मेलचीने। मुझे इतना भी प्रकट कर देनेका हक नहीं था लेकिन अचानक उसका नाम मेरे मुँहसे निकल पड़ा।

एमेट—तब मेलची किसी संकटमें है? इतना तो तुम मुझे बतला सकते हो!

टामी—यदि सम्भव होता। लेकिन उसने मुझे शपथ दे दी है। मुझे दबाओ मत, नहीं तो मैं अपने वचनसे डिग जाऊँगा।

इतना कहकर वह एमेटके कमरेसे बाहर हो गया। एमेटको वह चिन्ता और संकटमें छोड़ गया।

उसकी बातोंसे एमेटने इतना तो अवश्य ही समझ लिया कि मेलची किसी सङ्कटमें है। उसे शङ्का हुई कि इस खतरेका

सम्बन्ध भी किसी न किसी तरह कालेजसे ही है। इसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं सोच सका।

वह इसी उधेड़-बुनमें पड़ा था कि मेलची भी अचानक हफ्तोंके बाद उसके यहाँ आ पहुँचा। मेलचीका चेहरा प्रसन्न था। चिन्ताकी धूमिल रेखा उसके चेहरेपर नहीं थी। वह कालेजमें आन्दोलनकी प्रगतिका सम्वाद लेकर आया था।

लेकिन एमेटने उसके कुछ कहनेके पहले ही पूछा :— मेलची ! "यह क्या गुप्तभेद है जो मुझसे छिपाया जा रहा है।"

८

मेलची चकित होकर एमेटका मुँह देखने लगा। उसने विस्मयके साथ पूछा :—"कैसी गुप्त बात ?"

एमेट—वही जो तुमने टामीसे कहा है, लेकिन मुझसे छिपाना चाहते हो।"

इसपर मेलचीने मुँह बनाकर कहा :—टामीके पेटमें बात नहीं ही पची।

एमेट—तुम उसके साथ अन्याय कर रहे हो। उसने कुछ नहीं कहा है। अचानक उसके मुँहसे एक दो शब्द ऐसे निकल पड़े जिससे मैंने यह समझ लिया कि तुम किसी संकटमें हो लेकिन अभीतक मै नहीं जानता कि वह संकट क्या है। उससे मैं जिरह करके कहीं बात निकाल न लूँ इस डरसे वह यहाँसे भाग गया।

मेलची—टामीको मैंने सदा ऐसा ही पाया है। मुझे खेद है कि मैंने उसे बतला दिया था।

एमेट—आखिर बात क्या है ?

मेलची—नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं यह बात किसीसे भी प्रकट नहीं करना चाहता था।

एमेट—तब तुमने टामीसे क्यों कहा ?

मेलची—क्योंकि मैं जानता था कि वह बाधक नहीं हो सकता ।

एमेट—और मैं ?

मेलची—तुम हो सकते हो ।

एमेट—यदि उससे देशका कल्याण होता हो तब मैं अवश्य बाधा दूँगा ; चाहे उसका सम्बन्ध तुमसे हो या किसी अन्य साथीसे । इसलिए मुझे जरूर बतला दो ।

मेलची—इसी शर्तपर कि तुम मेरे रास्तेमें नहीं खड़े होगे ।

एमेट—मैं इस तरहका कोई वचन नहीं दे सकता । यदि इससे हानिकी सम्भावना होगी तो मैं अवश्य बाधा दूँगा । तुम्हें कहना ही होगा ।

मेलची :—एमेट ! मेरी मर्यादा दाँवपर है । इसलिए मैं नहीं बतलाऊँगा ।

एमेट—मर्यादाका सवाल है । यह दाँव किसके साथ लगा है ?

मेलची—यदि तुम जानना ही चाहते हो तो सुन लो । यह बदान टेरीके साथ है ।

इसके बाद उसने क्रोधका भाव दिखाते हुए कहा,—ओहो ! तुमने चालबाजीसे मेरा भेद जान लिया है । लेकिन इस बीचमें यदि तुम पड़ोगे तो मेरा घोर अपमान होगा । मैं इतना कह सकता हूँ कि मैंने स्वयं झगड़ा मोल नहीं लिया है । उस दिन कालेजकी दुर्घटनाके बाद एक दिन वह मेरे यहाँ आया । कई आदमियोंके बीचमें उसने मुझे कायर, झूठा और विश्वासघाती कहा और साथ ही मेरे गालपर थप्पड़ मारा । मैंने बुरा नहीं माना । लेकिन वह क्रोधसे पागल और अन्धा हो रहा था ।

मैं जानता हूँ कि वह उदार प्रकृतिका है। मैं यह भी जानता हूँ कि शान्त चित्त होकर जब वह अपनी हरकतपर विचार करेगा तो उसका हृदय रो पड़ेगा। लेकिन इस वक्त तो उससे लड़ना ही है। अपनी मर्यादाकी रक्षाके लिए उससे मुझे लड़ना ही है। यदि कोई दूसरा होता तो मैं विमुख भी हो जाता। लेकिन डबलिनमें टेरी तलवार चलानेमें सबसे निपुण समझा जाता है। यदि मैं पीछे कदम रखूँगा तो लोग यही कहेंगे कि मैं डर गया।

एमेट गम्भीर होकर सारी बातें सुनता रहा। अन्तमें बोला :—यह मामला मेरे हाथमें छोड़ दो।

मेलची—ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं अपनी जान तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ लेकिन अपनी मर्यादा नहीं।

एमेटने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा,—मेलची ! मुझपर भरोसा करो। तुम्हारी मर्यादा मेरे हाथमे सुरक्षित है। तुम्हारी मर्यादा भङ्ग होते देखनेके पहले तुम्हें मुर्दा देखना मै ज्यादा पसन्द करूँगा।

मेलचीने हेकलाते हुए कहा :—तब तुम समझते हो कि…?

एमेटने बाधा देते हुए कहा :—मैं क्या सोचता हूँ और क्या करूँगा, यह तुम्हें बतलाना नहीं चाहता। मेरी बात या व्यवहारकी तुमपर कोई जिम्मेदारी नहीं है। किस दिनके लिए बदान है ?

मेलची—कल सुबह ६ बजे पार्कमें। लेकिन तुम किसी तरहकी बाधा न उपस्थित करना।

एमेटने अधीर होकर कहा :—मैं कह चुका हूँ कि तुम्हारी मर्यादा मेरे हाथमें पूर्णरूपसे सुरक्षित है।

लेकिन किसी कारणवश इस उत्तरसे मेलचीको सन्तोष नहीं हुआ।

क्षणभर कुछ सोचकर एमेटने पूछा :—इसमें तुम्हारा सहायक कौन है?

मेलचीने झुँझलाकर कहा,—टामी मूर। उसने लड़ाई न ठाननेके लिए मुझे बहुतेरा समझाया लेकिन मैं अटल रहा।

एमेट—तुमने उचित नहीं किया।

मेलची—कोई दूसरा चारा नहीं था।

क्षणभर बाद मेलचीने व्यग्र होकर पूछा :—तब तुम समझते हो कि······?

एमेट अपने विचारोंमें इतना लीन था कि उसे मेलचीकी व्यग्रतापर ध्यान देनेका अवसर ही नहीं मिला। उसका ध्यान भङ्ग हुआ तो उसने कालेजके बारेमें दो चार सवाल किये जिसका मेलचीने अंटशंट उत्तर दे दिया।

इसके बाद बातें बन्द हो गयीं। दोनों अपने अपने विचारोंमें लीन थे। बीस मिनट बाद मेलची जब जाने लगा तो एमेटने उसे रोकनेका कोई उद्योग नहीं किया।

एमेटका हाथ अपने हाथमें लेकर उसने भरायी हुई आवाजमें कहा :—नमस्कार मित्र! शायद यही अन्तिम भेंट हो।

९

सुबहका सुहावना समय था। मन्द समीर पार्कके पेड़ों और पौधोंके साथ अठखेलियाँ कर रहा था। फूलोंपर पड़ी ओसकी नन्ही नन्ही बूँदें प्रभात रविकी किरणोंसे मोती-सी

चमक रही थीं। इसी समय दो युवक पार्कमें घुसे। एकके हाथमें दो तलवारें थीं। वे दस कदम भी आगे न गये होंगे कि झाड़ियोंके झुरमुटमें उन्हें मेलची नीलन अकेला खड़ा दिखाई पड़ा। उसे देखते ही जिस युवकके हाथमें दो तलवारें थीं उसने पूछा :—मि० नीलन ! आपको अकेले देखकर मुझे विस्मय हो रहा है।

ये दोनों कालेजके साथी और अन्तरंग मित्र थे। किसी दूसरे दिन इस तरहका सम्बोधन सुनकर लोग चकित हो सकते थे लेकिन द्वन्द्व युद्धकी ललकारने दोनोंको विलग कर दिया था।

मेलचीने उत्तरमें केवल सिर हिला दिया।

उसने फिर पूछा,—इस द्वन्द्वमें मैं टेरीके सहायकका काम करूँगा। क्या आप बतलावेंगे कि आपका सहायक कौन है?

मेलचीने रुखाईसे कहा :—मै किसे बतलाऊँ। टामी मूरको मैंने ठीक किया था। यहींपर उसने मिलनेका वादा किया था। लेकिन न तो अबतक वह आया और न कोई सम्वाद ही भेजा। मेरी समझमें नहीं आता कि वह अबतक क्यों नहीं आया।

मेलचीकी बात सुनकर वह युवक टेरीसे सलाह करने चला गया जो बीस कदमकी दूरीपर खड़ा था।

मेलची कान लगाकर उसकी बातें सुनने लगा। अपने साथीकी बातें सुनकर टेरीने कहा :—डेस्मण्ड ! वह सिर्फ धोखा देना चाहता है। कायर और विश्वासघाती होनेके साथ ही साथ वह चालबाज भी है। टामी मूर बातका धनी है। भयानकसे भयानक विपत्तिमें वह साथ छोड़नेवाला आदमी नहीं है। इसी कमीनेने उसे दूर रखनेके लिए कोई चाल जरूर चली है और न लड़नेके लिए यही बहाना निकालना चाहता है।

टेरी जिस भाषाका प्रयोग कर रहा था वह डेस्मण्डको उचित नहीं प्रतीत हुई। वह रह रहकर मेलचीकी ओर देखता था और टेरीको रोकनेका यत्न करता था।

टेरी क्रोधसे उबल रहा था। उसने कहा :—मुझे शिष्टताकी लेशमात्र भी परवाह नहीं है। मैं लड़ने आया हूँ और लड़ना चाहता हूँ। तुम उसके सहायकका भी काम कर सकते हो। वह भी तुम्हें अच्छी तरह जानता है।

इसपर डेस्मण्डने धीरेसे कुछ कहा।

उत्तरमें टेरीने जोरसे कहा :—वह इनकार कर सकता है। यदि वह इनकार करेगा तो मैं डबलिनकी सड़कोंपर उसे कुत्ते-की मौत मारूँगा। तुम उसके पास जाकर कह दो। तुम जितना चाहो शिष्ट और नम्र बनो, इसकी मुझे शिकायत नहीं होगी लेकिन इस कुत्तेको लड़ना ही पड़ेगा।

डेस्मण्डने मेलचीके पास जाकर नरमीसे कहा :—बड़े खेदकी बात है कि आपके मित्र अपने वादेपर कायम नहीं रह सके। मेरे साथी आपको विलंब और विपत्ति दोनोंसे बचाना चाहते हैं। उनका कहना है कि मैं ही दोनोंके लिए सहायकका काम करूँ।

मेलची—मैं आपकी इस नेक सलाहके लिए कृतज्ञ हूँ लेकिन मैं अपने मित्रकी कुछ देर और प्रतीक्षा कर लेना चाहता हूँ।

डेस्मण्ड—हवामें ठण्ढक बढ़ रही है। इसलिए देर करना उचित नहीं होगा। शीत बढ़ जानेपर फिर हाथ-पैर हिलाना कठिन हो जायगा।

मेलची—आप निश्चिन्त रहें सर्दीका मुझपर कोई असर नहीं होगा।

डेस्मण्ड—लेकिन आप तो अभीसे काँप रहे हैं। इसके

अलावा मेरे साथीको धैर्य नही है। वे क्षणभरके लिए भी रुकना नही चाहते।

मेलची—तुम्हारा साथी उजड्ड और घमण्डी है।

डेस्मण्ड—मैं नहीं चाहता कि आपकी बातें उनके कानमें पड़े। उन्हें न उसकाना ही आपके लिए कल्याणकर होगा। यदि आपके दोस्त नहीं आ सके हैं तो इसमें आपकी कोई क्षति नही है। ये दो तलवारे मेरे पास हैं। दोनों एक कद और आकारकी हैं। आप इनमेंसे जो चाहें चुनकर ले लें।

इतना कहकर उसने दोनों तलवारें म्यानसे बाहर कर दीं। सूर्यकी रोशनीमे तलवारें चमक उठीं। मेलची कोई न कोई बहाना निकालकर देर करना चाहता था लेकिन इसी वक्त उसने टेरीको आगे बढ़ते देखा। उसने दोनों तलवारें अपने हाथमें ले लीं और उनकी धारकी जाँच करने लगा। तलवारों-की जाँचमे उसने काफी समय लगाया। वह समझता था कि टामी मूरके रोकनेमें एमेटका हाथ है इसलिए वह हर तरहकी बहानेबाजीसे देर करना चाहता था।

अन्तमें अधीर होकर डेस्मण्डने कहा :—आप तलवार चुननेमें बहुत समय ले रहे है। इसी समय टेरी वहाँ आ पहुँचा और एक तलवार उनमेसे खींचकर बोला :—सावधान !

युद्ध आरम्भ हो गया। दोनोकी तलवारें आकाशमें हवासे बाते करने लगीं। मेलची टेरीका युद्ध-कौशल जानता था। मृत्यु उसकी निश्चित थी। रक्षाका एक ही साधन एमेटका अचानक वहाँ पहुँच जाना था। इसलिए वह युद्ध शीघ्र समाप्त न होने देनेकी गरजसे आत्मरक्षामे ज्यादा तल्लीन रहा। स्वयं वार न करके वह टेरीका वार रोकनेके लिए ही सतत यत्नशील था।

धीरे धीरे उसके अङ्ग शिथिल होने लगे। मृत्युको उसने अपने सामने खड़ी देखा। भयसे उसकी आँखें बन्द हो गयीं। टेरीकी तलवार उसका काम तमाम करनेहीवाली थी कि एक तीसरी तलवार बीचमें चमक उठी। दोनों पीछे हट गये। एमेट दोनोंके बीच खड़ा हाँफ रहा था। मेलचीकी जानमें जान आयी। उसे विश्वास हो गया कि टेरीकी तलवार अब उसका रक्तपात नहीं कर सकेगी। लेकिन टेरी इस अप्रत्याशित बाधासे उत्तेजित हो उठा। गुर्राकर कहने लगा :—राबर्ट! हट जाओ। मैं इस नीच और विश्वासघातीको आज उपयुक्त पुरस्कार दूँगा।

लेकिन राबर्ट अपने स्थानपर बल्कि यों कहिये कि मेलची नीलन और उसके कालके बीच अटल खड़ा रहा। तलवार जमीनपर रखकर उसने कहा :—तुम्हें पहले मुझे ही खतम करना होगा।"

डेस्मण्डने सामने आकर कहा :—आप एकदम अनियमित काम कर रहे हैं। यदि आपको नीलनका सहायक बनकर रहना है तो आपको पहले मुझसे बातचीत करनी चाहिए।

उसकी बातका कोई उत्तर न देकर एमेटने टेरीसे कहा :—मेरे लिए तुम तलवार रख दो।"

टेरीने तलवार जमीनपर फेंक दी और घायल सिंहकी तरह दोनों मुट्ठी बाँधकर खड़ा हो गया। बोला :—राबर्ट! मेरे दोस्त! तुम किसकी रक्षाके लिए यह सब कर रहे हो। यह विश्वासघाती है, देशद्रोही है। अधिकारियोंसे मिला हुआ है। मेरा विश्वास करो।

एमेट—मैं अपनी जान देकर इसकी प्रतिष्ठाकी रक्षा करूँगा।

टेरी—यदि तुम इसका विश्वास करोगे तो निश्चय ही तुम्हें प्राण गँवाने पड़ेंगे।

एमेट—तुम भ्रममें हो! यही तो देशका दुर्भाग्य है कि हमलोग अपने सच्चे दोस्तो और सहायकोंको सन्देहकी दृष्टिसे देखते हैं और आपसमें ही लड़ते हैं और विश्वासघातियोंका विश्वास करते है।

टेरीने मुँह बनाकर कहा:—तुम ठीक कह रहे हो। हम-लोग विश्वासघातीको ही तो अपना दोस्त समझते हैं।

एमेटने टेरीके कन्धेपर अपना हाथ रखकर कहा:—क्या इस मामलेमें तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे?

टेरीका हृदय उमड़ आया। आँखोंमे आँसू भरकर उसने कहा:—एमेट, तुम्हारा कौन विश्वास नही करेगा। तुम्हारे लिए मैं प्राण दे सकता हूँ।

एमेट—मुझे वचन दो कि यह मामला आगे नहीं बढ़ाओगे।

उसने बेमनसे कहा:—तुम्हारा खयाल कर मैं वादा करता हूँ।

मेलची नीलनकी जानमें जान आ गयी। वह मुस्कुराता हुआ सामने आया और अपना हाथ आगे बढ़ाकर बोला:—टेरी, मैं तुमसे लेशमात्र भी असन्तुष्ट नही हूँ। चुगुलखोरोंने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है। जब तुम्हें असली बात मालूम होगी तो तुम मुझसे क्षमा माँगोगे।

लेकिन टेरीने अपना हाथ पीछे कर लिया। उसकी ओर घूरकर उसने देखा और कहा:—मुझे सब कुछ मालूम है। तुम भी जानते हो कि मैं असली बात जानता हूँ। यदि एमेटने बाधा न दी होती तो मेरी तलवार तुम्हारे पापी हृदयको चीर दिये होती। नीलन! मैं तुम्हें आगाह किये देता हूँ। जो हो गया सो

हो गया। यदि भविष्यमें तुमने पुनः विश्वासघात करनेकी चेष्टा की तो निश्चय जानो मेरे हाथोंसे बच नही सकोगे।

इसके बाद उसने एमेटसे हाथ मिलाया और तेजीके साथ पार्कसे बाहर हो गया।

दूसरे ही दिन उसकी गिरफ्तारीके लिए डबलिन कौंसिलसे वारण्ट निकला। लेकिन तबतक वह एक मछुएकी नावपर बैठकर फ्रांसके लिए रवाना हो चुका था।

१०

हवाके झोके जिस तरह बादलोंके टुकड़े टुकड़े कर उन्हें उड़ा ले जाते हैं उसी तरह इस द्वन्द्व युद्धकी उत्तेजनाने एमेटकी शिथिलताको तोड़फोड़ डाला। कई दिनोंसे वह घरसे बाहर नही निकला था। आज उसे घरसे बाहर निकलनेकी इच्छा हुई थी और वह लूकनेके लिए अकेला ही चल पड़ा।

ताजी हवाके लगते ही उसके शरीरमें स्फूर्ति आ गयी। वसन्तका आनन्द लेनेके लिए उसका हृदय व्याकुल हो उठा। उसने मन ही मन कहा :—इस मनोहर संसारका आनन्द लेनेके लिए कौन जिन्दा नहा रहना चाहेगा।

आकाशकी सुन्दर नीलिमा, नदीका कलकल नाद, घासों, नरकटों तथा पथरीली भूमिसे होकर नदीका ठेढ़ी-मेढ़ी चालसे बहना, पक्षियोंका मधुर कलरव उसके हृदयमें विचित्र गुदगदी पैदा करने लगे। अचानक उसके मनमें यह खयाल आया कि इन सब अतिशय सुखकी अनुभूतियोंका एकमात्र कारण प्रेम है। प्रेमने मेरे हृदयमें घर कर लिया है। मेरे हृदयपर उसका

व्यापक प्रभाव है। इसीलिए मुझे सभी चीजोंमें असीम आनन्द मिल रहा है।

वह पेड़ोंकी छायाके नीचे मुलायम घासपर लेट गया और जलमें मछलियोंकी क्रीड़ा देखने लगा। वर्तमानकी स्मृति सहसा लुप्त हो गयी। अतीत और भविष्यका विचित्र सम्मिश्रण उसकी आँखोंके सामने आकर खड़ा हो गया। बचपनकी एक घटना इस तरह उसकी स्मृतिमे चमक उठी जिस तरह बादलमे छिपे सूर्यके अचानक निकल आनेसे पहाड़की चोटी चमक उठती है। बचपनके उन प्रमोदोंको याद कर वह हॅस पड़ा। तुच्छसे तुच्छ वस्तुओंका कितना महत्व था उन दिनो!

भविष्यकी कल्पना और भी मनोहर और सुखद थी। जिस तरह क्षितिजपर बादलोंके टुकड़े आकर जमा होते हैं, भिन्न भिन्न तरहके आकार बनाते है और अन्तमे हवामे विलीन हो हो जाते हैं उसी तरह कल्पना एक एक चित्र उपस्थित करती थी, उनमें नये नये रंग भरती थी और फिर उन्हे उड़ा ले जाती थी। लेकिन जिस तरह सूर्य अपनी रश्मिसे बादलोंको आभा और ओज देता रहता है उसी तरह प्रेम उसके प्रत्येक विचार-को प्रभावित कर रहा था।

उसने अपने मनमें सोचा कि करेनकी तरह वह भी प्रतिभा-शाली वकील होगा। अपनी योग्यतासे वह अपराधियोंको दण्ड दिलावेगा और बेकसूरोंकी रक्षा करेगा। लेकिन इसी समय उसे लार्ड क्लेयरके कालेजमे आगमनकी घटना भी याद आ गयी। उसके सारे मंसूबे बालूकी भीतकी तरह ढह गये क्योंकि वह कालेजसे निकाला हुआ है और वकालतका उसका रास्ता सदाके लिए बन्द हो गया है।

विज्ञानसे उसे अत्यधिक प्रेम था। इसलिए विज्ञान उसकी उच्छृंखल कल्पनाका केन्द्र बन गया। वह नये नये वैज्ञानिक प्रयोग करेगा और प्रकृतिके अनेक गुप्त भेदोंका विश्लेषण करेगा। इस तरह वह इस क्षेत्रमें ख्याति प्राप्त कर असीम ऐश्वर्य प्राप्त करेगा। जिस कालेजके उन्मत्त अधिकारियोंने आज उसका रास्ता बन्द कर दिया है वे आदरसे उनके लिए उस दिन उसका फाटक खोल देंगे और सराह करेन मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत करेगी।

इसी समय देशकी दयनीय दशाका करुण चित्र उसके सामने खड़ा हो गया। उसके हृदयको सहसा धक्का लगा। उसने दृढ़तासे कहा:—नहीं, यह नहीं हो सकता। मैंने मातृभूमिकी रक्षाका संकल्प किया है। मैं उससे विचलित नहीं हो सकता। मैं विद्रोही बनूँगा, देश-सेवा करूँगा। देशको आजाद करना मेरे जीवनका मुख्य लक्ष्य होगा और सराह अपने प्रेमसे मुझे इसका पुरस्कार देगी।

इस खयालके आते ही वह बेचैन और चंचल हो उठा। वह उठ बैठा और कहने लगा:—इस तरह बैठकर कल्पना करते रहनेसे देश आजाद नहीं हो सकता। मुझे तत्परतासे अध्यवसाय करना होगा। उसने आँखें उठाकर ऊपरकी ओर देखा। सूर्यकी किरणें ढल चुकी थी। उसने कहा:—स्वप्नदर्शीके दिन इसी तरह कल्पनामें ही व्यतीत हो जाते हैं।

पास ही एक झोपड़ी थी। वह उठकर वहाँ गया। मालिकने उसे दूध और रोटी खानेको दिया। आग्रह करनेपर भी उसने कीमत लेना स्वीकार नहीं किया। उसे धन्यवाद देकर वह वहाँसे चलता बना।

उसका हृदय हलका हो गया था। उसके पैरोंमें विचित्र

इधर-उधर भागने लगे। सड़कपर तलवारें चमकने लगीं लेकिन सिपाहियोंका कहीं पता नहीं था।

दो दर्जन बहादुर विद्रोही एमेटको घेरकर आगे बढ़ रहे थे। बाकी लोग अपना हथियार चमकाते, हवामें पिस्तौल दागते, शोरगुल मचाते पीछे पीछे चल रहे थे। ज्यों-ज्यों ये लोग आगे बढ़े, इनकी संख्या बढ़ती गयी। अगल बगलके मकानों तथा गलियोंसे लोग निकल-निकलकर इनके साथ होने लगे। किसीके पास हथियार था और कितने खाली हाथ भी थे। जो कायर थे, वे डरसे घरोंमें घुस गये। स्त्रियाँ खिड़कियोंसे तमाशा देखने लगी।

एमेट अपने साथियोंके साथ आगे बढ़ता चला जा रहा था। मौका पाकर नीलन चुपचाप पीछे सरक आया और पीछेवाली भीड़में शामिल होकर जोर-जोरसे चिल्लाने लगा।

दुर्भाग्यवश एक घोड़ागाड़ी उसी समय उधरसे आ निकली। एमेट उसे अपनी जगहपर छोड़कर आगे बढ़ गया। भीड़से बचनेके लिए कोचवानने गाड़ी सड़कके एक किनारे ले जाने लगा। इसी समय पीछेवाली भीड़ पहुँच गयी। गाड़ी देखते ही नीलन चिल्ला उठा—इस गाड़ीमें जालिम बैठा है, यह बचकर निकल न जाने पावे।

उन्मत्त भीड़ उसपर टूट पड़ी। घोड़े खोलकर अलग कर दिये गये और गाड़ी घेर ली गयी। इस समयतक एमेट किलेके निकट पहुँच गया था। केवल पचास गजका फासला उसके और किलेके बीचमें था। किलेका फाटक खुला था। सन्तरी और चन्द सैनिक आँगनमें जमा हो रहे थे। उस समय भी यदि हमला कर दिया गया होता तो किलेपर अधिकार हो

१०

गया होता और आयलैंण्डका इतिहास बदल गया होता; लेकिन नियति अपना ताना-बाना अलग ही बुन रही थी।

इसी समय सैकड़ों मुँहसे "जालिमका सर्वनाश हो!" के नारे निकल पड़े और दूसरे ही क्षण किसी रमणीके चीखने का शब्द सुनायी पड़ा जो बहुत ही करुण और आर्त था।

इतने हीमें नीलन बदहवास दौड़ता हुआ एमेटके पास आया और बोला—पीछेके लोग किसी महिलाकी जान ले रहे हैं। मैं उन्हें किसी भी तरह रोक नहीं सका।

एमेटकी आँखें किलेपर लगी हुई थीं। क्षणभरके लिए वह चिन्तामें पड़ गया। इसी समय उस रमणीका आर्तनाद रातके सन्नाटेको चीरता हुआ उसके कानोंमें पड़ा। वह वहींसे लौट पड़ा और तेजीसे उस तरफ बढ़ा। उसके साथी उसी तरह उसे घेरे हुए थे। ठीक इसी समय धड़ाकेके शब्दके साथ किलेका विशाल फाटक बन्द हो गया और किलेमें प्रवेश पानेका स्वर्ण सुयोग हाथसे जाता रहा।

सड़कके बीचमें गाड़ीको घेरकर भीड़ जमा थी। भीड़को चीरता हुआ एमेट गाड़ीके पास पहुँचनेका यत्न करने लगा। रमणीका चिल्लाना बन्द हो गया था। लेकिन एक पुरुषकी आवाज उसके कानमें पड़ी जो दीनताके साथ भीड़के नायकसे बातें करनेकी कोशिश कर रहा था।

उसने पूछा—आप किसे चाहते हैं?

इसी समय भीड़मेंसे फिर आवाज आयी—जालिमका नाश हो।

उस आदमीने कहा—मैं जालिम नहीं हूँ। मैं आयलैंण्डका प्रधान जज किलपार्डन हूँ।

यह सुनकर भीड़में शामिल एक बदमाश जो गाड़ीके पास

ही था, चिल्ला उठा—"तुम्हींको तो मैं ढूँढ़ रहा हूँ।" इतना कहकर उसने अपना भाला तान लिया।

इस समयतक एमेट गाड़ीसे पाँच गज दूर था। मशालकी रोशनीमें उसने भालेकी नोक देखी। वह भाला पकड़ लेनेके लिए आगे झपटा लेकिन जवतक वह वहाँ पहुँचे वह वदमाश भाला चला चुका था। भाला प्रधान जजकी छातीमें धँस गया। खून-की धारा वह निकली। जजके मुँहसे एक चीख निकली और वह बेहोश हो गया।

दूसरे ही क्षण एमेट वहाँ पहुँच गया और उस वदमाशकी गर्दन पकड़कर उसे जमीनपर पटक दिया। क्रोधसे एमेट थर-थर काँप रहा था। उसने चिल्लाकर कहा—रोशनी इधर लाओ।

रोशनीके प्रकाशमें उसने गाड़ीका दरवाजा खोला और घायल आदमीको आहिस्तेसे वाहर निकाला और नजदीकवाले मकानमें ले चला। गाड़ीके कोनेमें एक भयसे सिकुड़ी वैठी थी। उसके सफेद वस्त्रपर खूनका लगा था। वह भयसे इतना वेदम हो रही थी कि कि वदमाशोंने उसे मार डाला है। लेकिन गौरसे मालूम हुआ कि युवती बेदाग वची है, केवल रही है। खूनके दाग उसके शरीरके नहीं हैं। थर काँप रही थी। एमेटने उसके पास जाकर पूछा—आपको चोट तो नहीं आयी है?

ज... पूछा—मेरे चाचाजी की क्या अन्त कर दिया इन लोगोने?

नहीं। वे अभी जीवित हैं और उनकी

वह एमेटकी भुजाओंसे चिमट गयी। बोली—मुझे उनके पास ले चलिये।

एमेटने उसे धीरेसे गाड़ीसे बाहर किया और भीड़को चीरता हुआ उसे उस मकानकी तरफ ले चला जहाँ उसके चाचा भेजे गये थे। वह उसके हाथसे उसी तरह चिमटी बिलख बिलखकर रो रही थी।

इस समय एमेटको कुमारी करेनका सहसा स्मरण हो आया। वह व्यथित हो उठा। पराजयके साथ-ही-साथ सराहको खो देनेकी स्मृति सहसा जागरित हो उठी। क्षण-भरके लिए उसे यहाँकी सारी बातें भूल गयीं।

दरवाजेपर एक अधेड़ स्त्री खड़ी थी। उसका चेहरा भय और आतंकसे पीला पड़ गया था। उसने इस रमणीका हाथ पकड़कर भीतर खींच लिया और दरवाजा बन्द कर दिया। एमेट बाहर खड़ा देखता रह गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि सराह करेनने ही इस तरह दरवाजा बन्द कर उसे सदाके लिए अलग कर दिया है। क्षणभरके लिए उसे निराशा और आतंकने घेर लिया उसे अपनी वर्तमान स्थिति तथा उस शोर गुलका जरा भी ज्ञान न रहा जो सड़कपर उसी तरह जारी था।

इसी समय नीलनका हाथ उसके कन्धेपर पड़ा। वह कह रहा था:—एमेट अधीर न हो! साहससे काम लो। मेरे पास एक और राकेट है। फिर सिगनल दो। इसके फूटते ही लोग दौड़ पड़ेंगे। अभी भी समय है। हमलोग विजय लाभ करेंगे।

एमेटने अपनेको सम्हाला। सारी घटना उसकी आँखोंके सामने नाच गयी। उसने नीलनके हाथसे राकेट छीन लिया और उसे जमीनपर फेंककर पैरोंसे रौंद दिया। निराश होकर बोला:—"असम्भव है। ऐन मौकेपर ईश्वरने हमारा साथ छोड़

दिया। हमलोग बुरी तरह पछाड़ खा गये। अब मैं निर्दोषोंकी व्यर्थ हत्या नहीं कराना चाहता।" इतना कहकर उसने अपने अनुयायियोंसे कहा :—आपलोग अपने अपने घर वापस चले जायँ, अपने अस्त्रोंको छिपा दें। शायद इसके प्रयोगका मौका आवे और मुझसे भी योग्य नेता आपको मिले।

उसके पास खड़े एक तगड़े आदमीने कहा :—मुझे दूसरा नेता नहीं चाहिये। मैं आपके साथ ही रहना चाहता हूँ।

इसके साथ ही बीसों मुँहसे एक ही बात निकल पड़ी :— अन्ततक हमलोग आपका साथ नहीं छोड़ना चाहते।

एमेटने निराश होकर कहा :—विजयकी कोई आशा नहीं रही। मैं आपलोगोंको व्यर्थ मौतके मुँहमें ढकेलकर नहीं ले जाना चाहता। अभी भी समय है। आपलोग वापस चले जाँय।"

लाचार होकर जो जिधरसे आया था उधर ही चला गया। लेकिन एमेट फिर उधर ही चला जिधरसे लौटा था। किला उसी तरह खड़ा था। उसका फाटक बन्द था और उसपर मोटे मोटे ताले जकड़े थे। सामने सिपाहियोंकी कतार उसे घेरकर खड़ी थी।

किलेकी आसपासकी सड़कोंपर सैनिक गश्त लगाने लग गये थे। जगह-जगह भीड़से उनका मुकाबला हो जाता था। कहीं कहीं पिस्तौलोंके छूटनेके शब्द भी सुनाई देते थे।

इसी भीड़से होकर एमेट आगे बढ़ा। उसकी दशा ठीक पागलोंकी-सी हो रही थी। डर भयकी उसे लेशमात्र भी चिन्ता नहीं थी। नीलन छायाकी तरह उसके साथ लगा रहा। लेकिन इसी दुस्साहसने उसे बचा भी लिया।

अधिकारियोंका ध्यान तुरन्त टामस स्ट्रीटकी तरफ गया।

पैदल तथा घोड़सवार पुलिस भीड़को रौंदती हुई उधर ही दौड़ पड़ी। उन्हें इस बातका स्वप्नमें भी ख्याल नहीं था कि जिस प्रधान विद्रोहीकी खोजमें वे लोग इस तरह दौड़ धूप मचा रहे हैं वह निर्द्वन्द्व उनके पंजेके भीतर ही घूम फिर रहा है।

जनताके जोश खरोशका कोई भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इस तरहके अवसरोंपर लोगोंमें आवश्यकतासे अधिक जोश आ जाना और मौतके मुँहमें कूद पड़नेके लिए तैयार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। सड़कोंपर इधर उधर आदमियोंका ऐसा दल दिखाई दे जाता था जो अवसरके हाथसे निकल जानेके कारण हाथ मलकर पछता रहा था और उदास मुँह कानाफूसी करता, शस्त्रोंको अपने कपड़ोंके भीतर छिपा रखनेकी चेष्टा करता घरकी तरफ लौट रहा था। अब भी वे रह रहकर आकाशकी ओर इस आशासे देख उठते थे कि शायद सिगनलका राकेट ऊपर चमक उठे और उन्हें अपनी बहादुरी दिखानेका अवसर प्रदान कर दे।

ये लोग एमेटको पहचानते थे। जब इन लोगोंके पाससे वह गुजरता तो ये लोग उत्कण्ठाके साथ उससे सवाल करते। वह हाथ अथवा आँखके इशारेसे उन्हें वापस जानेका संकेत कर देता और वे चल पड़ते।

इसी समय एमेट और नीलन कालेज ग्रीनको पारकर ग्राफ्टन स्ट्रीट पहुँचे। उधरसे पैदल सिपाहियोंका एक दल आ पहुँचा जो क्रूरताके साथ पैदल चलनेवालोंपर प्रहार करने लगा।

यहाँ लोगोंकी भीड़ सिगनलकी प्रतीक्षामें खड़ी थी। उन्हें बिपत्तिकी कोई सूचना अभीतक नहीं मिली थी। एक सिपाहीने

मेलची क्षणभरके लिए रुक गया। वह यह सोचने लगा कि पीछे वापस हो या उनके साथ जाय। वे लोग दस कदम आगे भी बढ़ गये। वह उस तरफ मुड़ना ही चाहता था जिधर सैनिक छिपे बैठे थे कि उसके कानोंमें एमेटकी आवाज पड़ी। वह पुकारकर कह रहा था:—"नीलन! तुम आ रहे हो न?" साथ ही उसके कानमें अनीके ये शब्द पड़े:—आप उसे चले जाने दीजिये। ऐसे आदमीका साथ न रहना ही अच्छा होता है।"

उसने दाँत पीसते हुए अपने मनमें कहा:—इनके साथ रहना ही उचित होगा। यही सबसे अच्छा उपाय होगा।

इसलिए उसने उत्तरमें कहा:—रावर्ट! मैं आ रहा हूँ।

इतना कहकर वह उसके पीछे चल पड़ा।

वे लोग रातभर चलते रहे। अनेक सड़कोंको पारकर सवेरा होते होते वे लोग किलिने पहाड़पर पहुँच गये।

अनीने गलत डींग नहीं हाँकी थी। उस निविड अन्धकारमें भी उन्हें इस तरह वह ले गयी मानों कोई अपने बाग बगीचेकी सड़कोंपर टहल रहा हो।

उषाके प्रथम प्रकाशमें उन तीनोंने एक दूसरेके चेहरेको देखा। एमेट और मेलचीका चेहरा रातके कोलाहल और हल-चलसे झाँवर हो रहा था; लेकिन अनी डेवलिन धीर और शान्त थी। मानों रातकी घटनाका उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

एमेटने पूछा:—इस घोर अन्धकारमें भी तुम रास्तेको नहीं भूल सकी?

अनी—तब तो मैं अपनेको भी भूल जाती। हमलोग बहुत दूर निकल आये हैं। दस मीलके बाद भाई माइकलका राज्य

आरम्भ हो जायगा। वहाँ पहुँच जानेपर फिर आपको कोई नहीं पा सकता।

इतना कहकर वह फिर आगे बढ़ी। दोनों चुपचाप उसके पीछे चलने लगे।

थोड़ी दूर आगे बढ़नेपर उन्हें सड़क छोड़कर पहाड़ी ऊबड़-खाबड़ रास्तेसे चलना पड़ा। रास्ता बीहड़ था। लेकिन अनी इस तरह आगे बढ़ती जा रही थी मानो साफ-सुथरी सड़कपर वह चल रही हो।

एमेट अपने विचारोंमें मग्न चुपचाप आगे बढ़ता चला जा रहा था। थकानका उसमें कोई लक्षण नहीं था; लेकिन मेलची थकानसे चूर हो रहा था। उसके दोनों पैर भारी हो गये थे। उसने कहा—अब मैं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। इतना कहकर वह एक चट्टानपर बैठ गया।

इसपर अनी डबलिनने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा—अब तो मुशकिलसे एक मील रह गया है। आप ऐसे वीरको इस तरह हताश होकर बैठ जाना शोभा नहीं देता।"

एमेट—ठीक ही तो है। हमलोगोंको माइकलसे मिल लेना जरूरी है। समय नष्ट करनेका यह अवसर नहीं है।

इतना कहकर एमेट अनीके पीछे चल पड़ा। नीलन क्षण-भर वहीं बैठा भुनभुनाता रहा। उसके बाद उनके पीछे हो लिया।

धीरे-धीरे रास्ता ढालुआँ होने लगा। वे लोग दो पहाड़ीके बीचसे पेड़ोंकी छायाके नीचे होकर घाँटीकी तरफ चलने लगे। थोड़ी दूर आगे बढ़नेपर उन्हें समतल भूमि मिली। वहाँ पहुँचते ही बिना किसी चेतावनीके करीब २० सशस्त्र आदमियोंने उन्हें आकर घेर लिया।

किसीके हाथमें भाले थे और किसीके बर्छे। सबकी नोकें इनके ही ओर तनी थीं।

३१

इस अचानक हमलेसे मेलची काँप उठा। एमेटका हाथ सहसा तलवारकी मूठपर चला गया; लेकिन अनी खिलखिलाकर हँसने लगी। बोली—"वाह! आपलोग तो बड़े सतर्क रहनेवाले वीर हैं।" इतना कहकर उसने दो भालावालोंको हटाकर उस तरफ बढ़ी जहाँ कुछ दूर अलग एक आदमी खड़ा था। उसके पास जाकर उसने कहा—खूब भाई! तुम अपने ही आदमियोंको मारनेके लिए उद्यत हो।

उसकी आवाज सुनते ही वह चौंक पड़ा। बोला—अनी! इस समय तुम यहाँ कैसे? मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ।"

अनी—आप स्वप्न नहीं देख रहे हैं। मैं प्रत्यक्ष आपके सामने खड़ी हूँ। मि० एमेटको लेकर आयी हूँ। आपने बहुत सुन्दर स्वागत किया!

उसकी बात सुनकर माइकलने नैतिक भाषामे आदेश दिया जिसे सुनते ही वे सब वीर चुपचाप हट गये।

एमेटका हाथ अपने हाथमे लेकर माइकलने कहा—इसके लिये क्षमा करना भाई! मैं तो आपसे दुश्मनकी तरह मिला। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यहाँ एक भी आदमी ऐसा नहीं है जो आपका हृदयसे स्वागत करनेके लिये उत्सुक न हो।

इसके बाद उसने नीलनकी तरफ दृष्टिपात किया।

एमेट पहले भी माइकलसे मिल चुका था। लेकिन नीलनने उसे पहली बार यहीं देखा। उसे वह विस्मयसे देखने लगा। वह मन-ही-मन डर भी रहा था ?

उसने अपने मनमें कहा :—वह यही माइकल डायर है जिसको आयर्लैण्डकी जनता देवताकी तरह पूजती है और जिसका नाम सुनकर अधिकारीवर्ग काँपने लगता है। इसीकी गिरफ्तारीके लिए पाँच हजार पौंड इनामकी घोषणा की गयी है।

माइकल नाटे कद्का आदमी था। उसका कन्धा इतना चौड़ा था कि वह अपने आकारसे कहीं छोटा प्रतीत होता था। बचपनसे ही उसे लड़ने भिड़नेका शौक था। बोझ उठाने, दौड़ने, कूदने तथा तैरनेमें इस विकलो प्रदेशमें उसका कोई मुकाबला करनेवाला नहीं था। वह इतना ज्यादा उत्साही था कि सैकड़ों बार मरते मरते बचा। साहसिकताके इन कामोंका अन्तिम फल यह हुआ कि ब्रिटिश सैनिक इसका पीछा करते करते थक गये लेकिन इसपर हाथ नहीं लगा सके। अन्तमें हताश होकर इस पहाड़ी प्रदेशमें उसे स्वतन्त्र छोड़ देना पड़ा।

उस निस्तब्धताको भंग किया एमेटने। बोला :—यही मेरे दोस्त नीलन हैं। इन्होंने सच्चे मित्रकी तरह आफत-बिपतमें कभी भी मेरा साथ नहीं छोड़ा है। ये फौलादकी तरह दृढ़ हैं।

नीलनका इस तरह परिचय पाकर माइकलने उससे हाथ मिलाया और अपने घर उसका स्वागत किया।

अनी उन लोगोंसे थोड़ा हटकर खड़ी थी। माइकल इन लोगोंसे बातें करते समय रह रहकर उसकी ओर देख लेता

था। इस तरह उसे देखनेका अभिप्राय नीलनसे छिपा नही रहा। तेजसे उसका जी जल उठा।

इसके बाद फिर सन्नाटा छा गया। एमेटने दो बार बोलनेकी चेष्टा की लेकिन दोनों बार वह असफल रहा। इतने जबर्दस्त सहायकके रहते भी वह असफल हुआ, इसका स्मरण आते ही उसका गला भर आता था और वाणी अवरुद्ध हो जाती थी।

बहुत देरके बाद उसकी जबान हिली। उसने कहाः—कलकी दुर्घटनाका समाचार तो आपको मिल ही चुका होगा?

माइकलने गम्भीर होकर कहा;—बुरी खबरें तेजीसे फैलती हैं और हमलोगोंका सन्देश तो चिड़ियों द्वारा इन जंगलोंमें आता है। आपका पहला प्रयास व्यर्थ गया। लेकिन यदि ईश्वरने चाहा तो हमलोग अवश्य ही विजयी होंगे। आपने हमलोगोंको खबर क्यों नहीं दी? यदि हमलोग पहुँच गये होते तो घटनाका रूप अवश्य बदल गया होता। हमलोग अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित आपका रास्ता देखते रहे, लेकिन आपने एक चिड़िया भी इधर नहीं भेजी। जबतक यहाँतक समाचार पहुँचा तबतक तो सब कुछ खतम हो गया था।

एमेट—दुर्भाग्यके सिवा और क्या कह सकते हैं। यही तो सबसे बड़ी दुर्घटना हुई। मेरे इन्हीं साथीने आपके पास संदेश भेजनेका बीमा लिया था। लेकिन—

नीलन बीचमें ही बोल उठाः—मैंने इसका भार ओवेन रैफर्टीको दिया था। उसने प्रसन्नतापूर्वक यह भार अपने ऊपर ले लिया था। मुझे उसका पूरा भरोसा था। मालूम होता है कि यहाँ न पहुँचकर वह सैनिकोंके बैरकमे पहुँच गया।

एमेटको इससे बहुत क्षोभ हुआ। बोलाः—तुम उस मरे हुए

आदमीका अपमान कर रहे हो। वह विश्वासघाती नहीं था। तुम्हें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि हमलोगोंके देखते-देखते वह सैनिकोंकी गोलीका शिकार बन गया।

मेलची भूल नहीं गया था। उसने जान बूझकर इस इलजामको उसके सिर थोपा क्योंकि उसका प्रतिवाद करनेके लिए वह कब्रसे वापस नहीं आ सकता था।

नीलनने कड़ककर कहाः—उसकी भूलको देखते हुए यह दण्ड बहुत कड़ा नहीं कहा जा सकता। चाहे उसका विश्वासघात हो चाहे भूल हो, हमलोगोंका तो सर्वनाश हो गया।

माइकल—इसे सर्वनाश नहीं कह सकते। कुछ कालके लिए हमलोग भले ही दब गये हैं। लेकिन हमलोग फिर उठेंगे। जो बीत गया उसकी चर्चा व्यर्थ है। आप जब चाहेंगे हमलोग आपकी मददके लिए पहुँच जायँगे। जितने शीघ्र हो सके हमलोगोंको तैयारी कर डालनी चाहिये। आप कुछ खा पी लें तो मैं अपने यहाँके सब लोगोंको इकट्ठा करूँ ताकि आप उन्हें दो शब्द कह दें।

पहाड़की सबसे ऊँची चोटीपर एक गुफामें उसने अपना घर बनाया था। गुफाका द्वार बहुत ही तंग था और इस तरह झाड़ियोंसे घिरा था कि बाहरसे सहसा दिखाई नहीं देता था। लेकिन भीतर उसमें काफी जगह थी। बीस चुने हुए वीरोंके साथ माइकल यहाँ रहता था और उसके दलके सैकड़ों वीर इधर उधर बिखरे रहते थे जो क्षणभरकी सूचनापर इकट्ठे किये जा साकते थे।

एमेटके आगमनकी सूचना बातकी बातमें चारो ओर दे दी गयी और देखते देखते हजार वीर अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित वहाँ आ जुटे।

था। इस तरह उसे देखनेका अभिप्राय नीलनसे छिपा नहीं रहा। तेजसे उसका जी जल उठा।

इसके बाद फिर सन्नाटा छा गया। एमेटने दो बार बोलनेकी चेष्टा की लेकिन दोनों बार वह असफल रहा। इतने जबर्दस्त सहायकके रहते भी वह असफल हुआ, इसका स्मरण आते ही उसका गला भर आता था और वाणी अवरुद्ध हो जाती थी।

बहुत देरके बाद उसकी जबान हिली। उसने कहाः—कलकी दुर्घटनाका समाचार तो आपको मिल ही चुका होगा?

माइकलने गम्भीर होकर कहा ;—बुरी खबरें तेजीसे फैलती हैं और हमलोगोंका सन्देश तो चिड़ियों द्वारा इन जंगलोंमें आता है। आपका पहला प्रयास व्यर्थ गया। लेकिन यदि ईश्वरने चाहा तो हमलोग अवश्य ही विजयी होंगे। आपने हमलोगोंको खबर क्यों नहीं दी? यदि हमलोग पहुँच गये होते तो घटनाका रूप अवश्य वदल गया होता। हमलोग अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित आपका रास्ता देखते रहे, लेकिन आपने एक चिड़िया भी इधर नहीं भेजी। जबतक यहाँतक समाचार पहुँचा तबतक तो सब कुछ खतम हो गया था।

एमेट—दुर्भाग्यके सिवा और क्या कह सकते हैं। यही तो सबसे बड़ी दुर्घटना हुई। मेरे इन्ही साथीने आपके पास संदेश भेजनेका बीमा लिया था। लेकिन—

नीलन बीचमें ही बोल उठा :—मैंने इसका भार ओवेन रैफर्टीको दिया था। उसने प्रसन्नतापूर्वक यह भार अपने ऊपर ले लिया था। मुझे उसका पूरा भरोसा था। मालूम होता है कि यहाँ न पहुँचकर वह सैनिकोंके बैरकमे पहुँच गया।

एमेटको इससे बहुत क्षोभ हुआ। बोलाः—तुम उस मरे हुए

आदमीका अपमान कर रहे हो। वह विश्वासघाती नही था। तुम्हें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि हमलोगोंके देखते-देखते वह सैनिकोंकी गोलीका शिकार बन गया।

मेलची भूल नही गया था। उसने जान बूझकर इस इल-जामको उसके सिर थोपा क्योंकि उसका प्रतिवाद करनेके लिए वह कब्रसे वापस नहीं आ सकता था।

नीलनने कड़ककर कहाः—उसकी भूलको देखते हुए यह दण्ड बहुत कड़ा नहीं कहा जा सकता। चाहे उसका विश्वास-घात हो चाहे भूल हो, हमलोगोंका तो सर्वनाश हो गया।

माइकल—इसे सर्वनाश नही कह सकते। कुछ कालके लिए हमलोग भले ही दब गये हैं। लेकिन हमलोग फिर ऊठेंगे। जो बीत गया उसकी चर्चा व्यर्थ है। आप जब चाहेंगे हमलोग आपकी मददके लिए पहुँच जायँगे। जितने शीघ्र हो सके हमलोगोंको तैयारी कर डालनी चाहिये। आप कुछ खा पी लें तो मैं अपने यहाँके सब लोगोंको इकट्ठा करूँ ताकि आप उन्हें दो शब्द कह दें।

पहाड़की सबसे ऊँची चोटीपर एक गुफामें उसने अपना घर बनाया था। गुफाका द्वार बहुत ही तंग था और इस तरह झाड़ियोंसे घिरा था कि बाहरसे सहसा दिखाई नहीं देता था। लेकिन भीतर उसमें काफी जगह थी। बीस चुने हुए वीरोंके साथ माइकल यहाँ रहता था और उसके दलके सैकड़ों वीर इधर उधर बिखरे रहते थे जो क्षणभरकी सूचनापर इकट्ठे किये जा साकते थे।

एमेटके आगमनकी सूचना बातकी बातमें चारो ओर दे दी गयी और देखते देखते हजार वीर अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित वहाँ आ जुटे।

भोजनके बाद एमेटने थोड़ा विश्राम किया। उसके बाद
ह माइकलके साथ वहाँ आया जहाँ उसके वीर उत्सुकतासे
सकी प्रतीक्षा कर रहे थे। एमेटको देखतेही सब उठकर खड़े
ो गये। उन्हें सम्बोधन करते हुये माइकलने कहाः—साथियो!
ायलैंण्डका सबसे बड़ा वीर, योग्य पिताका योग्य पुत्र राबर्ट
एमेट आज हम लोगोंके बीच उपस्थित है। स्वदेशको स्वतंन्त्र
करनेके लिये इन्होंने जो प्रयास किया था उसकी विफलता का
समाचार आपलोगोंको मिल चुका है। कल इन्होंने किला दखल-
कर लेनेका प्रयास किया था लेकिन इन्हें सफलता नही मिली
क्योंकि समय पर इनकी सहायता करनेके लिये आपमेंसे कोई
मौजूद नहीं था। मैंने इन्हें वचन दिया है कि आपके अगले आ-
क्रमणके समय विकलोके वीर सबसे आगे रहेंगे।

यह सुनकर वहां उपस्थित वीर अपने हथियारोंको चम-
काते हुए बोल उठे—हम लोग तैयार हैं। जितना जल्दी हो उत-
नाही अच्छा है। बहुत दिनों से हमारी तलवारोंने जालिमों का
रक्तपान नही किया है।

माइकल—यही उपयुक्त अवसर है। लोहा तभी पीटनेसे
फैलता है जब वह गर्म रहता है। मैं इन वीरोंको अच्छी तरह
जानता हूँ। जो कहेंगे उसे अवश्य पूरा करेंगे। कोई भी शक्ति उन्हें
पीछे नही हटा सकती। यदि कोई दूसरा उपाय नहीं होगा तो
ये अपने दांतो तथा नखो से किलेको विदीर्ण कर डालेंगे।

नीलन—माइकल ठीक ही कह रहे है। एमेट! लोहा जबतक
गर्म रहे तभी तक पीटा जा सकता है। हम लोगों को डबलिन
वापस चलना चाहिये और जो खोया है उसे प्राप्तकर लेना
चाहिये।

लेकिन एमेटने अपनी गर्दन हिला दी। उसने भीड़ को संबो-

धन करते हुए कहा—मित्रो ! हमें धैर्यसे काम लेना चाहिये। हमलोगोंने प्रहार किया लेकिन असफल रहे। दूसरी चढ़ाई के लिये हम लोगोंको समयकी प्रतीक्षा करनी चाहिये।

भीड़से भनभनाहटके शब्द सुनाई पड़े। एक वीरने मुँह बनाकर कहा :—हम लोग सदा उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षा ही करते रहते हैं। वास्तवमें कुछ काम नहीं करते।

उसकी व्यंग्यभरी बात एमेटके दिलमें चुभ गई। उसकी भौंहे तन गईं। उसने तीखे स्वरमें कहना आरंभ किया :— प्रतीक्षाको सबसे अधिक मैं घृणा करता हूँ। इस तरहके शुभ कार्य के लिये कौन देर करना चाहेगा। कलकी भीषण असफलतासे मैं बहुत ही शर्मिन्दा हुआ हूँ। मैं जानता हूँ कि आप लोग बड़े वीर और साहसी हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि सैकड़ो अन्य लोग भी आपका अनुकरण करनेके लिये तैयार हैं। हफ्ते भरके भीतर हम लोग आधे आयर्लैण्डमें विद्रोहकी यह आग प्रज्वलित कर सकते हैं। इस बार हमलोग इस तरहका संग्राम करना चाहते हैं जो हमारी पिछली शर्मको धो दे। मैं इसी तरहका युद्ध इस बार करना चाहता हूँ।

सबका चेहरा प्रसन्नतासे खिल उठा।

एमेटने फिर कहना आरम्भ किया—लेकिन इस वक्त यह सम्भव नही है। दुश्मन सावधान और सतर्क हो गया है। वह उत्सुकतासे उस अवसरकी तलाशमें है जब वह विद्रोहकी आग को सदाके लिये बुझा दे। इसलिये यदि हम लोग जल्दीबाजीसे काम लेंगे तो हम लोगोंको कोई लाभ नही होगा। हम लोग देशको लाभ पहुँचानेके बदले उसे हानि पहुँचावेंगे। यदि आज मैं आप लोगोंको आदेश दे दूँ तो इस आक्रमणमें जो मारे जायँगे उनकी हत्याका दोषी मैं ठहरूँगा। इसलिये देशके

कल्याणका ख्याल करते हुए हम लोगोंको समयकी प्रतीक्षा करनी चाहिये, यद्यपि लड़नेकी अपेक्षा रोक रखना कठिन काम होगा। उपयुक्त अवसर आवेगा ही। उस समय आप लोगोंको अपनी वीरता दिखानेका अवसर मिलेगा ही।

वे लोग फिर चिल्ला उठे—प्रतीक्षा करते करते हमलोग ऊब उठे हैं। शीघ्रता कीजिये।

इसी समय माइकलने आयरिश भाषामें कुछ कहा। इस-पर सबके सब हँस पड़े और उसका इशारा होते ही वे सब-के सब तेजीके साथ पहाड़ोंके बीच गायब हो गये। केवल माइकल, एमेट और नीलन वहाँ रह गये। सब कुछ इतनी फुर्तीसे हो गया कि एमेटको बहुत अधिक विस्मय हुआ।

३२

एमेटकी बातोंसे माइकलको निराशा हुई तोभी उसने नम्रतासे कहा—जहाँतक सम्भव है हमलोग प्रतीक्षा करेंगे। लेकिन इन सबोंकी हालत ठीक उस शिकारी कुत्ते की-सी हो रही है जो शिकारको अपने बगलसे निकल जाते हुए देखता है। १७९८ ई० की घटना याद कर इनका कलेजा दहकते कोयले के समान जलता रहता है।

एमेट—इन्हें अपनी वीरता दिखानेका समय आवेगा और बहुत शीघ्र ही।

माइकल—आप यहाँ कुछ दिन हम लोगोंके साथ रहें। इससे इन्हें ढाढ़स होगा और आप पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे।

एमेट—शायद मुझे शीघ्र ही फिर पेरिस जाना पड़े।

माइकल—पेरिस जानेकी भी यहाँसे बहुत सुविधा है। नावें हमेशा आती जाती रहती हैं और किसी तरहकी झञ्झट भी नहीं है।

एमेट क्षणभर चुप रहा। जो कुछ वह कहना चाहता था उसकी याद कर उसका चेहरा सुर्ख हो गया। बोला—मैं शीघ्र लौट आऊँगा। लेकिन—इतना कहकर वह फिर चुप हो गया।

माइकल—'लेकिन' क्या?

एमेट—मुझे सबसे पहले डबलिन जाना चाहिये।

माइकल—आप भी विचित्र आदमी हैं। जब हमलोग शेरकी माँदसे दूर रहना चाहते हैं तब आपही वहाँ समाधि क्यों लगायेंगे। वहाँ सबसे ज्यादा खतरा तो आपको ही है। डबलिनमें दरदर तलाश आपकी हो रही है, हम लोगोंकी नहीं। जहाँ हम लोगोंके लिये खतरा है वहाँ आपके लिये मृत्यु है। आप यहाँसे तभी हटने पावेंगे जब पूरी शान्ति हो जायगी। यदि इसके लिये जरूरत पड़ेगी तो हम आपको बाँधकर भी रखेंगे।

इतना कहकर माइकल हँसने लगा। एमेट भी हँस पड़ा। उसके कन्धेपर हाथ रखते हुए उसने कहा—आपकी सदाशयताके लिये मैं कृतज्ञ हूँ। लेकिन मुझे जाना ही पड़ेगा।

माइकलने आग्रहसे पूछा—ऐसी क्या आवश्यकता है?

एमेट—आपसे मैं कोई बात छिपाना नहीं चाहता। वहाँ जाना मेरी प्रतिष्ठा के लिये आवश्यक है। फ्रांसके लिये प्रस्थान करनेके पहले मुझे एक युवतीसे विदाई लेनी है। मैं उससे वचनबद्ध हो चुका हूँ।

इस समय तक अनी दोनोंकी बातें चुपचाप सुन रही थी। सैनिकोंके चले जानेके बाद वह बहुत कुछ सुस्त हो गई थी।

लेकिन एमेटके अकेले डबलिन वापस जानेकी बात सुनकर उससे चुप नही रहा गया। विरोधका भाव दिखलाते हुए उसने कहा—मि० रावर्ट! समझदारीकी बात कहिये। इस तरह मौतके मुँहमें पैर डालनेके लिये आपको वहाँ कोई नहीं बुला रहा है। यदि कुमारी सराहके पास कोई संवाद भेजना है तो मैं उसे बड़ी प्रसन्नतासे ले जा सकती हूँ। जहाँतक मुझे मालूम है आप उनसे किसी भी प्रकार वचनबद्ध नही हैं। साथ ही इस विदाईसे भी उन्हें जरा भी खुशी नही होगी, यदि आप पुनः वापस आनेका वचन उन्हें नही देंगे।

माइकल—अनीने सच ही कहा है। यदि आप अधिकारियों को आत्मसमर्पण नही करना चाहते तो आपको डबलिनसे दूर ही रहना चाहिये।

नीलन इसी अवसर की प्रतीक्षामे था। उसने इस तरह कहना शुरू किया मानों सच होते हुए भी उसे कहनेमें संकोच हो रहा हो। बोला :—यदि तुम समझते हो कि तुम्हें जाना ही चाहिए तो कुछ कहना सुनना व्यर्थ है। तुम्हें जाना ही चाहिए। जहाँ प्रतिष्ठा का प्रश्न है वहाँ खतरे की गणना नही की जाती। मेरी समझमे खतरा उतना संगीन नही है जितना ये लोग कल्पना करते है। यदि माइकलको स्वयं जाना होता तो वे खतरे की बातपर हँस पड़ते यद्यपि वे आपके लिए इतनी व्यग्रता दिखा रहे है। यदि चलना ही है तो मै भी चलूँगा। रातको चुपचाप हमलोग अपने डेरेमे चले चलेंगे और वहीं छिपकर पड़े रहेंगे। यहाँसे किसी भी तरह हम अरक्षित नही रहेंगे।

नीलनकी बात न तो अनीको ही जँची और न इससे डायर को ही सन्तोष हुआ। लेकिन दोनोने विरोध करना व्यर्थ समझा। उन्होंने देखा कि खतरेकी जितनी ज्यादा चर्चा की

जायगी एमेटका संकल्प उतना ही दृढ़ होता जायगा। इसलिए रातको तीनों व्यक्ति जिस तरह गये थे उसी तरह डबलिन लौट आए। डेरेपर पहुँचकर वे दोनों तो सो गये लेकिन अनी काममें लग गई। रातकी थकानकी उसे जरा भी चिन्ता नहीं थी।

नीलनको शहरमें बहुत कम लोग पहचानते थे। इसलिए वह इधर उधर घूमकर संवाद बटोरने लगा और इस तरह दौड़धूप करने लगा मानों वह छिन्न-भिन्न सूत्रको पुनः जोड़ने की चेष्टा करता हो। साथ ही वह एमेटको खतरेमें पड़नेसे सदा रोकता रहा।

उसने कहा :—वे लोग आपकी खोजमें हैं। मुझे कोई पूछने वाला नहीं है और मेरे पकड़े जानेकी भी संभावना नहीं है।

इसलिए एमेट दिन रात घरमें ही पड़ा रहता और लिखने पढ़नेमें अपना दिन बिताता था। उसकी नंगी तलवार तथा गोलियोंसे भरी पिस्तौल सदा उसके पास रहती थी। उसने इतना दृढ़ निश्चय किया था कि जीते जी उसे कोई गिरफ्तार नहीं कर सकेगा। अचानक हमला रोकनेके लिए वह सदर दरवाजा भीतरसे बन्द रखता था और दरवाजा खोलवानेके लिये यह संकेत नियत कर दिया गया था कि तीन बार लगातार खटखटाकर थोड़ी देर बाद चौथी बार दरवाजा खटखटाया जायगा।

इसी बीच एमेटने अनीको कुमारी करेनके यहाँ पत्र लेकर भेज दिया था। पत्रमें उसने लिखा था कि यदि संभव हो तो उसी पुरानी जगहपर रातको मिलने का यत्न करना।

अनी यह पत्र लेकर कुमारी सराहके यहाँ गुनगुनाती हुई [illegible]। कुछ दूर निकल जानेपर उसपर अचानक हमला हुआ।

दो सिपाहियोंने उसे कसकर पकड़ लिया।' उनसे छुटकारा पानेके लिए अनीने खूब हाथ पैर फटकारा लेकिन कुछ फल नहीं निकला। वे दोनों उसे घसीटकर एक सूनसान गलीमें एक मकानमें ले गये जहाँ करीब बीस सैनिक बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे।

उन सिपाहियोंने उसे इतनी बेरहमीसे घसीटा था कि मकानके अन्दर पहुँचते पहुँचते वह बेदम होकर फर्शपर जा गिरी। अपनेको सम्हालकर वह उठ खड़ी हुई और अपने गिरफ्तार करनेवालोंसे उसने कर्कश स्वरमे पूछा—किस अधिकारसे तुमलोगोंने मुझे इस तरह पकड़ा है?

सिपाहियोंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वे चुपचाप खिसक गये। उनके स्थानपर अनीने जालिम मेजर सरको खड़े देखा जिसके नामसे ही डबलिनका बच्चा बच्चा काँप उठता था।

मेजर सर जितना क्रूर था उतना ही उच्छृंखल था। सरकारसे उसे अनियंत्रित अधिकार प्राप्त था। डबलिनमें उसकी अनियन्त्रित सत्ता थी, वह जो चाहे कर सकता था।

उसके क्रूर चेहरेको देखकर अनी भी काँप उठी। अनायास उसका हाथ छातीपर चला गया जहाँ उसने एमेटका पत्र छिपाकर रखा था। उसके हाथकी यह गति उस काइयाँ मेजरसे छिपी नहीं रह सकी। बोलाः—तुम्हें छेड़नेके लिये मुझे खेद है। लेकिन मैं समझता हूँ कि तुम्हारे पास मेरे लिए खत है जो तुम दूसरेको देने जा रही थी।

अनीने साहस बटोरकर कहा!—मेरे पास कोई खत नहीं है।

मेजरने दाँत पीसते हुए कहा,—झूठ बोलनेसे क्या फायदा।

इससे मुझे इतमीनान तो हो नहीं सकता। तुम व्यर्थ अपना अपराध बढ़ा रही हो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पास वह खत है और मैं यह भी जानता हूँ कि तुमने उसे कहाँ छिपा रखा है। यदि तुम उसे राजीसे मेरे हवाले नहीं करती तो मुझे जबर्दस्ती उसे लेना पड़ेगा। तुम्हारी तलाशी लेनेमें मुझे जरा भी हिचक नही होगी। लुकाछिपीके इस खेलमें उन्हें आनन्द ही मिलेगा।

उसने आँखें तरेर कर अनीकी तरफ देखा और अपने दो आदमियोंको नाम लेकर बुलाया।

अनीने देखा कि उसने जो कुछ कहा है उसे वह कार्यमें परिणत करके ही रहेगा। उसने चटपट खतको बाहर निकाला और उसे अपने मुँहकी तरफ बढ़ाया। लेकिन मेजर सरने लपककर उसकी कलाई पकड़ ली। उसे इतना जोरसे दबाया कि अनीकी कलाई की हड्डियाँ बोल उठी। उसने खत उसके हाथसे छीन लिया। बिना किसी हिचकके उसने मुहर तोड़कर खत बाहर निकाला। खत पढ़कर उसने गाली देते हुए कहा,— यह उसीके अक्षर हैं और उसीके हस्ताक्षर भी हैं लेकिन शैतानने अपना पता नही लिखा है।"

खतको अलग रखकर वह अनीकी तरफ मुड़ा और गुर्राकर बोला,—यह शैतानका बच्चा एमेट कहाँ छिपा हुआ है?

अनीने कोई उत्तर नही दिया।

मेजर चिल्ला उठा :—जो मैं पूछता हूँ उसका ठीक ठीक उत्तर दे दो नही तो तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा।"

अनीके होठ तक नही हिले। वह पत्थरकी प्रतिमाकी तरह चुपचाप खडी रही। वह निडर होकर उसके खूँखार चेहरेको देखती रही।

मेजर सरने अपने क्रोधको दबाते हुए कहा :—मैं तुम्हारे

साथ कड़ाईसे पेश नही आना चाहता। लेकिन तुम भी इसके लिए मुझे उत्तेजित न करो। इस बागीकी गिरफ्तारीके लिए ५०० पौंड इनाम है। यदि तुम्हारी मददसे उसे हमलोगोने गिरफ्तार कर लिया तो ५०० पौंडकी यह रकम तुम्हे मिल जायगी। तुम्हारे लिए यह थोड़ी रकम नहीं है। इतनी बड़ी रकम हाथसे जाने देना मूर्खता होगी। देर न करो।

अब अनीने अपना मुँह खोला। उसने कड़ककर कहा :—

चूल्हेंमें पड़ो तुम और तुम्हारा यह रुपया, यदि तुम्हारी लाशके बराबर मुझे सोना भी दिया जाय तोभी मै मि० राबर्ट का एक बाल बाँका नही होने दूँगी।

इतना सुनते ही मेजर सरकी भौहें तन गईं। बोला :—अच्छी बात है। इसका पता तुरत लग जाता है। मैं तुम्हारी खाल जिन्दा खिचवा लूँगा। तुम्हे कोल्हूमें पेरकर मै तुमसे कबूल करवा लूँगा।"

इतना कहकर उसने उस सिपाहीसे कहा जिसने अनीको गिरफ्तार किया था,—मेंकिन्स! इस डाइनको बोलना सिखा-दो। तुम इस कलामें निपुण हो।

उसकी आज्ञा पाते ही उस सिपाहीने तेज भालेकी नोक को अनीकी छातीमे घुसेड़ दिया। वेदनासे अनी छटपटा उठी। लेकिन उसने अपने होठको इस तरह दबाया कि मुँहसे कराह तक नही निकलने दिया।

मेजर गौरसे उसकी तरफ देखता रहा। उसके साहस और धैर्यको देखकर वह और भी उत्तेजित हो उठा। बोला :—"दूसरा वार करो।"

इस बार उस सिपाहीने उसकी जाँघ बाहँ और गर्दनको क्षत विक्षत कर दिया। उसके शरीरसे रक्तकी धारा बह

निकली । उसका शरीर खूनसे लथपथ हो गया लेकिन उसने मुँह नहीं खोला।

उसकी दृढताने मेजर सरको क्रोधसे पागल बना दिया। उसका चेहरा शैतानकी तरह खूँखार हो उठा। जुलमके नये साधनोंकी खोजमें वह इधर उधर आँखें दौड़ाने लगा। उसकी निगाह एक खाली गाड़ी पर पड़ी, जिसका बम ऊपरको उठा था। उसे देखकर उसने कहा :—इसके गलेमें रस्सी बाँधकर उसी बममें उसे इस तरह लटका दो कि इसका दम घुटने लगे।

उसके मुँहसे ये शब्द निकलते ही दर्जनों सिपाही दौड पड़े, गाड़ीको खींच लाये। उन्होंने उसके बममें रस्सी बाँधकर अनी-के गलेमें डाल दी और पीछेसे गाड़ीको दबानेके लिए हुक्म की प्रतीक्षा करने लगे।

३३

फाँसीकी रस्सी अनीके गलेमें पड़ी थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था तोभी वह दृढ़ थी। वह मन ही मन प्रार्थना करने लगी। उसके होंठ हिलने लगे।

मेजर सरकी क्रूर दृष्टि उसके चेहरेपर थी। कुछ देर चुप रहनेके बाद उसने कहा :—इसे झूठी धमकी मत समझ! मैंने निश्चय कर लिया है कि यदि तू ठीक ठीक नहीं बतलाएगी तो मैं तेरा दम घोंट दूँगा। धन या मृत्यु दोमेंसे तुम्हें एक चुन लेना है। जल्दी करो। वह बागी कहाँ छिपा है?

अनीने घृणासे इस तरह मुँह बनाकर उसकी तरफ देखा

कि वह भी सहम गया। बोली :—कुछ बतलाने की अपेक्षा मैं अपनी जीभ काटकर तुम्हारे मुँह पर थूक देना पसन्द करूँगी।

क्रोधसे अभिभूत उस चाण्डालने हाथ उठाकर संकेत किया और उसके क्रूर आदमियोंने गाड़ीको पीछेसे पकड़कर जोरसे दबाया।

रस्सी तन गई। अनीका दम घुटने लगा। ईश्वरकी याद करते करते वह बेहोश हो गई।

मेजरका इशारा पाकर बम नीचे कर दिया गया। जमीन पर पैर पड़नेके कुछ देर बाद उसे होश हुआ। गलेमें रस्सीका फन्दा न होता तो वह गिर पड़ती। होशमें आते ही मेजरने उससे फिर पूछा :—क्या तू अब बतलानेके लिए तैयार है?

उसके सांस फूल रहे थे। उसने अस्पष्ट शब्दोंमे कहा: — "कभी नहीं"। तुम मेरी हत्या भले ही कर सकते हो। लेकिन मुझसे कुछ जानकारी नहीं प्राप्त कर सकते।

वही क्रिया दूसरी बार की गई। उसी तरह वह फिर नीचे उतारी गई। मेजरने फिर उससे पूछा। उसने फिर वही उत्तर दिया।

तीसरी बार की क्रियाने उसे पूरी तरह बेदम कर दिया। उसका निर्जीव शरीर गाड़ी के बमसे झूलता रहा। जब वह नीचे उतारी गई तो मांसके लोथेकी तरह उसका शरीर भूमि पर फैल गया।

उसकी दशा देखकर मैकिन्सने कहा :—यह तो मर गई।

मेजर सर उसके शरीरपर क्षणभर झुका रहा। बोला :— अभी यह मरी नहीं है। इसके मुँहपर पानी छिड़ककर इसे

होशमें लानेका यत्न करो। शायद अब भी इसके पेटसे बात निकाली जा सके।

मैंकिन्स बाल्टीमें पानी भरकर लाया और अनीके शरीर पर उडेल दिया। ठंढा जल शरीरपर पड़ते ही उसकी पलकें हिली। जीवनका और कोई चिह्न उसमें शेष नहीं था।

मेजर सर अधीर हो रहा था। एक एक क्षणका विलम्ब उसे पहाड़के समान प्रतीत होता था। अपना क्रोध किसीपर उतारनेके लिए उसने जिस समय आँगनमें इधर उधर निगाह दौड़ाई उसकी दृष्टि अचानक मेलची नीलनपर पड़ी जो पीछेके द्वारसे उधर ही आ रहा था। मेजर सर का क्रोध शान्त हो गया। उसका चेहरा खिल उठा। उसने चिल्लाकर कहा :—तुम खूब मौकेसे आए नीलन! इतनी देर तुमने कहाँ लगाई?

उसके पास पहुँचकर नीलनने कहा :—आप धीरेसे क्यों नहीं बोलते। जब किसीका नाम लेकर पुकारते हो तब तो आहिश्ते बोलनेकी आदत डालिये।"

मेजरके हृदयमें नीलनके लिए लेशमात्र भी श्रद्धा नहीं थी। क्रूर और जालिम होते हुए भी वह वीर था। कायरके लिये उसके हृदयमें कोई स्थान नहीं था। उसने घृणाके साथ प्रसन्नताका भाव दिखाते हुए पूछा :—आखिर इतनी देर कहाँ लगाई।"

नीलनने चारो ओर देखकर समझ लिया कि साफ बात करनेमे यहाँ किसी तरहका खतरा नहीं है। बोला :—आपको मेरी परिस्थितिका ख्याल करना चाहिये। मुझे किस तरह फूँक फूँककर कदम रखना पड़ता है। मेरे एक ओर कुँआ है तो दूसरी ओर खाई है। देशभक्तके धोखेमें सैनिक मेरा अन्त कर सकते हैं, विश्वासघाती जानकर विद्रोही मुझे अपनी गोलीका

शिकार बना सकते हैं। विकलोमें तो मैं करीब करीब फँस ही चुका था। लेकिन किसी तरह मैं शिकारको यहाँ पुनः लौटा ला सका।

मेजर—आपने वादा किया था कि आप सबेरे ही हमलोगों को सूराख बता देंगे। दो घंटे तक हमलोग आपकी प्रतीक्षा करते रहे। इसी बीच एमेटकी दूती अनी हमलोगोंके हाथ लग गई।

अनी डेवलिनका नाम सुनते ही नीलन चौंक पड़ा।

मेजर—हाँ, यही तो नाम है। देखनेमें तो बड़ी सुन्दर है लेकिन कलेजा उसका पत्थरसे भी कड़ा है। हमलोगोंने बड़ी चेष्टा की लेकिन उसने मुँह नहीं खोला।

इतना कहकर उसने अपनी निगाह उस तरफ घुमाई जहाँ अनीका निर्जीव शरीर जमीनपर पड़ा था। उसकी हालत देखते ही नीलन समझ गया कि मेजरकी कोशिशका क्या रूप था। वह उसके निकट चला गया और उसके विखरे केशोंको हटाने लगा। उसका सफेद चेहरा देखते ही नीलन व्याकुल हो उठा और दो कदम पीछे हट गया। पूछा,—क्या उसे मार ही डाला?

मेजर सरने हँसकर कहा,—मार डालने लायक तो कुछ नहीं किया गया। भालोंसे दोचार बार और गर्दनमें रस्सी डालकर तीन बार लटकाया मात्र गया। यदि आप इसके लिए आतुर हैं तो आधे घंटेमें इसे होश हो जायगा।

नीलन—यह सब आपने क्यों किया। उसकी जरूरत ही क्या थी। आपको तो मालूम ही था कि मैं आरहा हूँ।

मेजर सर इस तरहकी बातोंको सुननेके लिए तैयार नहीं थे। रुखाईसे कहने लगे:—मुझे क्या करना चाहिये, इसे मैं

जानता हूँ। आपके सिखलानेकी जरूरत नहीं है। मुझे क्या पता कि आप कहाँ छिपे हैं और कब आवेंगे। यहाँ आनेपर भी आपको कोई जल्दी नहीं प्रतीत होती।

इस एकही घुड़कीमें नीलनके होश जाते रहे। वे भीगी बिल्ली बन गये। मेजर सरके पास जाकर उन्होंने उनके कानमें धीरेसे कुछ कहा।

मेजर सर—उसके पास शस्त्र भी हैं।

नीलन—हाँ, लेकिन—

मेजर सब कुछ समझ गया, बोला :—आप तो साथ नहीं चलेंगे! चलना ठीक भी नहीं होगा। आप यहीं मौज कीजिये। लेकिन जरा सावधान रहियेगा। यह लड़की बड़ी खूँखार है।

———

३४

मकानके सभी दरवाजों और खिड़कियोंको बन्दकर राबर्ट एमेट दिनभर अकेला बैठा लिखनेमें व्यस्त रहा। निराशाका पहला उद्वेग समाप्त हो चुका था। भविष्यकी आशाने उसमें नव चेतना भर दिया था। अपनी रचनाके टूटे हुए तारोंको जोड़कर अगले हमलेके लिए तैयार करनेमें उसका मस्तिष्क व्यस्त था। इस बातसे वह मन ही मन सबसे ज्यादा प्रसन्न हो रहा था कि उसके दलमें एक भी विश्वासघाती नहीं था। आयर्लैण्डकी यह पहली क्रान्ति थी जिसमे देशद्रोही और विश्वासघाती नहीं थे। खतरा और प्रलोभन दोमेंसे एक भी उन्हें विचलित नहीं कर सका। वह यही सब सोचता अधिकारी वर्गको लिख रहा था

न्हें सावधान हो जाना चाहिये। १७९८ ई० के देशभक्तोंके उन्होंने जो जुल्म और अत्याचार किया था उससे उन्हें आना चाहिए। इस बारकी क्रान्ति साधारण क्रान्ति है। सरकारके सिर पटकनेपर भी इसका पता नहीं लगता।

'अधिकारियोंको यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वर्त· क्रान्तिका उन्हें कोई पता नहीं है। यदि अधिकारी वर्ग ा पता नहीं लगा सकते तो अपने आतंकोंसे इसे दबानेकी आशा कर सकते हैं। जो ब्रिटिश सरकारके खिलाफ षड्- रचता है उसकी जान तो खतरेमें रहती ही है, यह कोई ात नहीं है। उसके सामने अधिकारियोंके जुल्मके अनेकों हरण मौजूद हैं। यदि वे उदाहरण उसे विचलित नहीं कर ते तो भविष्यके किसी प्रकारके जुल्म भी उसे विचलित कर सकेंगे। कुछ दुर्बलों और कमजोरोंको फाँसीपर लट- ार वे क्रान्तिकी उस लहरको नहीं दबा सकते जिसका पता भी नहीं लग सका है।"

वह इस तरह तन्मय होकर लिख रहा था कि उसे समय लेशमात्र भी ज्ञान नहीं रहा। आँख उठाकर देखा तो तीसरा : हो गया था। उसने अपने मनमें कहा :—'अभी तक अनी : नीलनमेंसे कोई नहीं आया। अब तक तो उन्हें आ जाना हिये था।' वह यही सोच रहा था कि किसीने संकेतके अनु- : दरवाजा खटखटाया। यह संकेत नीलन और अनी दो को मालूम था।

उसने समझा कि अनी ही आई होगी। वह उछलकर दर- ोके पास जा पहुँचा। उसने दरवाजा धीरेसे खोल दिया। ा खुलते ही उसने द्वारपर मेजर सरको खड़े पाया। वह

अपना कर्तव्य सोच भी नहीं पाया था कि मेजरके पिस्तौलसे घायल होकर वह जमीनपर धड़ामसे गिर पड़ा। तेजीसे भीतर घुसकर मेजर सर आगे बढ़ा और उसके हथियार तथा कागजोंको अपने अधीन कर लिया।

क्षण भर एमेट बेहोश रहा। उसके बाद वहीं मुर्दे की तरह पड़ा पड़ा अपना कर्तव्य सोचने लगा। आँखें मूँदे ही मूँदे उसने देखा कि एक सैनिक उसे घेरकर खड़ा है। एमेट झटका देकर उठ खड़ा हुआ और उस सैनिकको उठाकर जमीनपर पटक दिया। जब तक वह सम्हले तब तक एमेट पीछेकी द्वार से बगीचेकी तरफ भाग चला। वह सैनिक भी उसके पीछे दौड़ पड़ा। उसके पैरों की आवाज उसके कानमें साफ सुनाई दे रही थी।

इसी समय उसके कमरेकी खिड़की खुली और मेजरने चिल्लाकर कहा :—"गदहा! उसके पीछे क्या दौड़ता है। गोली चला।"

दूसरे ही क्षण पिस्तौलके दगनेकी आवाजसे सारा बगीचा गूँज उठा। गोली एमेटके कन्धेमें लगकर धँस गई। एमेटके पैर लड़खड़ाने लगे तोभी वह दौड़ता रहा।

इसी समय गोलीकी आवाज सुनकर दो सैनिक दीवाल फाँदकर बागमें कूद पड़े और उसका रास्ता रोक लिया।

हर तरहसे लाचार होकर एमेट खड़ा हो गया। दर्दसे उसके पाँव सीधे नहीं पड़ रहे थे। जो सिपाही उसका पीछा कर रहा था वह उसके पास पहुँच गया। पिस्तौल उसी तरह उसके हाथमें थी। इस तरह कायरतापूर्ण प्रहार करनेपर उसे क्षोभ हो रहा था। एमेटके शरीरमें हाथ लगानेका उसे साहस

नहीं हुआ। इसी समय मेजर सर कमरेसे निकलकर बागमें आ पहुँचा। एमेटने चुपचाप आत्मसमर्पण कर दिया।

३५

अनी डेवलिनका शरीर हिला। वह धीरेसे कराह उठी। उसकी आँखें धीरे-धीरे खुलीं। उसने अपनेको एक बखारमें फूसपर पड़े पाया। खिड़की और खुले दरवाजेसे भीतर काफी रोशनी आ रही थी। वह चारों ओर विस्मयके साथ देखने लगी। वह सोचने लगी कि वह यहाँ कब और कैसे आयी।

नीलन उसकी बगलमें मूर्तिवत् खड़ा था। उसकी आँखोंमें कामजनित आतुरता भरी थी। वह टकटकी लगाकर उसकी ही ओर देख रहा था। उसके हाथमें चाँदीका फ्लास्क था। तेज ब्राण्डीकी कड़आहट अनीके मुँहमें मालूम हुई।

नीलनपर दृष्टि पड़ते ही उसने उठनेका यत्न किया; लेकिन अतिशय पीड़ाके कारण वह पुनः लेट गयी। उसके सारे शरीरमें व्यथा थी, उसकी गर्दन जल रही थी, पीड़ाके साथ ही उसकी स्मृति भी जाग उठी।

नीलनको वहाँ देखकर उसे लेशमात्र भी विस्मय नहीं हुआ। वह पूछ बैठी—वे सब कहाँ हैं? मेजर सर और उसके हत्यारे कहाँ गये?

नीलनने उसे सान्त्वना देते हुए कहा,—डरो मत। वे सब चले गये। अब वे वापस नहीं आवेंगे। यदि तुम थोड़ा सो लेती तो अच्छा होता। मेजर तथा उनके सिपाहियोंका कोई डर नहीं है। मैंने उन्हें भगा दिया।

उसने अधीर होकर कहा—डर? मैं उन शैतानोंसे जरा भी नहीं डरती। वे चाहे जितना भी जुल्म क्यों न करें। मैंने उनसे साफ-साफ कह दिया था। मैंने इसे सावित भी कर दिया। मुझे अपनी जरा भी चिन्ता नहीं है। मेरे जीवनका मूल्य ही क्या है, मुझे चिन्ता है मि० राबर्टकी। उनका जीवन खतरेमें है। सब उनकी ही खोजमें हैं। वे किसी भी वक्त पकड़े जा सकते हैं। डेरेमें वे अकेले हैं। उनके साथ कोई है भी नहीं जो उन्हें सचेत कर सके या मदद दे सके।

एमेटके संकटका स्मरण आते ही उसकी सारी व्यथा गायब हो गयी। वह लड़खड़ाती हुई उठ खड़ी हुई। उसके घावोंसे खून निकल पड़े; लेकिन उसने लेशमात्र भी परवा नहीं की। मेलचीसे बोली—चलिये।

लेकिन मेलचीने उसका बाँह पकड़कर रोक लिया। मेलची-का हाथ ठीक उसके घावपर पड़ा था, उसमेंसे खून वह चला; लेकिन उसने सीतक नहीं किया।

मेलची—तुम यहीं पड़ी रहो। वे खतरेसे बाहर हैं। इस समय बाहर निकलना उचित नहीं। हम लोग पकड़े जा सकते हैं।

अनीने गरजकर कहा—मैं इसकी परवा नहीं करती। नेताके बचानेमें यदि हम लोगोंके प्राण भी चले जायँ तो कोई हर्ज नहीं।

मेलचीकी आँखोंमें खून उतर आया। डाहसे उसका शरीर जल उठा। उसने उसकी कलाई कसकर पकड़ ली और उससे सटकर बोला—तुम्हें एमेटके लिए इतनी व्यग्रता है या उसकी नेतागिरीके लिए!

इस व्यंगने अपना काम किया। अनीका चेहरा लाल हो

गया। उसके हृदयके इस गुप्त रहस्यपर आघात पड़नेसे वह कांप उठी। नीलन क्रुद्ध तो था ही। उसने पुनः चोट की। बोला :—मैं बहुत पहलेसे यही समझता था। लेकिन तुम्हारी इस हरकतका कुमारी करेनपर क्या प्रभाव पड़ेगा। तुम अपने ही लिए तो उनका प्राण बचाना चाहती हो!

अनीका स्वाभिमान जाग उठा। उसने कहा—तुम झूठे हो। मेरी चिन्ता कुमारी करेन और स्वदेशके लिए है।

नीलनने उसी तरह वार किया—तुम जो चाहो कहो; लेकिन मुझे शक है। यदि कोई उन्हें बचा ले तो तुम उसे क्या दोगी?

अनी—जो वह माँगे। मैं जीवन-भर उसका गुलाम बनी रहूँगी।

नीलन हँस पड़ा। उसकी हँसीमें व्यंग्य था, विनोद नहीं। बोला—मैं बात बनाना नहीं जानता। मैं साफ पूछता हूँ। यदि मैं उन्हें बचा लूँ तो तुम मुझसे शादी कर लोगी?

उसकी आँखे काम-वासनासे उद्दीप्त थीं। वह डर गयी। लेकिन एमेटके संकटकी यादने उसके सारे भयको दबा दिया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह खतरेमें है और नीलन यह जानता है। बोली—यदि उन्हें तुम बचा लो और सही सलामत फ्रांस या बिकलो पहुँचा दो तो मैं दूसरे ही दिन तुमसे विवाह कर लूँगी।

इतना कहकर वह पुनः द्वारकी ओर बढ़ी। लेकिन नीलनने उसे कसकर पकड़ रखा था। वह सोचने लगा। वह जानता था कि एमेटकी रक्षा असंभव थी। उसे वह बचाना चाहता भी नहीं था। वह तो किसी उपायसे इसे धोखा देकर अपना बना लेना चाहता था।

उपाय सोचनेमें उसे कुछ समय लग गया। अनी अधीर हो कर उससे अपना हाथ छुड़ाने लगी। उसने कहा—जल्दी-बाजीसे काम बिगड़ जानेकी संभावना है। यहाँसे तुम कहाँ जावोगी और क्या करोगी ?

अनी—मैं उन्हें सचेत कर दूँगी। इन सबोंको अभीतक उनका पता नहीं मालूम है, नहीं तो वे मेरे पीछे अपना समय नष्ट नहीं करते।

नीलन—मैंने उन्हें सचेत कर दिया है। वे खतरेसे बाहर हैं। तुम्हारे कहने से पहले ही मैंने तुम्हारी कृतज्ञता प्राप्त कर ली है।

लेकिन इससे अनीको सन्तोष नहीं हुआ। एमेटके खतरे-की संभावना उसके दिलमें बढ़ती गयी। बोली—"मैं वहाँ एक बार जाकर अपनी आँखों देख लेना चाहती हूँ।" इतना कह-कर उसने अपना हाथ छुड़ा लिया। बोली—आप मेरा रास्ता छोड़ दें। मैं वहाँतक जाऊँगी ही। आपकी इच्छा हो तो आप साथ चलें या यहीं रहें।

मेलची उसकी निर्भीकता और साहसको भली भाँति जानता था। विरोध करना उसने व्यर्थ समझा। उसके मनमें ख्याल आया कि इसकी बातको मान लेना ही उत्तम होगा। यह करीब एक घंटा बेहोश पड़ी थी। इसी बीच एमेट गिरफ्तार होकर जेल चला गया होगा। जब हम लोग वहाँ पहुँचेंगे तो मकान खाली मिलेगा। मैं उसे समझा सकूँगा कि मेरी चेता-वनी पाकर वह कहीं अन्यत्र चला गया और सुरक्षित है। इस तरह मैं इसे प्राप्त कर लूँगा। उसने क्षणभरमे अपना कर्तव्य निश्चय कर लिया। बोला—तुम्हें मेरी बातोंपर विश्वास नहीं

है। तब चलकर खुद देख लेना कि मेरी बातें सच हैं कि नहीं।

मेलचीको क्या पता कि एमेट जख्मी हो गया है और उसका घाव धोने तथा पट्टी वगैरह बाँधनेमे समय लग गया है। इस लिए ये दोनों ठीक उसी वक्त पहुँचे जब मेजर सर अपने दल-बलके साथ एमेटको लेकर बाहर हो रहा था। एमेट सैनिकोंके पहरेमें था। खून निकलनेसे उसका शरीर पीला पड़ गया था ; लेकिन उसका चेहरा उसी तरह निर्भीक था।

अनीने उसे देखा। दोनोंकी निगाहें चार हुईं। यही दोनों की अन्तिम भेंट थी। अनी निर्निमेष दृष्टिसे उसे देखती रह गयी। उनके चले जानेपर अनी नीलनपर झपट पड़ी।

नीलन अभीतक निराश नहीं हुआ था। अपनी सफाई देते हुए वह एमेटके उद्धार की बातें बनाने लगा। लेकिन उसी समय दूसरी सड़कसे एक दूसरा आदमी आ निकला। इसके साथ-साथ एक सुन्दरी युवती थी। उसे देखते ही नीलनके होश-हवास जाते रहे। वह अनीको उसी तरह छोड़कर भाग निकला।

अनीने उस युवतीको क्षणभरमें पहचान लिया। युवक टेरेंस-ओ गार्मन था। निराशासे अनीका हृदय चूरचूर हो गया था। वह वहीं बेहोश होकर गिर जाती लेकिन टेरीने उसे सम्हाल लिया। उस युवती की सहायतासे वह उसे गाड़ीमें ले आया जो पास ही खड़ी थी। गाड़ीपर बिठाकर ये उसे अपने डेरेपर ले गये।

अनीने बिलखकर रोते हुए नीलनके विश्वासघातका सारा दास्तान कह डाला। दोनों चुपचाप उसकी बात सुनते रहे।

उन्हें इससे जो व्यथा हुई उसका वणन शब्दोंमें नहीं किया जा सकता।

३६

डबलिन किलामें एमेटपर राजद्रोहका मुकदमा चलानेके लिए विचार-विमर्ष होने लगा। इस सभामें आयलैंण्डके एटोर्नी जेनरल, सोलिसिटर जेनरल, मि० प्लंकेट मि० मेन, मि० टाउनसेण्ड, मि० रिजबे और मि० ओग्रेटी आयलैंण्डके नियम और विधानके प्रतिनिधि स्वरूप उपस्थित थे और लार्ड क्लेयर उधर सरकारके प्रतिनिधि। इस सभाकी सबसे बड़ी विचित्रता यह थी कि मुलजिमके वकील भी शामिल थे और कार्रवाईमें भाग ले रहे थे। मि० लिओनार्ड एवं बेलीको यह कोई असाधारण बात प्रतीत नहीं हुई थी। अधिकारियोंसे पुरस्कार मिलनेके प्रलोभनके कारण वे इसे तनिक भी अनुचित नहीं समझते थे।

सबसे अचरजकी बात तो यह थी कि सभी कानूनी दिक्कतोंको वे हँसी-मजाकमें इस तरह उड़ा देते थे मानो उनके ऊपर कोई जवाबदेही नहीं है। शर्मसे सभीकी आँखें नीची रहती थी लेकिन मि० लियोनार्डको शर्म छूतक नहीं गयी थी। लेकिन लार्ड क्लेयर उन्हें घृणाकी दृष्टिसे देखता था। अपना मतलब निकालनेके लिए वह सब कुछ करता था; लेकिन वह गुप्तचरों और भेदियोंतकसे घृणा करता था।

यही बात एटोर्नी जेनरल तथा सोलिसिटर जेनरलके साथ थी यद्यपि वे शिष्टतासे काम लेते थे और अपने मनोगत

भावको स्पष्ट प्रगट नहीं करते थे लेकिन उनके सहायक सरकारी वकीलोंको इसकी लेशमात्र भी चिन्ता नहीं थी। वे अपने घृणाके भावको स्पष्ट प्रकट कर देते थे।

इस जमातमें मि० प्लुङ्केट ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके हृदयमें लियोनार्डके लिए आदर था और वे सम्मानके साथ उसके साथ पेश आते रहे। दूसरे लियोनार्डसे कुछ पूछनेकी आवश्यकता नहीं समझते थे। वहाँ मि० प्लुङ्केट उन्हींको लक्ष्यकर सब कुछ कहते थे मानों वे ही एकमात्र उनके विश्वासभाजन हों।

प्लुङ्केटने लियोनार्डसे कहा—मुझे आशा है कि जूरीकी उचित व्यवस्था हो जायगी क्योंकि सब कुछ अनुकूल जूरीपर ही निर्भर करता है।

इसपर एटोर्नी जेनरलने कहा—इसकी व्यवस्था सोलीसीटर करेंगे। उन्हे आवश्यक योग्यता और अनुभव है। यह हम लोगोके अधिकारके वाहरकी बात है।

प्लुङ्केटने रुखाईसे कहा—क्षमा कीजियेगा। अधिकारके प्रश्नपर हमलोगोंमें मतभेद हो सकता है लेकिन इस वातको सभी स्वीकार करेंगे कि सब कुछ जूरियोंपर ही निर्भर करता है। इसलिए इस बातपर पूरा ध्यान रखना आवश्यक है कि जूरी पूरे विश्वसनीय हो। इस मामलेमें हमारे मित्र एम' नेलीने सरकारकी असीम सेवा की है। उन्हें अचानक यह बात मालूम हुई कि ऐसे लोग भी मुलजिम से सहानुभूति रखते हैं जिनसे इस वातकी आशा नहीं की जा सकती थी। जूरियोमें जिन लोगोंका नाम है उनमे से वहुतोंको यह कहते सुना गया है कि वे एमेटको सर्वथा निर्दोष समझते हैं।

मुलजिमके वकीलकी हैसियतसे इन्हें यह बात मालूम हो

गयी। लेकिन देशकी शान्तिके प्रति उनका कर्तव्य इससे कहीं ऊँचा था। इससे इन्होंने इसकी सूचना सालिसिटर जेनरलको दे दी। निश्चय ही सोलिसिटर जेनरल उन लोगोंको इस मुकदमे के लिए नहीं चुने जाने देंगे। हर हालतमें हम लोगोंको यह देख लेना है कि जूरी अनुकूल हों।

एम' नेलीकी यह बड़ाई एटोर्नी जेनरलको नही जँची। खड़े होनेकी मुद्रामें उन्होने पूछा—क्या और भी सलाह मशविरा करना है?

इसपर सालिसिटर भी उठ खड़े हुए। बोले—सभी बातोंपर तो विचार कर लिया गया।

लेकिन प्लुङ्केटने फिर बाधा देते हुए कहा—सरकारकी तरफसे मुलजिमके वकीलकी बहस का क्या उत्तर दिया जायगा। इसपर हम लोगोंने विचार नही किया है।

अटोर्नी जेनरल—मैंने तो यही समझा था कि आपके मित्र मि० एम' नेली न तो सफाईके गवाह ही पेश करेंगे और न बहस ही करेंगे।

प्लुङ्केट—पर सरकारको उत्तर देनेका हक है।

एटोर्नी जेनरल—यह असाधारण बात होगी।

सालिसिटर—ऐसी अवस्थामें मैं इस अधिकारको काममें नहीं लाना चाहता।

प्लुंकेट—राष्ट्रकी शान्ति और सुव्यवस्थाके लिये मैं इस अप्रिय कार्यका भार अपने ऊपर लेना चाहता हूँ। मैं अदबके साथ यह भी कह देना चाहता हूँ कि यह काम मैं सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकूँगा। देश-द्रोहियों और बागियोंको सजा मिलना जरूरी है। लेकिन यह भी जरूरी है कि जनताको इनके क्रूर आचरणोंका दिग्दर्शन करा दिया जाय। मैं जानता हूँ कि

सालिसिटर महोदयकी तरह मुझमे वागशक्ति नहीं है। लेकिन अपने व्यवहारोंसे मेरा नाम देश-भक्तोकी श्रेणीमें आ गया है। इसलिए मेरे द्वारा इस तरहकी बगावतकी निन्दाका व्यापक प्रभाव पड़ेगा।

अपने हृदयके घृणाके भावको कुछ-कुछ छिपाते हुए एटोर्नी जेनरलने पूछा—मि० एम' नेलीका क्या विचार है?

मि० एम' नेली—मुलजिमके वकीलकी हैसियतसे अदालतमें मैं इसका विरोध तो अवश्य करूँगा, लेकिन मि० प्लुङ्केटके बहससे लाभ बहुत ज्यादा होगा। शायद आप लोगोंको मालूम नहीं है कि इस देशद्रोहके साथ जनताकी कितनी अधिक सहानुभूति है।

लार्ड क्लेयरसे नहीं रहा गया। वे बोल उठे—मि० एम' नेलीका कहना सच है। मुझे आशा है कि मि० प्लुङ्केट अदालतमें भी उतना ही प्रभावशाली भाषण देंगे जितना प्रभावशाली भाषण उन्होने गठबन्धनके विरोधमें दिया था। इससे उन्हे ही लाभ होगा।

प्लुङ्केटने उसका उत्तर देना चाहा लेकिन लार्ड क्लेयरके चेहरे पर कठोर घृणाका भाव देखकर उन्हें मुँह खोलनेका साहस नहीं हुआ। लार्ड क्लेयर घृणासे मुस्कुराने लगे। बोले—क्या किसीने नारवरीसे बाते की है। कैदीके बयानके सम्बन्धमे क्या व्यवस्था हो रही है। वह निर्भीक, साहसी और प्रभावशाली वक्ता है। उसके भाषणका बुरा असर पड़ सकता है।

प्लुङ्केट—अपने भाषणमें मैं उसपर फ्रांसके साथ मिलकर षड्यन्त्र रचनेका अभियोग लगाऊँगा। इसके बाद अदालतमें चाहे वह जो कुछ कहे लेकिन अखबारोंके लिए उसके बयानको

तैयार करना मि० एम' नेलीके हाथमें रहेगा। वे उसके बयान-को इस तरह तैयार करेंगे कि मेरे अभियोगका वह जोरदार खण्डन नहीं रहेगा। सम्प्रति इससे लाभ होगा।

लार्ड क्लेयर—आप ठीक कह रहे हैं। मि० एम' नेलीको सावधान रहना चाहिए जिससे भूल न हो। साथ ही इस बातका भी ध्यान रहे कि यह काण्ड बहुत जल्द समाप्त किया जाय। इस बातका खतरा बराबर बना है कि कहीं लोग उसे भगा न ले जायँ क्योंकि हमलोगोंके बीच मि० एम' नेलीके समान देशभक्त बहुत कम हैं जो दोनों तरफसे रकम ले सकते हैं। इनके समान अगर सभी हो जायँ तब तो हमलोगोंका झंझट ही कम हो जाय।

ओ' गार्मन नामका एक शैतान हालमें ही फ्रांससे वापस आया है। उसने राबर्ट एमेटके भगानेकी सारी व्यवस्था कर ली थी। भाग्यवश मुझे समय पर सूचना मिल गयी और मैंने उसे गिरफ्तार कर लिया।

प्लंकेट सभी देशद्रोहियोंकी हरकतोंसे जानकार था। उसने कहा,—मेलची नीलनने उसकी खबर आपको दी होगी। सरकारको उसका कृतज्ञ होना चाहिए। बहुत बड़ा देश-सेवक है वह!

लार्ड क्लेयर—वह बहुत बड़ा बदमाश और घृणाके योग्य है। सार्वजनिक रक्षाका प्रश्न इतना पेचीदा है कि उसके समान पाजीसे काम लेना और इनाम देना पड़ता है। इसे अपने ही प्राणोंके लाले पड़ रहे थे। ओ' गार्मन इसके प्राणका ग्राहक हो रहा था और इसे तलाश रहा था। यदि ओ' गार्मन इसका प्राण ले लेता तो मुझे सबसे ज्यादा प्रसन्नता होती। मैं तो इससे तङ्ग आगया हूँ।

ओ' गार्मनकी फ्रांसीसी पत्नी मुझे रातदिन तंग किया करती है। यह फ्रांसमें किसी प्रतिष्ठित पद पर है। फ्रांसकी सरकार इन दोनों को मानती है। वह प्रतिदिन आकर मुझे धमकी दे जाती है कि यदि उसके पति शीघ्र नहीं छोड़ दिये जायँगे तो वह इसका बदला बुरी तरह लेगी। मुझे रात दिन चैन नहीं है।

ओ' गार्मनके खिलाफ हमारे पास कोई सबूत नहीं है कि उसपर मुकदमा चलाया जासके। शैतान नीलन अदालतमे खड़ा होनेके लिये तैयार नहीं है। इतने पर भी यह मुझे रात दिन अपनी सेवाओंकी याद कराकर पुरस्कारके लिए परीशान किये रहता है। वह लार्ड बनना चाहता है और इस पद की प्रतिष्ठाके उपयुक्त वार्षिक वृत्ति भी चाहता है। लेकिन वह है इसी योग्य कि उसे छे आना रोज देकर उससे सड़कपर झाड़ू दिलाया जाय। यदि इसे और ओ' गार्ममको एक ही बोरेमें कस-कर लड़नेके लिये छोड़ दिया जाता तो दोनों अपना फैसलाकर लेते और मेरा पिण्ड छूट जाता।

इतना कहकर वह चुप हो गया। दो तलवारोंके अचानक टकरा जानेसे जिस तरह चिनगारी निकल पड़ती है इस तरह बोलते बोलते उसके दिमागमें कोई तरकीब सूझ गई जिसे सोचकर वह मनही मन प्रसन्न हो उठा। वह देरतक चुपचाप बैठा यही सोचता रहा। उसके चेहरेपर सुखी मुस्कुराहटकी रेखा दौड़ गई। थोड़ी देर बाद उसने धीरेसे कहा—इस काण्ड को जितना शीघ्र हो सके समाप्त किया जाना चाहिये।

एटोर्नी जेनरल—जूरियोंके निर्णयके बाद ही मैं जजसे फैसला देनेकी प्रार्थना करूँगा।

एम' नेली—लेकिन मैं फैसला स्थगित करनेकी प्रार्थना करूँगा।

प्लंकेट—आप एटोर्नी जेनरलके प्रार्थना कर लेनेके बाद ही अपना मुँह खोलेगें। इससे जजको सुभीता होगा।

एम' नेलीने इस बातको हँसकर स्वीकार कर ली।

एटोर्नी जेनरल सभा समाप्त कर देनेके लिए अधीर हो रहे थे। वे उठने लगे। इसी बीच एम' नेली फिर बोल उठे—मेरा ख्याल हैकि फैसला और फाँसीके बीच—यह जानकर कि फाँसी अनिवार्य है—मुलजिम उपयोगी बात बतानेके लिये तैयार हो जाय।"

लार्ड क्लेयरने मुँह बनाकर कहा—मुझे इसकी लेशमात्र भी आशा नहीं है। मैं उसे जानता हूँ। आपके समान देशभक्त दूसरोंकी देशभक्त की भी उसी तरह कल्पना करते हैं।

लार्ड क्लेयरने नितान्त घृणाके साथ ये शब्द कहे लेकिन एम' नेलीका चमड़ा इतना मुलायम नहीं था कि उसपर इसका असर हो। उन्होंने नर्मीसे विरोध करते हुए कहा :—मुझे जरिया मालूम है जो निश्चय ही कारगर होगा। एक युवती रमणी है जो……।"

लार्ड क्लेयरने उसी तरह उत्तर दिया :—यदि आपको अपने जरियापर विश्वास है तो आप उसका प्रयोग कर सकते हैं। उस संबंधमें मुझे कुछ जाननेकी जरूरत नहीं है।

एटोर्नी जेनरल धीरज खो बैठे। वे उठ खड़े हुए। उनके साथ ही उनके अन्य सहयोगी भी। सभी लोग बाहर निकल पड़े। केवल प्लंकेटने एम' नेलीसे हाथ मिलाया।

३०

अन्तमें न्यायका नाटक आरंभ हुआ।

जजने कैदीसे पूछा :—तुम अपनेको दोषी बतलाते हो या निर्दोष ?

राबर्ट एमेटने दृढ़तासे कहा :—निर्दोष !

इसके बाद सरकारी वकीलने अभियोग पढ़कर सुनाया। उन्होने कहा :—यह देशद्रोही राबर्ट एमेट हथियारबन्द सौ से अधिक बागियोंके साथ डबलिन नगरकी सड़कपर इस नियत से जमा हुआ था कि वह न्याय और कानूनसे स्थापित इस सरकारको उलट दे और देशमें बगावतका झण्डा खड़ा करे। इस तरह इसने राजा, कानून द्वारा स्थापित सरकार तथा राष्ट्र के विधानके प्रति बगावत की।

एमेट बीच बीचमे सरकारी वकीलको बाधा देते हुए निर्भीकताके साथ जो सवाल करता था उससे उपस्थित जनता में जोश और उत्साह भर जाता था। एमेटके लिए जीवनमरण का प्रश्न उपस्थित था तोभी उसका चेहरा लेशमात्र भी मलिन नही था। वह दृढ़, स्थित और शान्त था।

दर्शकोकी आँखें उसपर लगी थीं। कटघरेका छड़ दोनो हाथोसे पकड़कर वह शेरकी भाँति खड़ा जजोंकी ओर देख रहा था। प्रधान जज नारबरी दोनों सहयोगी जजोंके बीच बैठा एमेटकी तरफ इस तरह देख रहा था जैसे कोई जंगली जानवर अपने जख्मी शिकारकी तरफ देखता हो।

अदालतका कमरा दर्शकोंसे खचाखच भरा था। एमेटके एक-एक शब्दपर जनमत उल्लासभरे शब्दोंमें अपनी सहानुभूति प्रगट करता था।

अदालतका चपरासी जनताको शान्त रहनेके लिए बारबार चेतावनी देता था। लार्ड नारबरी क्रुद्ध जङ्गली जनावरकी तरह गुर्रा उठता था और प्लंकेट रोषभरी दृष्टिसे लोगोंकी ओर देखता था।

जब जूरी लोग आगये तब एटोर्नी जेनरल मोकदमा आरम्भ करनेके लिए उठे। वे जानते थे कि जूरीका निर्णय क्या होगा। इसलिए बड़े इतमीनानसे उन्होंने अपनी बहस आरम्भ की। सबसे पहले उन्होंने उस उदार विधान और सहृदय तथा कृपालु राजाकी प्रशंसा की जिसे उलटनेकी कोशिश एमेटने की थी। इसके बाद उन्होंने कहा—वर्तमान शासनमें हमलोग हर तरहसे सुखी हैं, स्वतन्त्र हैं और निरापद हैं। इस शासनको हमलोग हृदयसे चाहते हैं। वर्तमान स्थितिमें किसी तरहके विद्रोहका हमलोग समर्थन नहीं कर सकते। वर्तमान कानून और शासनसे जो लाभ हो रहा है उसे देखते हुए प्रजामें असन्तोषका कोई भी कारण नहीं हो सकता।

इसपर जनता 'शर्म, शर्म'की आवाज लगाने लगी। इससे प्रधान जज नारबरी बुरी तरह बिगड उठे और अदालतसे भीड़को निकलवा देनेकी धमकी देने लगे।

चिल्लाहट बन्द हो गई। जनताका रुख समझकर एटोर्नी जेनरलने शासन और विधानका गुण गाना बन्द कर दिया। उन्होंने एमेट पर लगाये गये अभियोगकी विस्तृत व्याख्या की और अन्तमें जूरीसे अपील की कि इस मामलेमें उन्हें दया या करुणासे काम न लेकर न्यायके आधारपर अपना निर्णय देना चाहिये।

इसके बाद गवाहोंके बयान होने लगे। गवाहोंके चेहरे पर शर्म और मुर्दनी छाई हुई थी। अपनी इच्छासे बयान देने

कोई भी नहीं आया था। अनेक तरहके प्रलोभन और धमकीसे सब जीते गये थे। अनेक गवाहोंने गोदाम और कारखानेका वर्णन किया और हमलेकी विस्तृत बात बताई।

जब पेट्रिक फैरेल कटघरेमें आया तो जनतामें उत्तेजना फैल गई क्योंकि लोग जानते थे कि विद्रोहियोंको इसपर भेदिया होनेका शक हो गया था और वे लोग इसे गोली मार देना चाहते थे लेकिन एमेटने इसके प्राण बचाये थे।

इसकी सूरत देखनेसे ही मालूम होता था कि गवाही देनेके लिए यह एकदम राजी नहीं था। जबर्दस्ती उसे अदालतमें घसीटा गया और जबर्दस्ती उसका गला दबाकर उत्तर दिलवाया जा रहा है। शर्मसे उसकी आँखें झुकी हुई थीं।

उसने कहा,—एक रातकी बात है मैं नशेमें चूर था। नशेकी हालतमें मैं पेट्रिक स्ट्रीटवाली गोदाममें पहुँच गया। वहाँ तेरह चौदह आदमी बैठे थे। मैं लड़खड़ाकर उनके ऊपर गिर पड़ा।"

उन्होने मुझसे पूछा,—क्या पहले भी कभी तुम यहाँ आये थे। मैंने कहा—कभी नहीं। उन्होंने पूछा—तुम यहाँ क्यो आये? मैंने कहा—मैं उधरसे जा रहा था। शोर सुनकर भीतर चला आया। इसपर एक आदमीने कहा कि मैं भेदिया हूँ और मुझे मार डालना चाहिये।"

इसके बाद वे लोग मुझे ऊपरके मंजिलपर ले गये। वे मुझे मार डालना चाहते थे। लेकिन देरतक बहस करनेके बाद उनलोगोंने मुझे किसी दूसरे व्यक्तिके सामने पेश करनेका निश्चय किया जो वहाँ आनेवाला था।

सरकारी वकील—इसके बाद क्या हुआ?

गवाह—कोई आध घण्टा बाद वह आया और उसने मुझे अभयदान दे दिया।

सरकारी वकीलने कटघरेकी तरफ इशारा करते हुए पूछा :—क्या यही आदमी तो नहीं था।

पैट्रिकने आँख उठाकर एमेटकी तरफ देखा। बोला :—जी हाँ, वे यही सज्जन हैं जिन्होंने मुझे मौतके मुँहसे खींचकर बाहर किया था।

दर्शकोंमें सहानुभूतिका स्रोत बह चला। प्रधान जजने आँखें तरेरकर सरकारी वकीलकी तरफ देखा। उन्होंने गवाहसे इस तरहके उत्तरकी आशा नहीं की थी। उन्होंने आगे सवाल करना उचित न समझ गवाहको विदा किया।

इसके बाद मेजर सरका बयान हुआ। उन्होंने गिरफ्तारीका वर्णन किया और अभियुक्तके घरपर जो कागज वगैरह उन्हें मिले थे उसे पढ़कर सुनाया।

मि० एम' नेली सरकारी पक्षका काम हलका करनेके लिए इन कागजोंको बिना पढ़े गए ही मिसिलमें शामिल करा देनेके पक्षमें थे। लेकिन प्रधान जज नारवरीने अभियुक्तके प्रति अन्याय होने देने का स्वाँग रचते हुए कहा :—"यह गैरकानूनी बात होगी। जब तक अभियुक्तपर दोष प्रमाणित नहीं हो जाता, न्यायकी दृष्टिसे वह सर्वथा निर्दोष है और उसकी हर तरहसे रक्षा करना अदालतका परम कर्तव्य है। इसलिए बिना पढ़े कोई भी कागज मिसिलमें शामिल नहीं किये जा सकते।

इतना कहकर उन्होंने अपनी तेज निगाह एमेटपर डाली। एमेटने व्यंगसे मुस्कुरा दिया। जज नारवरीका चेहरा पीला पड़ गया। उनकी बात मुँहके भीतर ही रह गई। वे झुँझलाकर बोले :—आप लोगों की जो इच्छा हो सो कीजिये।"

इसके बाद एटोर्नी जेनरलने उन्हीं अंशोंको पढ़कर सुनाया जिसे वे अपने सबूतके लिए आवश्यक समझते थे।

अन्तमे एटोर्नी जेनरलने कहा :—यही सरकार की तरफसे अभियुक्तपर अभियोग है।

इसके बाद प्रधान जजने सफाईके वकीलसे पूछा!

उन्होंने उत्तरमें कहा :—सफाई के वकीलकी हैसियतसे मैं यह कह देना चाहता हूँ कि न तो मुझे सफाईका गवाह पेश करना है और न बहसमें कुछ कहना है। मैं समझता हूँ कि मोकदमेकी पैरवी दोनों तरफसे समाप्त हो गई।

३८

मि० एम' नेलीने अपना स्थान ग्रहण किया। इसी समय प्लंकेट उठ खड़े हुए और हाथको हिलाकर एम' नेलीके कथन-का विरोध करते हुए बोले—

"मुझे खेदके साथ कहना पड़ता है कि इस मामलेमें मैं उस प्रणालीका अनुसरण करनेके लिए सर्वथा असमर्थ हूँ जिसका उल्लेख अभियुक्तके वलीकने किया है।"

इसपर मि० एम' नेली उठ खड़े हो गये। क्रोधसे उनका चेहरा लाल हो रहा था। बोले—मैं इसका घोर विरोध करता हूँ। आजतक इनके पक्षमें एक भी उदाहरण नहीं मिलते। यह मैं मानता हूँ कि सरकारी वकीलको उत्तर देनेका हक है। लेकिन तभी जब अभियुक्तकी ओरसे कुछ कहा जाय। लेकिन जब अभियुक्तकी ओरसे कुछ कहा ही नहीं गया तो सरकारकी ओरसे उत्तर किस बातका दिया जायगा। राज-

द्रोहके मोकदमोंकी कारवाई विधान द्वारा संचालित होती है। मेरी दृष्टिमें एक भी उदाहरण ऐसा नहीं आया है जहाँ इस तरहकी असाधारण करवाईकी अनुमति दी गई हो। इससे तो नागरिकोंकी स्वतन्त्रताका अपमान होगा।

अदालतके कमरेमें हल्ला मच गया। लोगोंने चिल्लाकर एम' नेलीका समर्थन किया। लेकिन इससे प्लंकेट निराश होने वाले व्यक्ति नहीं थे। अदालतकी पक्षपात हीनताकी दोहाई देते हुए उन्होंने कहा—माई लार्ड! विद्वान वकीलने जो कुछ एतराज पेश किया है उससे अथवा जनताके इस कोलाहलसे डरकर मैं अपने इस कर्तव्यसे विमुख नहीं हो सकता जिसका भार हमारे ऊपर एक नागरिककी हैसियतसे इस देशके शासन विधान तथा कानून द्वारा स्थापित सरकारके प्रति है। इस देशद्रोहका अभिप्राय दोनोंपर हमला करना था। मैं इसका पर्दा फाश करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। आपकी आज्ञासे मैं उस कर्त्तव्यका पालन करना चाहता हूँ। यद्यपि उसके पालनमें मुझे आजन्म कारावासकी यन्त्रणा या मृत्यु-दण्ड ही क्यों न भोगना पड़े।

राजभक्तिसे ओतप्रोत इस अपीलका लार्ड नारवरीपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। उन्होंने स्वीकृति दे दी। प्लंकेटने अपनी बहस आरंभ की। उन्होंने धीमे स्वरसे आरम्भ किया, लेकिन ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते गये उनका स्वर ऊँचा होता गया। जोश और उत्साहमें उनकी वाग्धारा प्रबल हो उठी। अपने कर्तव्यकी बारबार दोहाई देते हुए उन्होंने कहा—"सज्जनो! यह मुकदमा बहुत ही महत्वपूर्ण है। मैं जानता हूँ कि इस मोकदमेसे एक नागरिककी जिन्दगीका सम्बन्ध है। लेकिन इस व्यक्तिके खिलाफ जो सबूत पेश किये गये हैं उसे देखते

हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान शासन विधान तथा सरकारके खिलाफ जो षडयन्त्र रचा गया था उसकी सारी जिम्मेदारी इसी अभियुक्त पर है। यही इस षड्यन्त्रका प्राण, कर्ताधर्ता और विधायक रहा है। इसलिए अदालतमें इस अभियुक्तके आचरणकी निन्दाकर, इसके अपराधोंको स्पष्टकर मैं उस अपराधीकी सारी गैर-कानूनी हरकतोंको व्यक्तकर रहा हूँ जो इसका केन्द्र रहा है।"

दो घंटेतक इसी तरहका धारा प्रावाहिक भाषण वे देते रहे। कभी वे गवाहोंके बयानोंकी चर्चा करते, कभी कागजी सबूतोंका उल्लेख करते लेकिन सबसे अधिक जोर वे वर्तमान शासन प्रणालीकी खूबियोंपर देते रहे और इसके उलटनेकी चेष्टाके अपराधमें अभियुक्तकी घोर निन्दा करते रहे।

उनकी बहसका अन्तिम अंश बेशर्मीसे भरा हुआ था। ब्रिटेनके साथ आयर्लैण्डके गठबन्धनकी प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा—"ईश्वर और प्रकृति दोनोंने दोनों देशोंको एक दूसरेके लिए अनिवार्य रूपसे आवश्यक बनाया है। दोनोंको अन्त तक एक बने रहने दीजिये। दोनोंका संयुक्तप्रयत्न संसार की सभी शक्तियोंका मुकाबला करनेमें समर्थ होगा। जब कि देशमें शान्ति विराज रही है, विधानके सुखका उपयोग कर रही है, यूनियनके अन्दर सुख और समृद्धिको प्राप्त हो रही है, ऐसे समय कुछ अदूरदर्शी उच्छृङ्खल और उतावलेबाज व्यक्ति कानून द्वारा स्थापित सरकारके खिलाफ षड्यन्त्र करते हैं और हिंसा द्वारा उसे उखाड़ फेकनेकी कोशिश करते हैं और इस तरह समस्त देशमें अशान्ति और मारकाट फैलाना चाहते हैं।"

"ईश्वरकी दयाकी क्या सीमा है इसे बतलाना मेरा काम

नहीं है। मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि यदि उस युवकमें समझका लवलेश भी है, यदि उसपर उच्च शिक्षाका लेशमात्र भी असर है तो यह अपने इस पापाचरणके लिए पश्चात्ताप करेगा और अपने जीवनका शेष दिन देशके युवकोंको ठीक रास्ते पर लानेमें लगावेगा, उन्हें किसी भी तरह पथभ्रष्ट नहीं होने देगा।"

"ये लोग खूनके प्यासे मतवाले हैं; समझदारीसे काम लेना जानते नहीं। शान्ति और सुव्यवस्थाका ये लोगोंको सुख नहीं भोगने देना चाहते, देशके पवित्रतम रक्तसे अपना हाथ रँगना चाहते हैं तोभी ये अपने हरकतको न्याय सङ्गत बतलाकर ईश्वरसे सफलताकी कामना करते हैं। लेकिन इनकी हरकतें खूँखार, नीच और घृणाके योग्य हैं। इसलिए मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वे उसके कोपके भाजन बनें।"

इतना कहकर प्लंकेट हाँफता हुआ अपनी जगह पर बैठ गया। अदालतमें सन्नाटा छाया हुआ था। इसे भङ्ग करते हुए कोई चिल्ला उठा—"शैतानके पिताकी आत्मा इसमें प्रविष्ट होकर बोल रही है।" इसे सुनते ही जनता खिलखिलाकर हँस पड़ी। जजों तथा सरकारी वकीलोंको भी इसपर हँसी आगई। बड़ी कठिनाईसे उनलोगोंने अपनी हँसी रोकी।

लार्ड नारबरी प्लंकेटसे सदा जलते रहते थे। उनकी इस प्रकार निन्दा होते देख वे प्रसन्न हो उठे। इसे उन्होंने छिपाया भी नहीं।

जहाँ तलवारकी चोटका असर नहीं होता वहाँ कभी कभी सूईकी नोक बहुत ज्यादा दर्द पैदा कर देती है। इस व्यङ्गकी तीखी नोक प्लंकेटके हृदयमें इस तरह चुभ गई कि वह सजग हो उठा। उसने देखा कि उसकी सारी मर्यादा बालूकी भीतकी

तरह ढह गई। उसका चेहरा फक हो गया। वह अपनी कुर्सी पर बेचैन होकर अँगडाई लेने लगा। किसी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणासे उसने उस देशद्रोहीकी ओर आँख उठाकर देखा जिसकी निन्दामें उसने अपनी सारी शक्ति लगा दी थी।

दोनोंकी आँखें चार हुईं। कटघरेका कैदी जो मृत्युके द्वार की ओर बढ़ रहा था और वह वकील जो आजकी बहसके पुरस्कारमे कोई बड़ा पद और प्रतिष्ठा पाने जा रहा था—दोनोंने अपनी अपनी आत्माको टटोला। एमेटकी तीक्ष्ण दृष्टिके सामने प्लंकेटकी आँखें ठहर नहीं सकीं। प्लंकेटका अपमान पूरा हो गया।

अदालतका शोरगुल पूरी तरह समाप्त भी नहीं होने पाया था कि प्रधान जज नारवरीकी उग्र वाणी सुनाई पड़ी। अभियुक्त के खिलाफ जो सबूत पेश किये गये थे उनकी वे व्याख्या कर रहे थे। जूरियोंसे बातें तो पहले ही हो चुकी थीं। इस-लिए जूरियोंने अपने मनमें कहा—'व्यर्थके इन दिखावोंसे क्या लाभ। हम लोगोंको जो निर्णय देना है उसे हमलोग जानते हैं। लार्ड नारवरी भी इस बातको भलीभाँति जानते थे। इसलिये उन्होंने भी विस्तारमे जाना पसन्द नहीं किया। जहाँतक हो सका संक्षेपमे अपना वक्तव्य समाप्त किया।

जूरियोंने वहीं बैठे बैठे सलाह मशविरा किया। अपना निर्णय अपने मुखियाके हवाले किया। उसने जजकी तरफ बढ़ा दिया। जजके क्लर्कने उसे पढ़कर सुना दिया। जूरियोंने एकमत से एमेटको अपराधी साबित किया।

सभी जानते थे कि जूरियोंका यही निर्णय होगा। किसीको लेशमात्र भी इसमें सन्देह नहीं था, तोभी "अपराधी" शब्द सुनते ही एकबार लोग सन्नाटेमें आ गये। लोग जानते

थे कि इस "अपराधी" शब्दका क्या प्रभाव कैदीके जीवन पर पड़ेगा।

सुबहसे शाम तक मुकदमा चलता रहा। लोग थकसे गये थे। लोगोंको आशा थी कि जूरियोंके निर्णयके बाद अदालत उस दिनके लिये उठ गई। लेकिन इसी समय अटोर्नी जेनरल उठ खड़े हुए और बोले—माई लार्ड! मेरी प्रार्थना है कि फैसला भी आज ही दे दिया जाय।

मि० एम' नेलीने इसका विरोध करते हुए कहा—फैसला आज दे देनेके लिए अटोर्नी जेनरलका यह आग्रह उचित नहीं है। मेरा आग्रह है कि फैसला कल दिया जाय।

लार्ड नारबरीने एम' नेलीका विरोध नहीं माना। अटोर्नी जेनरलकी प्रार्थना उन्होंने कबूल कर ली।

३९

अदालतके क्लर्कने अपना चश्मा सीधा करते हुए एमेटसे पूछा—"आपको अपनी सफाईमें क्या कहना है?"

अचानक अपनी पुकार सुनकर एमेटका दिल धड़कने लगा। जिस घड़ीकी वह उत्सुकता और धैर्यसे प्रतीक्षा कर रहा था, वह अन्तमें आपहुँची। सुबहसे शामतक अदालतमें उसपर अनेक तरहके आक्षेप होते रहे लेकिन विवशकी भाँति वह सब कुछ चुपचाप सुनता रहा। वह चुपचाप उस अवसर की प्रतीक्षा करता रहा जब वह फाँसीके तख्तेपर चढनेके पहले अपने नाम और उद्देश्यके ऊपर उछाले गये कीचड़को धो देगा।

लेकिन एमेट साहस खो रहा था। दिन भरकी कड़ी परीक्षाने उसके धैर्यको तोड़ दिया था। उसका मस्तिष्क शून्य हो रहा था। उसे चक्कर आ गया। उसने कटघरेके छड़ोंको कसकर थाम लिया अन्यथा वह गिर गया होता। इस दशामे भी उसे यह बात याद थी कि जिस अवसरकी वह उतनी उत्सुकतासे प्रतीक्षा कर रहा था, वह हाथसे निकला जा रहा है।

लार्ड नारबरीने कैदीकी यह दशा देखी। उनके चेहरे पर क्रूर मुस्कुराहटकी रेखा दौड़ गई। उन्होंने अपने दोनों सहयोगी जजोंकी तरफ देखा। लार्ड नारबरी फैसला सुनानेके लिये मुँह खोलने ही वाले थे कि एमेटने अपनी सारी शक्ति बटोर कर बोलनेका यत्न किया। पहले तो उसकी वाणी एकदम अस्पष्ट थी। लेकिन धीरे धीरे वह स्पष्ट होने लगी और अदालतके कमरेमे गूँज उठी। लोग शान्त होकर उसके प्रत्येक शब्दको सुननेका यत्न करने लगे। उसने कहा —"कानूनके अनुसार मुझे जो दण्ड मिलनेवाला है, वह क्यो नहीं मिलना चाहिये, इस सम्बन्धमें मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन कानूनके अनुसार सजा की जो धारणा जनताके दिमागमें है वह क्यों उलट नहीं जानी चाहिये इस संबधमें मुझे बहुत कुछ कहना है। ब्रिटिश सरकारके खिलाफ विद्रोह करनेका अभियोग मुझपर लगाया गया है। मैं उसे स्वीकार करता हूँ। इसके लिये कानूनके अनुसार जो दण्ड मिलेगा उसका हमें भोग करना होगा लेकिन मेरा जो उद्देश्य था उसका जवाब मुझे ईश्वरके दरबारमें देना होगा। मैं दोनोके लिये तैयार हूँ। यदि मुझे शारीरिक दण्डके अलावा दूसरा दण्ड नहीं भोगना होता तो मैं आपका ध्यान आकृष्ट करनेका यत्न कभी न करता। मैं चुपचाप फाँसीके तख्तेपर

थे कि इस "अपराधी" शब्दका क्या प्रभाव कैदीके जीवन पर पड़ेगा।

सुबहसे शाम तक मुकदमा चलता रहा। लोग थकसे गये थे। लोगोंको आशा थी कि जूरियोंके निर्णयके बाद अदालत उस दिनके लिये उठ गई। लेकिन इसी समय अटोर्नी जेनरल उठ खड़े हुए और बोले—माई लार्ड! मेरी प्रार्थना है कि फैसला भी आज ही दे दिया जाय।

मि० एम' नेलीने इसका विरोध करते हुए कहा—फैसला आज दे देनेके लिए अटोर्नी जेनरलका यह आग्रह उचित नहीं है। मेरा आग्रह है कि फैसला कल दिया जाय।

लार्ड नारबरीने एम' नेलीका विरोध नहीं माना। अटोर्नी जेनरलकी प्रार्थना उन्होंने कबूल कर ली।

३९

अदालतके क्लर्कने अपना चश्मा सीधा करते हुए एमेटसे पूछा—"आपको अपनी सफाईमें क्या कहना है?"

अचानक अपनी पुकार सुनकर एमेटका दिल धड़कने लगा। जिस घड़ीकी वह उत्सुकता और धैर्यसे प्रतीक्षा कर रहा था, वह अन्तमें आपहुँची। सुबहसे शामतक अदालतमें उसपर अनेक तरहके आक्षेप होते रहे लेकिन विवशाकी भाँति वह सब कुछ चुपचाप सुनता रहा। वह चुपचाप उस अवसर की प्रतीक्षा करता रहा जब वह फाँसीके तख्तेपर चढनेके पहले अपने नाम और उद्देश्यके ऊपर उछाले गये कीचड़को धो देगा।

लेकिन एमेट साहस खो रहा था। दिन भरकी कड़ी परीक्षाने उसके धैर्यको तोड़ दिया था। उसका मस्तिष्क शून्य हो रहा था। उसे चक्कर आ गया। उसने कटघरेके छड़ोंको कसकर थाम लिया अन्यथा वह गिर गया होता। इस दशामे भी उसे यह बात याद थी कि जिस अवसरकी वह उतनी उत्सुकतासे प्रतीक्षा कर रहा था, वह हाथसे निकला जा रहा है।

लार्ड नारवरीने कैदीकी यह दशा देखी। उनके चेहरे पर क्रूर मुस्कुराहटकी रेखा दौड़ गई। उन्होंने अपने दोनों सहयोगी जजोंकी तरफ देखा। लार्ड नारवरी फैसला सुनानेके लिये मुँह खोलने ही वाले थे कि एमेटने अपनी सारी शक्ति बटोर कर बोलनेका यत्न किया। पहले तो उसकी वाणी एकदम अस्पष्ट थी। लेकिन धीरे धीरे वह स्पष्ट होने लगी और अदालतके कमरेमें गूँज उठी। लोग शान्त होकर उसके प्रत्येक शब्दको सुननेका यत्न करने लगे। उसने कहा—"कानूनके अनुसार मुझे जो दण्ड मिलनेवाला है, वह क्यों नहीं मिलना चाहिये, इस सम्बन्धमें मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन कानूनके अनुसार सजा की जो धारणा जनताके दिमागमें है वह क्यों उलट नहीं जानी चाहिये इस संबंधमें मुझे बहुत कुछ कहना है। ब्रिटिश सरकारके खिलाफ विद्रोह करनेका अभियोग मुझपर लगाया गया है। मैं उसे स्वीकार करता हूँ। इसके लिये कानूनके अनुसार जो दण्ड मिलेगा उसका हमें भोग करना होगा लेकिन मेरा जो उद्देश्य था उसका जवाब मुझे ईश्वरके दरबारमें देना होगा। मैं दोनोंके लिये तैयार हूँ। यदि मुझे शारीरिक दण्डके अलावा दूसरा दण्ड नहीं भोगना होता तो मैं आपका ध्यान आकृष्ट करनेका यत्न कभी न करता। मैं चुपचाप फाँसीके तख्तेपर

खड़ा हो जाता और चुपचाप फाँसीकी रस्सी अपने गलेमें डाल लेता।"

"लेकिन जो विधान मेरे शरीरको जल्लादोंके हाथ सौंपता है, वह मेरे चरित्रपर भी लाञ्छन लगाता है। मैंने जिस काममें हाथ डाला था उसमें जानमाल और यश दोनों खतरेमें था। और जब भाग्यने मेरा साथ छोड़ दिया और मुझे कानूनके पञ्जेमें फँसा दिया तो मेरे चरित्रपर लाञ्छन लगाना भी अनिवार्य हो गया। लेकिन मुझे खेद केवल इसी बातका है कि इस अदालतमें मेरे चरित्र और उद्देश्यकी निन्दा ऐसे व्यक्तिने की है जिसने स्वयं उस देशभक्तिका प्रचार किया है जिसका अनुसरण मैंने किया है।"

क्षणभरके लिये सबकी आँखे प्लंकेटकी तरफ मुड़ गईं। प्लंकेटने करुणाके साथ नारवरीकी ओर देखा। नारवरीके चेहरे पर व्यंगभरा मुस्कान देखकर प्लंकेट बेचैन हो उठे और नीचा सिर करके कागज पत्र उलटने लगे।

क्षणभर सुस्ताकर एमेटने फिर कहना शुरू किया :—"लाख चेष्टा करने पर भी मैं इस तीव्र निन्दाका उद्देश्य नहीं समझ सका, सिवा इसके कि मुझे हर तरहसे जनताकी दृष्टिमें गिराकर जल्लादोंके हवाले मेरा शरीर कानूनका आवरण देकर कर दिया जाय। मेरा शरीर हर तरहसे आपके हाथमें है। आप जो चाहें उसका कर सकते हैं लेकिन मैं अपने चरित्रकी सफाई दे देना चाहता हूँ।"

इसके बाद एमेटने स्पष्ट तथा तीव्र शब्दोंमें प्लंकेटके इस आरोपका खण्डन किया कि वह अपने देशकी स्वतन्त्रता फ्रांसके हाथ बेंचनेका यत्न कर रहा था। अन्तमें उसने कहा—

"मेरा उद्देश्य अपने देशकी आजादीको फ्रांसके हाथ बेचना नहीं था बल्कि मैं अपने देशको ब्रिटेनके जुलमसे बचाना चाहता था।"

लार्ड नारवरी अबतक चुपचाप एमेटकी बातें सुन रहे थे। उसका अन्तिम वाक्य सुनकर वे उत्तेजित हो उठे। बोले,— "यह अदालत है। मैं आपको यहाँ विद्रोहका उपदेश नहीं देने दूँगा। आपको उचित था कि आप अपनी हरकतोंके लिये पश्चात्ताप प्रगट करते और अपने देशपर आप जो विपत्ति लानेका यत्न कर रहे थे उस कलंकको मिटानेका यत्न करते। आपका जन्म कुलीन वंशमें है; आपके पिता इस देशके संभ्रान्त नागरिक थे। आपके बड़े भाई इस अदालतके प्रसिद्ध वकील थे। आपने अपने आचरणसे उनलोगोंको कलंकित किया है।"

एमेटने कड़क कर कहा—"माई लार्ड! मुझपर आप यह अभियोग लगाकर उनका अपमान कर रहे हैं जो इस संसारमें नहीं हैं। यदि उन मृत पुरुषोंकी आत्मायें अपनी सन्ततिकी दुनियावी कारवाईको देख सकती हैं तो मेरी ईश्वरसे यही प्रार्थना है कि मेरे पूज्य स्वर्गीय पिता अपने प्यारे पुत्रके आचरणका पर्यवक्षण करें, उसके हृदयके आन्तरिक भावको पढ़ें और देखें कि क्या उनके इस अभागे पुत्रने क्षणभरके लिये भी स्वदेशके उस प्रेम और श्रद्धाको अपने दिलसे हटाया है जिसकी नींव उन्होंने बचपनमें ही उसके हृदयमें डाली थी और जिस देश भक्तिके लिये उसे आज मृत्युदण्डका पुरस्कार मिलनेवाला है।"

लार्ड नारवरीका धैर्य जाता रहा। उन्होंने चिल्लाकर कहा— "आपने अभी जो कुछ कहा है उससे तो जूरियोंका निर्णय पूरी तरह सिद्ध हो जाता है। यदि आपको कानूनके अन्दर कुछ

कहना है तो आपको बोलने दिया जायगा, यदि नही तो आप चुप हो जायँ और अदालतके फैसलेको सुने।

लेकिन एमेटने इस निर्भीकतासे लार्ड नारवरीका मोकवला किया कि वे सहम गये और एमेटको बोलने दिया। उसने कहा—"मैं आरम्भमें ही कह चुका हूँ कि कानूनके अनुसार मुझे क्या सजा मिलनी चाहिये, इस सम्बन्धमें मुझे कुछ नही कहना है। लेकिन इतना ही बस नही है। मैं उन लोगोंके सामने भी जिम्मेदार हूँ जो मुझे घेरकर खड़े हैं। अदालतका फैसला सुनानेमें जज केवल कानूनके अनुसार दण्डका विधान करके चुप नहीं रह जाता, बल्कि यह अपराधीको उपदेश देता है और जिस उद्देश्यसे कैदीने कानून भंग करनेकी चेष्टा की है उसकी निन्दा करता है और अपनी इच्छानुसार उसकी व्याख्या करता है। इसलिये मैं उस गलत और भ्रान्त व्याख्यासे अपने चरित्रकी रक्षा करना चाहता हूँ।"

"माई लार्ड! इस अदालतमें आप न्यायाधीशके रूपमें बैठे हैं और मैं अपराधी की हैसियतसे यहाँ कटघरेमें खड़ा हूँ। लेकिन हम और आप दोनों ही मनुष्य हैं। लेकिन जब आप या दूसरा कोई किसी ऐसे मनुष्यके चरित्र पर आक्षेप करते हैं, जिसका अन्त निकट है तो उस मनुष्यका यह कर्तव्य हो जाता है कि अन्तिम साँस लेनेके पहले वह अपनी सफाई दे और उन लाञ्छनोंका खण्डन करे। मुझपर जिनलोगोंने दोषारोपण किये हैं उन्हें असन्तुष्ट किये बिना सच्ची बातें नही कही जा सकती। लेकिन यदि मुझे अपने चरित्रकी सफाई देनेका अवसर नहीं दिया जाता तो किसीको उसपर कीचड़ उछालनेका भी अवसर नहीं दिया जाना चाहिये था।"

अदालतमें उपस्थित जनताने हर्षध्वनि की। अधिकारियों-

का चेहरा फीका पड़ गया। लार्ड नारबरीके मुँहपर स्याही दौड़ गई। उन्होंने एमेटसे कहा,—"आप पढ़े लिखे हैं, समझदार हैं। आपको यह समझना चाहिये कि जजकी हैसियतसे मेरा कर्तव्य क्या है। यह कैसे सम्भव है कि मैं चुपचाप अदालतकी कुर्सीपर बैठा रहूँ और आपको स्वतन्त्रता पूर्वक देश-द्रोहका उपदेश देने दूँ। यह तो न्यायका गला घोटना होगा और विधानकी अवहेलना होगी।"

एमेटने घृणासे भरे हुए शब्दोंमें कहा—"तब तो इसके माने यही हुआ कि जो लोग मुझपर कीचड़ उछालना चाहते हैं उन्हें पूरी आजादी है और मैं अपनी सफाई देनेके लिये स्वतन्त्र नहीं हूँ। और मुझे अपना वक्तव्य देनेके लिये बुलाना न्यायका स्वाँग मात्र है। आप मेरा अन्त कर देनेके लिये अधीर हो रहे हैं। मैं भी तैयार हूँ। जिस रक्तके लिये आपको प्यास लगी है, वह भयके आतंकसे न तो ठंढा हो गया है और न जम ही गया है। आपकी भले ही वह दशा हुई हो। मैं जानता हूँ कि मैंने जो काम किया है वह किसी भी व्यक्तिकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेवाला और देशके मुखको उज्वल करनेवाला है। इसी धारणासे मेरा रक्त गर्म है। देश सेवाके उमङ्गमें मैंने उस देवताकी उपासना तक छोड़ दी जिसने मेरे हृदयमें अपना मन्दिर बना लिया है।

क्षणभरके लिये उसकी आवाज काँप उठी। उसके बाद उसने उच्च स्वरसे कहा—"मेरा काम समाप्त हो गया। अब मुझे पुरस्कार मिलनेवाला है। मेरी दौड़ समाप्त हो गई। अन्त मुँह बाये मुझे निमन्त्रण दे रहा है। मुझे अपनी सफाई देनेका अवसर नहीं दिया गया। मैं अपने चरित्रकी सफाईका भार अपने देशवासियोंपर छोड़ जाता हूँ जिनकी

सेवामें मैंने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है। मुझे केवल एक ही प्रार्थना करनी है। मेरे, मजारपर कोई वाक्य न लिखे जायँ। मेरे उत्सर्गका विवरण कोई न लिखे क्योंकि कोई सही सही नही लिख सकता। जब मुझे सफाई देनेका अवसर नहीं दिया गया तो मेरे चरित्रपर कीचड न उछाला जाय। मेरी याद तबतकके लिये लोग भूल जायँ और मेरी कब्र पर तबतक कोई वाक्य न लिखा जाय जबतक इस देशमें ऐसे लोग फिर पैदा न हों जो मेरे उद्देश्योंकी क़दर करें और सच्ची बातें कहनेकी लोगोंको स्वतन्त्रता हो। जब मेरा देश स्वतन्त्र राष्ट्रों की श्रेणीमें बैठनेकी योग्यता प्राप्त कर ले तभी मेरी कब्र पर आदर्श वाक्य लिखे जायँ।"

जनता व्यग्र हो उठी। जयघोषके नारे गूँज उठे। लोग कटघरेकी तरफ बढ़कर एमेटकी पदधूलि लेनेके लिये इस तरह व्यग्र हो उठे मानों उनका उद्धारक सदाके लिये उनसे छीना जा रहा है। लेकिन सशस्त्र सैनिकोंने कटघरेको चारों ओरसे घेर लिया और बन्दूकके कुन्दोंके प्रहारसे जनताको पीछे हटाने लगे।

इसी बीचमें लार्ड नारबरी अपना फैसला सुनानेके लिये उठे। उन्होंने कहा—'जबतक कैदी मर न जाय तबतक उसे फाँसीपर लटकाया जाय।' यह वाक्य सुनते ही जनमत क्षुब्ध हो गया। सभी हताश होकर चुप होगये।

४०

अदालतकी दिन भरकी कठोर यन्त्रणासे एमेट एकदम थक गया था। जेलके सेलमें बिस्तरे पर पड़ते ही उसे नींद

ना गई। इस पृथिवीपर यही उसकी अन्तिम रात थी। तोभी
ाह गहरी नींद सोता रहा। सवेरे उसकी नींद टूटी। सारी
थकान मिट गई थी। सूर्यकी सुनहली किरणें खिड़कीसे छन-
छन कर कमरेमे प्रवेश कर रही थीं।

वह चुपचाप बैठा अपने विषयमें सोचने लगा। उसी दिन
उसे मरना है, इसका ख्याल आते ही वह बेचैन हो उठा। यह
भरी जवानी, उज्वल भविष्य, सबका एक साथ ही अन्त हो
जायगा। क्षण भरके लिये वह सिहर उठा। उसका साहस
जाता रहा। एमेट मृत्युसे नहीं डरता था। मृत्युकी विभीषिका
उसे कातर नहीं बना सकती थी। उसे परिताप हो रहा था इस
तरह अनायास मर जानेके लिये।

लेकिन यह अवस्था देरतक नहीं रही। उसका साहस
जाग उठा और उसकी सारी विभीषिका दूर हो गई। उसने
अपने मनमें कहा—"एकदिन मरना सबको है। मृत्यु चाहे
आज ही आवे या सौ साल बाद। जो अनिवार्य है उससे भय
क्या? वह उस संसारकी बातें सोचने लगा जिसे छोड़कर
उसे तुरत ही जाना था।

इसी समय उसकी निगाह उस अधूरे खतपर पड़ी जिसे
उसने इससे पहले दिन रिचार्ड करेनके पास लिखना आरंभ
किया था। उसे उठाकर उसने एक बार पढ़ा। उसे फाड़-
कर फेंक दिया और नये सिरेसे लिखने बैठ गया। उसने
लिखाः—

"मेरे प्यारे रिचार्ड! मैं अभी चन्द घंटोंका मेहमान हूँ।
लेकिन यदि यह मेरे जीवनका अन्तिम क्षण होता और मेरी
वाक् शक्ति मुझसे सदाके लिये विदा होती रहती तोभी मैं
उस आन्तिम क्षणका उपयोग अपने हृदयके आन्तरिक तहसे

तुम्हें धन्यवाद देनेमें लगाता। तुम्हारी कृपा और उदारता के लिये मैं अतिशय कृतज्ञ हूँ। जिसे मृत्युका ठंढा हाथ आलिंगन करने आरहा है, उसकी आत्माको अन्य किसी तरह से दवाना उचित नहीं होगा। मैं जनता हूं कि इस दुनियामें कमसे कम तुम एक हो जिसे मेरी मृत्युके लिये वास्तविक खेद और परिताप होगा।"

"मैंने तुम्हारी प्यारी बहनकी शान्ति और सुखको नष्ट कर दिया है। प्यारे रिचार्ड! इसके लिये मेरे पास कोई सफाई नहीं है। मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि मेरी नीयत सर्वथा इसके विपरीत थी। मैं सराहको सबसे ज्यादा सुखी बनाना चाहता था। मैं उसकी हृदयसे पूजा करता था।"

"हमलोग एक दूसरेके हो जानेकी सुखद कल्पना करते थे। अपने जीवनको और भी सुखमय बनानेके लिये मैंने इस काममें हाथ डाला था। लेकिन विधिका विधान उलटाही निकला। मैं असफल हुआ और मुझे अपनी प्रियतमासे सदाके लिये अलग होना पड़ा।"

"सराहके निकट मैं अपराधी हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि सराहका हृदय विशाल है। वह मुझे क्षमा कर देगी। अन्तिम वन्दे।"

पत्रको लिफाफेमें वन्द करके वह सोचने लगा कि अव जिस समय यह खत खोला जायगा, इसका लिखनेवाला इस संसारमें नहीं रहेगा। दूसरोंके लिये कलका दिनभी आजका ही सा होगा लेकिन उसके लिये दूसरा दिन कोई अर्थ नहीं रखता।

इसके बाद उसने जलपान किया। वह जलपान समाप्त ही कर रहा था कि सेलका ताला खटका। उसकी आँखें उधर ही

लग गई। उसने देखा कि एम' नेली सेलमें प्रवेश कर रहा है और उसके पीछे बुर्का ओढ़ कोई रमणी है।

एमेटको पहचाननेमें देर न लगी कि यह रमणी कौन है। वह खुशी के मारे उछल पड़ा। दूसरे ही क्षण सराह करेन उसकी छातीसे चिपटकर सिसकियाँ भर रही थी। क्षणभरके लिये वे दोनों अतीत और भविष्य दोनोंको भूल गये, केवल वर्तमानकी गोदमें खेलने लगे।

एम' नैली मनही मन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने खाँसकर अपना पैर पटका। एमेटको उसकी उपस्थितिका भान हो गया। उसने कृतज्ञता सूचक शब्दोंमें कहाः—आपने मुझपर अनेकों बार कृपा की है, लेकिन इसकी तुलना किसीसे नहीं की जा सकती। मैं आपका अतिशय कृतज्ञ हूँ। अब मैं शान्ति पूर्वक मर सकूँगा।

एम'नेली—"मौतकी चर्चा मत करो।" इतना कहकर उसने कुमारी करेनकी ओर आशयभरी निगाह डाली। सराह काँप उठी। उसका चेहरा पीला पड़ गया। तोभी उसकी मूक प्रार्थना की स्वीकृति उसने सिर हिलाकर दे दी। नेलीने समझा कि उसने चिड़ियाको मजबूत जालमे फँसाया है। इससे यह निकल नहीं सकता। एमेटसे उसने कहाः—तुम लोगोंकी सेवा करनेके लिये मैं कोई बात उठा नहीं सकता। सराहको तुमसे कुछ कहना है। मेरे सामने शायद वे नही कह सकें इससे उनको तुम्हारे साथ छोड़कर मैं अलग हो जाता हूँ।"

उसके बाहर होते ही सेलका द्वार पुनः बन्द हो गया। तालेकी खड़खड़ाहट एमेटके कानमें पड़ी।

उसके चले जानेके बाद सराहने कहा—मुझे तुमसे कुछ

कहने को कहा गया है। उसे मैं कह डालना चाहती हूँ। यदि तुम चाहो तो तुम्हें आज नहीं मरना होगा।"

एमेटने उसका अभिप्राय नहीं समझा। उसके हृदयमें किसी तरहकी आशाका सञ्चार नहीं हुआ। केवल सराहकी कातर दृष्टि उसे कुछ कुछ प्रगट कर रही थी।

लेकिन सराहने अपनेको तुरत सम्हाला। कितना क्रूर इस आशाका सञ्चार होगा। वह रो पड़ी और बोली :—हरगिज नही, हरगिज नही, कोई चारा नही है, कोई आशा नही है। तुम्हें आज मरना ही होगा। वे तुम्हारा अपमान करना चाहते हैं। मैंने जो कहा था उसके लिए क्षमा करना। मैंने कहनेका वचन दिया था। इसी शर्त पर तुमसे मिलना सम्भव हो सका। यदि मैं न भी कहती तो वह कहता ही, वे तुम्हें धन, प्रतिष्ठा और जीवन देंगे। शैतानके बच्चे! प्रतिष्ठा और इज्जतकी बात करते हैं। वे कहते है कि तुम अपना प्राण बचानेके लिए अपने उन साथियोंका नाम वतला दो जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया था, तुम्हारा विश्वास किया था।"

इस अपमानसे एमेटको मार्मिक वेदना हुई। उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसने पूछा—यह सम्वाद तुम्हें किसने दिया था?

सराहने आतुरतासे कहा :—मैं तुम्हारे लिये कोई सम्वाद नहीं लाई हूँ। मैं तुम्हें कोई आशा नहीं देती। इस तरहके प्रस्तावसे मैं अपनेको तुच्छ नहीं बनाना चाहती। मैंने तुम्हें हृदयसे प्यार किया है। प्रेमके वशीभूत होकर मैंने तुम्हें इस पथसे विमुख करनेका प्रयत्न किया था। असफल होनेपर भी मेरे प्रेममें लेशमात्र शिथिलता नहीं आने पाई। वल्कि मेरा प्रेम और भी प्रवल हो उठा और आज भी यदि आवश्यकता होगी

यद्यपि उसकी आवश्यकता नही है—तो मैं तुम्हारे सामने घुटने टेककर बैठ जाती और तुमसे गिड़ गिड़ाकर अपने प्रेमके नामपर यही भीख माँगती कि मेरे मारफत जो नीच प्रस्ताव उन्होंने भेजा है उसे ठुकरा कर तुम प्रसन्नता पूर्वक मृत्युका आलिंगन करो।

एमेटका चेहरा खिल उठा। बोला—मैंने तुमसे सदा यही आशा की थी। क्षणभरके लिये भी मैंने तुमसे इससे अन्यथाकी आशा नही की थी।

सराह—इसी शर्तपर मुझे तुमसे मिलनेकी आज्ञा मिली है। उसे आशा थी कि मैं तुम्हें समझा बुझाकर विचलित कर सकूँगी और मेरे लिए, मेरे प्रेमके लिए तुम यह अपमान अपने गलेके नीचे उतार सकोगे। मैं इस अन्तिम भेंटके प्रलोभनको नही रोक सकी। आशा है मेरी इस धृष्टतापर तुम ध्यान नही दोगे।"

एमेट—गिरफ्तारीके बादसे यही एक तृष्णा मुझे व्यथित कर रही थी। अब मैं शान्तिसे मर सकूँगा। लेकिन मैं इतना जानना चाहता हूँ कि अन्तिम समय भी मुझे इस तरह किसने अपमानित करना चाहा है।

इसी समय किसीके आनेकी आहट उन लोगोंको मालूम हुई।

सराह—मैंने तुम्हें अभी बतलाया है। जो मुझे लेकर यहाँ आया है उसी लिवोनार्ड एम' नैलीने।

एमेटको बहुत अधिक विस्मय हुआ। उसने चौंककर पूछा—"एम' नैलीने ?" उसी एम' नैलीने जिसकी ईमानदारी देशभक्ति और सचाईका मुझे इतना ज्यादा गर्व था! यहाँ असम्भव है। तुम्हें धोखा हुआ है। एम' नैली इस तरहका प्रस्ताव कभी भी नहीं कर सकता।

सराह—जो मैं कह रही हूँ वह अक्षर अक्षर सत्य है।

एमेटके कुछ कहनेके पहले ही सेलका ताला खुला और एम'.नैलीने अन्दर प्रवेश किया। उसके चेहरेपर वही विकट मुस्कान थी। उसने सराहकी तरफ देखा। सराहने आँखें फेर लीं। तब उसने पूछा—क्या तुमने उनसे कह दिया?

सराह—मैंने कह दिया।

एम' नैली—जो तुम चाहती हो उसे करनेके लिए वह तैयार हैं?

सराहने करुण भरे स्वरमें कहा,—जो मैं चाहती हूँ उसे वे करेंगे?

एम' नेलीने खुश होकर कहा—"मैं इसे अच्छी तरह समझता था। तुमसे मैंने पहले ही कह दिया था। उसने एमेटकी देशभक्तिकी तुलना अपनी देशभक्तिसे की थी। इसलिए उसे पक्का विश्वास था कि एमेट विचलित हो जायगा। उसने एमेटसे कहा,—मैं तुम दोनोंको हार्दिक बधाई देता हूँ।" इतना कहकर उसने एमेटकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया।

लेकिन एमेटने उससे हाथ नहीं मिलाया। उसकी तरफ घूरकर देखा फिर बोला—क्या यह बात सच है कि यह प्रस्ताव तुमने भेजा था?

इतनेपर भी एम' नेली एमेटको नहीं समझ सका। उसने कहा—एकदम सही है। क्या तुमने समझा था कि मैं तुम्हारे हृदयमें झूठी आशा जाग्रत करूँगा और इस लड़कीको धोखा दूँगा जिसे मैं बेटीकी तरह चाहता हूँ। बिना किसी आडम्बरके मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मेरे ही अथक परिश्रमसे तुम्हारे प्राणोंकी रक्षा सम्भव हो सकी है। मैंने ही पहलेपहल यह प्रस्ताव तुम्हारी तरफसे लार्ड क्लेयरके सम्मुख रखा।

पहले तो वे राजी नहीं होते थे लेकिन मेरे बहुत आग्रह करने पर वे............।

एमेटने कर्कश स्वरमें पूछा—क्या प्रस्ताव ?

एम' नैलीने सराहको झिड़कते हुए कहा—यह लड़की बड़ी भोली-भाली है। तुम्हें देखते ही यह सारी बाते भूल गई। मुख्य बातें इसने तुमसे कह दिया है। उतना ही काफी है।

"तुम्हें डरने या परेशान होनेकी कोई बात नहीं है। तुम्हें सिर्फ अपने खास-खास साथियोंका नाममात्र बता देना होगा जो इस षड्यन्त्रमें तुम्हारे साथ थे। तुम्हारे पास जो कुछ कागजी सबूत हो, उसे दे देना होगा। तुम्हें अदालतमे हाजिर होकर बयान नहीं करना पड़ेगा। तुम्हारी कहीं चर्चा भी नहीं की जायगी। इस तरहके मामलेमें लार्ड क्लेयरने यही व्यवस्था रखी है।"

"तुम्हारे सहयोगियोका तुमपर उसी तरह विश्वास बना रहेगा। तुम खुलेआम छोड़ भी नहीं दिये जाओगे। तुम्हे फ्रांस भाग जानेका अवसर दिया जायगा। तुम्हें पर्याप्त धन दे दिया जायगा। सराह करेन फ्रांसमें तुमसे जा मिलेगी। फ्रांसमें रहकर तुम सरकारकी और भी ज्यादा सेवा कर सकोगे। इसके लिए लार्ड क्लेयर ही नहीं बल्कि स्वयं पिट (ब्रिटेनके तत्कालीन प्रधान मन्त्री) तुम्हारे कृतज्ञ होंगे। तुम्हारे सामने सुन्दर भविष्य है और इसका सारा श्रेय मुझे है।"

उसने अपनी बात पूरी भी नहीं कर पायी थी कि एमेटने झपटकर उसकी गर्दन पकड़ ली। वह उसे इस तरह झकझोरने लगा जैसे कुत्ता बिल्लीको झकझोरता हो। एमेटने इतना कसकर उसका गला दबाया कि उसकी दोनो आँखें बाहर निकल आयी। यदि क्षणभर वह इसी तरह रह गया होता तो

उसके प्राण निकल गये होते। सराहने उसे छटपटाते देखा। दौड़कर उसने एमेटका हाथ पकड़ लिया। बोली—इसकी जान मत लो राबर्ट।

सराहका हाथ एमेटके हाथपर पड़ते ही उसका क्रोध शान्त हो गया। उसने एम' नेलीकी गर्दन छोड़ दी। वह लड़-खड़ाकर दीवारसे सट गया। भय और विस्मयसे वह थर्रा गया। उसे थरथर काँपते देख एमेटने कहा—"मुझे इस बात-की शर्म है कि मैंने तुम्हें अपना दोस्त समझकर तुमसे कभी हाथ मिलाया था। आज तुम्हारी गर्दनपर हाथ लगानेकी भी मुझे शर्म है। तुम्हारे समान नीचको छूना भी पाप है। यदि तुम्हारी आत्मा एकदम मर नहीं गई होती तो तुम्हें शर्मसे मर जाना चाहिये था। जिन्होंने तुम्हारा विश्वास किया उन्हें तुम फाँसीके तख्तोंपर चढ़ाने जा रहे हो, यही कम नीचता नही है। लेकिन इतनेसे भी तुम्हें सन्तोष नहीं हुआ और तुम उन्हें विश्वासघाती बनानेका प्रयत्न करने लगे। तुम अपने ही समान उन्हें भी विश्वासघाती, देश-द्रोही और भेदिया बनाना चाहते हो।"

"मेरे सामनेसे हट जाओ। जाओ इसी तरहकी घृणित जिन्दगी बिताते रहो। किसी दिन तो दुनियाको तुम्हारी नीचताका पता लगेगा। उस दिन लोग तुम्हारे मुँहपर थूकेंगे।"

एम' नैली इसके बाद क्षणभर भी वहाँ ठहर नहीं सका। चुपचाप दरवाजेकी तरफ बढ़ा और सेलसे बाहर हो गया।

४१

एमेटके बलिदानसे लार्ड क्रेयर एक तरहसे निश्चिन्त हो गया था तोभी उसकी परेशानी अभीतक दूर नहीं हुई थी। अपने कमरेके फर्शपर वह इस तरह टहल रहा था और रह-रहकर बाहरकी ओर इस तरह देखता था मानो कोई भारी बोझ उसके सिरपर हो और उसे उतार फेकनेके लिए वह बेचैन हो।

उससे थोड़ी दूर पर कुर्सीकी पीठ पकड़कर मेलची नीलन खड़ा भूखे शेरकी भाँति क्रूर दृष्टिसे उसकी तरफ देख रहा था। उसके चेहरेपर शिकन थी, भौंहोंमें तनाव था।

लार्ड क्रेयर सहसा उसकी तरफ घूम पड़े और बोले—

"लार्डकी उपाधि और ५००० पौण्ड प्रतिवर्षकी वृत्ति" आपकी माँग बहुत ज्यादा है।

मेलचीने रुखाईसे कहा—इससे रत्तीभर भी कम नहीं। जो सेवाएँ मैंने की हैं, उसके लिए यह बहुत अधिक नहीं है। अपने प्राणोंको संकटमें डालकर मैंने सरकारको सर्वनाशसे बचाया है। सयुक्त राष्ट्रको मैंने अग-भंग होनेसे बचाया है। इतनी बड़ी सेवाके लिए कोई भी माँग अधिक नहीं कही जा सकती।

लार्ड क्रेयर— यदि हमलोग स्वीकार न करें तब?

मेलचीके भौंहोंपर बल आ गया। उसने आँखे तरेरकर कहा—मैं जानता हूँ कि अपनी रक्षाके लिए आप इन्कार नहीं करेंगे। यह आप जानते हैं कि मुझे उत्तेजित करनेका क्या परिणाम होगा।

लार्ड क्रेयर चौंक पड़े। उन्होने मुँह बनाकर कहा—आप

धमकीसे काम लेना चाहते हैं। लेकिन यह आगसे खेलना होगा।

मेलची नर्म पड़ गया। लेकिन उसकी वाणीमें वही दृढ़ता थी। उसने कहा—मैं आपको धमकी नही दे रहा हूँ। मैं तो सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि यदि कृतज्ञतासे नही तो दूर-दर्शितासे आप मेरी सहायता करें। मुझे अपनी सेवाओंका उचित पुरस्कार मिल जाय।

लार्ड क्रेयरने अपने क्रोधको भीतर-ही-भीतर दबा लिया। बनावटी मुस्कुराहटसे बोले—आपने ईमानदारीसे जो कमाया है उसकी प्राप्तिमें मै आपकी मदद करूँ?

मेलची—जी हाँ, यही मेरे शब्द हैं। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं चाहता। इससे कमभी मुझे स्वीकार नही होगा।"

लार्ड क्रेयर—और यह आपको प्राप्त होकर ही रहेगा यदि मैं पूरा पुरस्कार दिलानेमें आपकी सहायता कर सका। मैं किसीका कृतज्ञ बना नहीं रहना चाहता। मैं इतना कह देना चाहता हूँ कि आपने मुझे इसके लिये बाध्य किया है। इसके बाद जो कुछ होगा, उसके लिए आप स्वयं जिम्मेदार होंगे, मैं नही।

लार्ड क्रेयरको इस तरह अचानक झुकते देखकर मेलचीको विस्मय हुआ। पूछा—मुझे निश्चित उत्तर कबतक मिलेगा?

लार्ड क्रेयरने अधीर होकर कहा—आज ही! यदि मेरी आशा सचमुच फलवती हुई तो आपको अपनी करनीका इतना बड़ा इनाम मिल जायगा जितनेकी आपने आशा भी नही की होगी। शिकायतकी कोई गुंजायश नहीं रह जायगी।

मेलची इससे बहुत ज्यादा सन्तुष्ट हुआ। वह बाकायदा लार्ड क्रेयरसे हाथ मिलाकर विदा होना चाहता था, लेकिन

लाड क्लेयरने सहसा उसकी तरफ पीठ फ़ेर दी। मेलचीको इससे विस्मय नहीं हुआ, उसने समझा कि उसकी धमकी काम कर गयी और लार्ड क्लेयर झुक गये। अपनी सफलतापर मन-ही-मन प्रसन्न होता हुआ और अनेक तरहकी उमंगें बाँधता वह कमरेसे बाहर निकला और सीढ़ियोंसे नीचे उतरा।

फाटकपर उसे एक युवती मिली जो भीतर जा रही थी। उसका पहनावा फ्रान्सीसी था। उसने पहरेदारसे पूछा—क्या लार्ड क्लेयर घरपर मौजूद है ?

चपरासीने उत्तर दियाः—जी हाँ। वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मेलची उसकी बगलमें खड़ा था। उसने आँख उठाकर उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह नौकरके साथ भीतर चली गयी। लार्ड क्लेयरको देखते ही उसने अधीर होकर कहा—मेरे पति......।

लार्ड क्लेयरने अँगुलीके इशारेसे उसे रोकते हुए कहा—आपको चिन्ता करनेकी कोई जरूरत नही है। आपके पति छोड़ दिये गये। उनकी वीरताकी मैं प्रशंसा करता हूँ। उनकी निदापिताको मैं स्वीकार करता हूँ। लेकिन वे इसी शर्तपर छोड़ गये हैं कि वे आयलैंण्ड छोड़कर सीधे फ्रान्स चले जायँ। उनका रास्ता खुला है। इतना ही नही स्वयं सरकारकी ओरसे उनकी यात्राका प्रबन्ध कर दिया गया है। सारी बातें आपको इस पत्रसे मालूम हो जायँगी।

इतना कहकर उन्होंने उस रमणीके हाथपर एक कागज रख दिया। फिर बोले—एक बात और। मैंने इसी समय तुम्हारे पतिको अपने यहाँ बुलवाया है। यदि यहाँ आनेके पहले

आपसे भेंट हो जाय तो आप उनसे कह देंगे कि अब यहाँ आनेकी जरूरत नहीं है।

वे बात करते जाते थे और उत्सुकताके साथ बाहर पार्ककी तरफ देखते जाते थे। इसके बाद वे दरवाजा खोलनेके लिए आगे बढ़े। उनके चेहरेसे साफ झलक रहा था कि वे अपने मुलाकातीसे पिण्ड छुड़ानेके लिये आतुर हैं।

इतनी आतुरता उसने पुरुषमें कभी नहीं देखी थी। उसे सन्देह होने लगा। उसने पूछा—मेरे पति सकुशल हैं न ?

उसकी वाणीमे कठोरता और दृढता थी क्योंकि आवश्यकता पड़नेपर जीनेटी आवश्यक वीरता दिखलानेके लिए तैयार थी।

लार्ड क्रेयरका रुख और खूँखार चेहरा मुलायम हो गया। उन्होंने कहा—सो तो वे ही जानें। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि जहाँतक मेरा संबन्ध है वे स्वतन्त्र हैं और कोई रुकावट उनपर नही है।

जीनेटी—इससे ज्यादा मैं कुछ जानना नही चाहती।

इतना कहकर वह बाहर हो गयी। उस समय भी लार्ड क्रेयर उत्सुकताके साथ पार्क की तरफ देखते रहे।

४२

मेलवी नीलन अपनी सफलतापर फूला नहीं अघाता था। वह अपने भाग्यकी चरम सीमापर पहुँचा हुआ समझता था। यही सोचता-विचारता वह पार्कके हरी हरी दूबोंको रौंदता, पेड़ोंकी झुरमुटसे होकर अपने डेरेकी तरफ चला जा रहा था।

सचमुच उसने आगसे खेला था और अपनेको विजयी समझता था। वह बाजी जीत चुका था। अपनी करनीके लिए न तो उसे पछतावा था और न शर्म। दयाका तो उसमें लवलेश भी नहीं था। मैत्री, स्नेह, विश्वाससे वह कोसो दूर था। एमेट उसके लिए खतरा' था। उस खतरेको उसने आसानीसे हटाया। एमेटके लिए उसके हृदयमें कोई स्थान नहीं था। अपने लाभके लिए उसका विश्वासपात्र वह बना था और उस विश्वासका उपयोगकर उसने अपना काम बनाया। अपने स्वार्थ-साधनका उसने एमेटको हथकण्डा बनाया था और उसी तरह उसने उसका प्रयोग भी किया। उसके लिए उसे लेशमात्र भी क्षोभ या परिताप नहीं था।

लेकिन टेरेंस ओ' गार्मेनके साथ बात एकदम भिन्न थी। नीलन उससे डरता था इसलिए घृणा करता था। उसे इस बातकी खुशी थी कि उसका यह दुश्मन जेलके सीखचोंके अन्दर बन्द है और बाहर सूली उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

इस वक्त उसका सारा ध्यान उस पारितोषिक पर था जिसे प्राप्त करनेके लिए उसने इतना बड़ा जोखिम उठाया था। इतने बड़े पुरस्कारके लिए वह लार्ड क्लेयरको राजी कर सका, यह उसकी दूसरी विजय थी। क्लेयरके समान धूर्तको भी उसने अन्तमें परास्त कर दिया।

अब तो केवल घंटोंकी बात थी। वह लार्ड हो जायगा और ५००० पौंड सालाना घर बैठे मिला करेगा। इसके सहारे वह न जाने कितने ऊपर पहुँच जायगा। तृष्णाका कहीं अन्त नहीं। उसकी उड़ान बड़ी ऊँची होती है। एक बार ऊपर उठनेपर फिर चोटीपर पहुँचे बिना उसे चैन नही था। इस परिस्थितिमें आयलैंण्ड उसके अनुकूल नहीं होगा। इसलिए उसने

इङ्गलैण्डमें जाकर बसनेका निश्चय किया। वह कल्पनाकी उड़ानमें बहुत दूर चला गया।

वह अपने ध्यानमें इतना ज्यादा डूबा हुआ था कि उसे अपने इर्द-गिर्दका कोई ज्ञान नहीं था। जिधर वह जा रहा था उधरसे ही एक युवक लार्ड क्रेयरके महलकी तरफ कदम बढ़ाता चला आ रहा था। लेकिन उसका उसे कोई ज्ञान नहीं था। युवक उसके एकदम निकट आ पड़ा। उसे देखकर बोला—अरे ! यह तो वही है !

उसकी आवाज कानमें पड़ते ही मेलची चौंक उठा। आँख उठाकर देखा तो सामने टेरेंस ओ' गार्मन खड़ा मुस्कुरा रहा था। उसका दाहना हाथ तलवारकी मूठपर था।

दोनों क्षणभर चुपचाप एक दूसरेको देखते रहे। अन्तमें टेरीने मौनको भङ्ग किया। मेलची डरसे काँप रहा था। उसके मुँहसे कोई शब्द नहीं निकले।

टेरी—खूब मिले यार ! पिछली मुलाकात तो तुम्हें भूली नहीं होगी ?

मेलची—तुम तो जेलमें थे। इधर कैसे आ पड़े ?

टेरेंसकी आँखें क्रोध और घृणासे जल रही थीं। उसने कहा—तुम्हारी कृपासे मुझे जेलके दर्शन हो गये। तुमने तो यही समझा था कि एमेटकी तरह मुझे भी फाँसीपर लट-कवा दोगे।

मेलची—तुम झूठे हो। मेरा रास्ता छोड़ दो। मैं तुम्हारे सरीखे लोगोंसे बात नहीं करना चाहता।

इतना कहकर वह आगे बढ़ना चाहता था। लेकिन टेरीने तलवार म्यानसे बाहर खींच ली और उसका रास्ता रोककर कहा—तुम बड़े उद्दण्ड हो। लेकिन कोई हर्ज नहीं। थोड़ी ही

देरमें तुम सबका उत्तर दे दोगे। लेकिन मैं तुम्हारी उत्सुकता पहले मिटा देना चाहता हूँ। तुम्हारी यह उत्सुकता स्वाभाविक है कि जब तुमने मुझे जेलमे बन्द करवा दिया तब मैं यहाँ कैसे आ गया। लार्ड क्रु यरने मुझे मुक्त कर दिया है इसलिए मैं यहाँ हूँ। उन्हींसे मुझे यह भी मालूम हुआ है कि मेरी जेल-यात्रा और एमेटकी मृत्युके कारण तुम्हीं हो। मै इस समय भी उन्हींसे मिलने जा रहा था। लेकिन तुम्हारे समान पुराने मित्रकी मै कैसे अवज्ञा करता।

मेलची भयसे कातर हो उठा। उसके ललाटपर पसीनेकी बूँदें छा गयी। उसने देखा कि वह भीषण फन्देमें फँस गया है। लार्ड क्रु यरने उसे इस तरह फँसाकर मृत्युके मुँहमें झोक दिया।

मेलचीका चेहरा स्याह पड़ गया। टेरीका रहा सहा सन्देह भी जाता रहा। वह क्रोधसे पागल हो उठा। अपनी तलवारसे मेलचीके गालको खोदते हुए उसने कहा—तुम नाहक देर कर रहे हो। तलवार निकालो।

लेकिन मेलची उसी तरह खड़ा रहा। उसके हाथ हिलेतक नहीं। उसकी हालत उस जानवरकी-सी हो रही थी जो शिकारीको कही छिपा हुआ मिला हो।

वे दोनों झाड़ियोंके बीच मैदानमे खड़े थे। आने-जानेवालो की निगाह सहसा उनपर नही पड़ सकती थी। सूर्यकी तेज किरणें पेड़ोकी पत्तियोसे छनकर उनपर पड़ती थी। लार्ड क्रु यरके महलकी खिड़कीका शीशा सूर्यकी रोशनीमें चमक उठा। मेलचीकी कातर आँखोंने यह सब देखा। वह भाग जानेका मार्ग ढूँढ़ रहा था लेकिन उसके लिये कोई रास्ता नहीं था। टेरी मुस्तैदीसे उसपर पहरा दे रहा था। उसकी दयनीय दशाका वह आनन्द ले रहा था। बोला—तुम नाहक ढिलाई

कर रहे हो। तलवारबाजोंके लिए इससे अच्छा मौसिम दूसरा नहीं हो सकता।

मेलची—मैं तुमसे नही लड़ना चाहता।

इतना कहकर वह दस कदम पीछे हट गया। वह इतना डर गया था कि यदि क्षणभरका भी उसे अवसर मिलता तो वह भागकर निकल जाता। लेकिन टेरी कूदकर उसके पास जा पहुँचा। उसे पकड़ लिया और कसकर झकझोरते हुए बोला—क्या कहा? नही लड़ना चाहते! नारकीय कुत्ता! जिसने तुझे टुकड़े दिये उसको तूने काट खाया, जिसने तेरा विश्वास किया उसे तूने फाँसीपर लटकवाया! तेरे लिए दूसरा चारा नही है। तुझे लड़ना ही होगा, नहीं तो मरना होगा। जिस दोस्तने उस बार तेरी जान बचायी, वह तेरे विश्वासघातसे आज कब्रमें सोया है और तू जिन्दा रहना चाहता है। तू......

क्रोध और आवेशसे टेरीका गला रुँध गया। अपनी घृणाको प्रकट करनेके लिए उसे उपयुक्त शब्द नही मिले। बोला—उसके उपकारका बदला तूने उसे मौतके मुँहमें डालकर चुकाया है। नीच और कायर कही का। उसके बदले तुझे भी नरककी भट्टीमे जलना होगा। तू समझता है कि मैं तुझे जिन्दा छोड़ दूँगा। तलवार खींच नहीं तो तेरी अँतड़ी मैं अपनी तलवारसे बाहर खीच लूँगा।

मेलचीने कुछ सोचकर कहा—तुम्हें जो इच्छा हो करो। मैं तलवार नही उठाऊँगा। इस हत्याको मै युद्धका नाम नही देना चाहता। मैं जानता हूँ कि तलवार चलानेमें तुम कितने निपुण हो। क्षणभरमें ही तुम्हारी तलवार मेरा काम तमाम कर देगी। तुम मुझे योंही मार डालो।

टेरीने अपनी तलवार जमीनपर पटक दी और क्रोधसे

अपना होंठ चबाने लगा। वह निश्चय नहीं कर सका कि वह क्या करे। मेलची अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए आशान्वित हो उठा। बोला—मैं लड़नेसे नहीं भागता। मैं लड़ूँगा और अवश्य लड़ूँगा। तुमने मेरा अपमान किया है और बिना कारण मुझे मारा है। कल मेरा साथी तुमसे मिलेगा।

टेरी—तुम्हारा साथी! कौन? मेजर सर और उसके सिपाही। मैं तुम्हें खूब पहचानता हूँ। यदि तू लड़नेसे नहीं भागता तो बहानेबाजी क्यों करता है। यहीं और इसी वक्त निपट ले।

मेलची—मैं बिना साक्षीके नहीं लड़ना चाहता। हथियार पसन्द करना मेरे जिम्मे है। मैं उसका प्रयोगकर कह देना चाहता हूँ कि मैं पिस्तौलसे लड़ूँगा, तलवारसे नहीं।

मेलचीने समझा था कि इससे उसके प्राण बच जायँगे। लेकिन उसे भारी धोखा हुआ। इसका जो परिणाम हुआ यदि उसे वह जानता तो वह अपनी जीभ काट डालता।

उसकी बात सुनकर टेरी खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने अपनी भीतरी जेबसे दो पिस्तौल निकालकर बाहर किया और मेलचीकी तरफ फेंक दिया। बोला—तुम्हारी ही बात सही। दोनों भरी है जो चाहो ले लो।

लेकिन मेलचीने उन हथियारोंको इस तरह छोड़ा मानो आगके जलते अंगारे हों। वह चौंककर दो कदम पीछे हट गया। बोला—मैं बिना साक्षीके नहीं लड़ना चाहता क्योंकि इसके बिना जो विजयी होगा वह फाँसी पर लटका दिया जायगा।

टेरीका धैर्य छूट रहा था। उसने कहा—मैं इस खतरेके लिए तैयार हूँ। तुम्हें भी तैयार होना होगा। और यदि मेरा विश्वास मुझे धोखा नहीं दे रहा है तो तुम्हें इस बातकी

चिन्ता भी नहीं होनी चाहिये। लेकिन यदि तुम बातें बनाकर भाग जाना चाहते हो तो मैं ईश्वरको साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं बिना हिचकके गोली मार दूँगा। तुम्हें जो पिस्तौल पसन्द हो उठा लो। एक दूसरेको देखते हुए हमलोग दोनों ६-६ कदम पीछे हटेंगें। मैं सूचना दूँगा। एक, दो, तीन! 'दो' पर पिस्तौल तान लेंगे और 'तीन' पर दाग देंगें। मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करता। मैं तुम्हें पुनः सचेत कर देता हूँ कि यदि बीचमें तुम कोई चालबाजी करोगे तो मै गोली मार दूँगा।

मेलचीने लाचार होकर पिस्तौल उठा ली। एक दूसरेको देखते हुए दोनों ६-६ कदम पीछे हट गये। बारह कदमकी दूरी पर दोनों आमने-सामने खड़े हो गये।

मेलचीने कड़ाईसे पिस्तौल थाम रखा था। निराशाने उसमें साहस भर दिया था। वह अपनेको अधमरा समझ रहा था। तोभी वह अपनी रक्षाके लिए कोई बात उठा नहीं रखना चाहता था।

टेरेंसके मुँहसे "एक" का शब्द निकला ही था कि एक महिला झपटकर दोनोके बीचमें खड़ी हो गयी। उसने टेरीकी कलाई पकड़ ली। बोली—यह क्या हो रहा है?

मेलचीने समझा कि उसके प्राण बच गये। वह वहाँसे सरकनेका उपक्रम करने लगा। लेकिन टेरीने चिल्लाकर कहा—यदि एक कदम भी हटे तो मैं गोली मार दूँगा।

वह महिला दोनोंके बीच उसी तरह खड़ी थी। लेकिन टेरी उसे बचाकर मेलचीपर अपना निशाना ठीक रखा था। उसने उस महिलासे कहा—जिनेटी! यह स्थान तुम्हारे लिये नहीं हैं। तुम उस जातिकी महिला हो जिसे जीवनसे प्रतिष्ठा ज्यादा प्यारी है। तुम अपने पतिका अपमान नहीं

होने दोगी। तुम्हें मालूम नहीं कि इसी शैतानकी बदौलत मैं जेल में सड़ता रहा पर वह कुछ नहीं है। इसके विश्वासघातके फलस्वरूप मेरा सबसे प्यारा दोस्त एमेट जिसे तुम भली भाँति जानती हो—कुटिल मृत्युको प्राप्त हुआ। उसने सगे भाईकी तरह इसका विश्वास किया और इसने उसकी जान मरवा डाली। यह विश्वासघाती राजीसे मेरा मुकाबला नहीं कर रहा है। अपनी इच्छासे यह कभी भी मेरा मुकाबला नहीं करेगा। यही अवसर है। मैं इससे बदला लेना चाहता हूँ। मेरे मृत दोस्तके लिए तुम बाधा नहीं दोगी। ईश्वर सच्चेकी रक्षा करेगा।

इतना सुनते ही जिनेटीने टेरीकी कलाई छोड़ दी और अलग हट गयी। मेलचीकी सारी आशा धूलमें मिल गयी।

टेरीने पूछा—तुम तैयार हो। एक कदम और नजदीक आ जाओ। 'एक' लेकिन मेलची चुपचाप वहीं खड़ा रहा।

टेरी—मैं ईश्वरको साक्षी देकर कहता हूँ कि 'तीन' के उच्चारणके साथ ही मैं गोली चला दूँगा।

मेलची—मैं विना साक्षीके नहीं लड़ूँगा।

जिनेटी—इस तरहकी बहानेबाजीसे काम नहीं चलेगा। मैं अपने पतिकी प्रतिष्ठापर धब्बा नहीं लगने दूँगी। मैं तुम्हारे लिए साक्षीका काम करूँगी।

जिनेटीका चेहरा पीला पड़ गया था। उसके होंठ काँप रहे थे। लेकिन उसने दृढ़तासे ये शब्द कहे। उसकी आँखें चमक रही थीं।

टेरीने प्रसन्न होकर कहा—शाबाश जिनेटी! तुम्हारी जातिके अनुकूल ही तुहारा आचरण हुआ है। तुम वीर-पुत्री

और वीर-पत्नी हो। अब तुम्हें जो करना है सो मैं बतला देता हूँ।

टेरी बातें तो जिनेटीसे कर रहा था लेकिन उसकी आँखें नीलनकी तरफ थीं।

"तुम ऐसी जगह खड़ी हो जाओ जहाँसे हम दोनों तुम्हें देख सकें। अपने हाथमें रूमाल ले लो। एक, दो, तीनका उच्चा-रण करो और तीन कहते ही रूमाल जमीनपर गिरा दो।"

इसके बाद उसने मेलचीसे कहा—याद रखो, उसके तीन कहनेपर हमलोग पिस्तौल तान लेंगे और उसके रूमाल गिराते ही दाग देंगे।

मेलचीने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। निराशाने उसमें हिम्मत डाल दी थी। अब वह काँपता नहीं था। उसकी आँखें अपने प्रतिद्वन्द्वी पर लगी थीं। उसने कसकर पिस्तौल पकड़ रखा था।

जिनेटी बीचोबीच खड़ी हो गई और संकेत देनेलगी। उसके मुहसे "तीन" निकला भी नहीं था कि मेलची घुटनेके बल बैठ गया और पिस्तौल दाग दी। उसकी गोली टेरीके कानको छूती निकल गयी। इसी वक्त टेरीकी पिस्तौल छूटी। उसकी गोली मेलचीके कलेजेको छेदती निकल गयी। मेलची धड़ामसे जमीनपर गिर गया।

मेलचीकी लाशको वहीं छोड़कर दोनोंने अपना रास्ता लिया। मेलचीका निर्जीव शीरर न-जाने कब तक वहीं पड़ा रहा। उसकी शून्य आँखें आकाशकी तरफ लगी थी। नीला आकाश उसकी इस अधगोति पर विकट हँसी हँस रहा था।